तीन साल

एन्तोन चेखव

राजकमल प्रकाशन

नयी दिल्ली • पटना

मूल्य रु० ७ ००

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली

तृतीय आवृत्ति १९७७

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
८, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली ११०००२

मुद्रक राज कम्पोज कलाकेन्द्र द्वारा
नवप्रभात प्रिंटिंग प्रेस, शाहदरा, दिल्ली ११००३२

भारत सरकार द्वारा अपेक्षाकृत सस्ते मूल्य पर
उपलब्ध कराये गये कागज पर मुद्रित।

—

तीन साल

सुनसान अँधेरा था, सिर्फ कहीं-कहीं खिड़कियों से रो[illegible]
और पीला चाँद सड़क के दूसरे छोर के बैरकों के पीछे से [illegible]।
लेपतेव अपने घर के सामने एक बेंच पर बैठा पीतर और पाल के चर्च की
सायंकालीन प्रार्थना के खत्म होने का इन्तज़ार कर रहा [illegible]।
थी कि यूलिया सरजीविना चर्च से घर जाते हुए [illegible],
वह उससे कुछ जरूर कहेगा और सम्भव है, वह [illegible]
उसके साथ बिता सके।

उसे इन्तज़ार करते हुए एक घण्टे से ज्यादा [illegible]।
उसका ध्यान अपने मास्को के फ्लैट की [illegible]
रहे थे उसके मास्को के दोस्त, उसका नाम [illegible]
पर बैठकर वह काम किया करता था। [illegible]
सामने थे चुपचाप खड़े वृक्ष, और [illegible]
अजीब है कि सोकोलिन्दी में एक [illegible]
वह इस प्रान्तीय कस्बे में आ [illegible]
के बजते ही जानवर दौड़-दौड़ [illegible]

फिर उसका खयाल [illegible]
चला गया, जो वह मास्को [illegible]
और बहसें भी क्या—[illegible]
एक मानसिक बीमारी है। [illegible]

है और शारीरिक आकर्षण ही मुख्य है, आदि। लेकिन अगर आज उससे कोई प्यार के बारे मे पूछे—वह गहरी उदासी के साथ सोचने लगा, तो उसके लिए यह समझ पाना मुश्किल है कि वह क्या कहेगा।

इसी बीच प्रार्थना समाप्त हो गयी और चर्च से भीड उमड पडी। लेपतव उस अँधेरे म सडक पर चलनेवाली स्याह आकृतियो को गहरी नजर से देखने लगा। बिशप अपनी गाडी मे पहले ही जा चुका था और उसकी घण्टियो की आवाज डूब चुकी थी। चर्च के त्योहार के कारण घण्टियोवाली मीनार पर जलनेवाली हरी और लाल बत्तियाँ भी एक एक करके बुझ गयी थी, लेकिन सडकें अब भी आदमियो स भरी हुई थी, जिनमे स कुछ मकानो की खिडकियो के नीचे रुककर बातें कर रहे थे या धीरे धीरे चले जा रहे थे। आखिर लेपतेव ने एक परिचित आवाज सुनी और उसका दिल तेजी स धडकने लगा। लेकिन यूलिया सरजीविना अकेली नही थी, उसके साथ दो अन्य महिलाए भी थी।

वह बड़ी ही नाउम्मीदी के स्वर मे फुसफुसाया, 'उफ, यह तो यह तो बहुत बुरी बात है!'

सडक के किनारे जाकर अपनी सहेलियो से विदा लेने के लिए वह रुकी ही थी कि आँखें उठाते ही लेपतेव पर उसकी नजर पडी।

'मैं अभी आपके पिताजी से मिलने जा रहा था,' उसने कहा, "वह घर पर मिलेंगे क्या?"

'मैं उम्मीद तो करती हूँ" उसने उत्तर दिया, "अभी क्लब के समय मे काफी देर है।"

सडको के दोनो ओर बाग लगे थे। चाँदनी मे किनारे की झाडियाँ और दरवाजे दूसरे किनारे के ऊँचे-ऊँचे नीबू के पेडों की परछाइयो मे गहरे दूर तक धँस हुए से लगते थे। अँधेरे म औरतो की धीमी बातचीत, हँसी और हल्लाहट का आभास हो रहा था। इन आवाजो के साथ ही नीबू के फूलो और घास की गन्ध न उसके मन मे एक जोश सा भर दिया था। वह यूलिया की कमर मे हाथ डालकर, उसके चेहरे कधे और हाथो को चुम्बनो से भर देना चाहता था। उसके पैरो पर गिरकर रोते हुए कहना चाहता था कि कितने दिनो से वह उसका इन्तजार करता

रहा है लेकिन यूलिया से उसे एक भ्रामक क्रोध की महक मिली। उसे याद हो आया कि वह भी एक समय था, जब वह ईश्वर मे विश्वास करता था, प्राथनाओ मे जाया करता था और कितनी कामना थी उसके मन में पवित्र और कवित्वपूण प्यार के लिए ! और चूंकि वह इस बात को जानता था कि यूलिया उसे प्यार नही करती, इसलिए वह आनन्द, जिसका सपना उसने कभी देखा था, उसे कभी भी प्राप्त नहीं हो सकता था।

यूलिया उसकी बहन नीना फ्योदोरोव्ना की बीमारी को लेकर बहुत सहानुभूति से बात करती थी। दो महीने पहले नीना का कैंसर का आपरेशन हुआ था और अब सभी को बीमारी के फिर से लौट आने की आशंका थी।

"आज सुबह ही मैं उन्हे देखने गयी थी," यूलिया ने कहा, "मैं सोचती हूँ कि कुछ तबदीली जरूर आ रही है वह पहले मन्नाह की तरह दुबली नही हैं, सिर्फ कुछ मुरझाई हुई-सी जरूर लग रही थी।"

"हा," लेपतेव ने कहा, "सही माने मे बीमारी की वापसी नही है लेकिन मुझे यह लगता है कि वह रोज दुबली होती जा रही है। मैं तो समझ ही नही पाता कि उसके साथ क्या गडबडी है।"

"वह कितनी मोटी, स्वस्थ और गुलाबी गालोवाली थी !" यूलिया कहते कहते पल-भर को रुकी, 'यहा सब लोग उन्हे मास्को की लडकी कहा करते थे वह कैसी हँसती थी ! हर छुट्टी के दिन किसान लडकी की तरह कपडे पहनती थी और वे उन पर बहुत फबते थे।"

यूलिया का पिता डाक्टर सरजी बोरिसिच घर ही पर था। उसका बदन मजबूत और चेहरा लाल था। उसने एक लम्बा कोट पहन रखा था, जो उसके घुटने के नीचे तक पहुचकर उसके कद के छोटा होने का आभास कराता था। इस समय वह अपनी आदत के अनुसार ह ह ह की ध्वनि मे गुनगुनाते हुए, जेबो मे हाथ डाले अपने पढने के कमरे मे इधर से उधर टहल रहा था। उसकी दाढी के भूरे बालो मे कघी नही की गयी थी और बाल भी गन्दे थे। ऐसा लगता था, जैसे अभी सोकर उठा हो। उसका पढने का कमरा भी ऐसा ही था। सोफे पर गद्दियाँ

पडी थीं। अखबार कोने में फेंके हुए थे। यह सब ठीक वैसा ही अव्यवस्थित लग रहा था, जैसे डॉक्टर स्वयं था।

"लेपतेव महोदय आपसे मिलना चाहते हैं," उसकी बेटी ने अध्ययन-कक्ष में घुसते ही कहा।

रु रु र का स्वर निकालते हुए डॉक्टर अपनी बैठक में आ गया। "कहिए, क्या समाचार हैं?" उसने लेपतेव से हाथ मिलाते हुए कहा।

बैठक में अँधेरा था। लेपतेव अपना हैट हाथ में लिये खड़ा था। इस तरह असमय आ जाने के लिए क्षमा माँगते हुए पूछने लगा कि उसकी बहन को रात में पूरी नींद आये, इसके लिए क्या किया जा सकता है और क्या कारण है कि वह इतनी कमजोर होती जा रही है। लेकिन यह सब कहते हुए उसे बेचैनी सी महसूस हो रही थी कि वह इस समय भी वही सवाल डॉक्टर से क्यों पूछ रहा है, जो उसने डाक्टर के सुबह अपने घर आने पर पूछे थे।

"शायद हमें मास्को से कोई विशेषज्ञ बुलाना ही पड़े," उसने कहा, 'आप क्या सोचते हैं?"

डॉक्टर ने हलकी-सी आह भरी, अपने कन्धों को हिलाया और दोनों हाथों को फैला दिया।

यह साफ था कि वह चिढ़ गया था। कुल मिलाकर वह एक भावुक आदमी था, उसे हमेशा यह खयाल बना रहता था कि उस पर विश्वास नहीं किया जा रहा है, उसे उचित आदर सम्मान नहीं मिल रहा है। उसका खयाल था कि उसके रोगी उसका शोषण करते हैं और सहयोगी उसके बारे में पीठ पीछे बुरी बातें करते हैं। वह अपने ही ऊपर हँसकर कहा करता था कि उसके-जैसे लोग बेवकूफ बनाये ही जाते हैं।

यूलिया ने लैम्प जला दिया था। लेपतेव ने रोशनी में उसके पीले चेहरे और शिथिल अंगों से यह जान लिया कि वह चर्च की प्रार्थना में जाने के कारण थक गयी है और इस समय अकेली रहना चाहती है। वह

अपने हाथों को अपनी गोद में रखकर सोफे पर बैठ गयी थी। लेपतेव अपने बारे में जानता था कि वह सुन्दर नहीं है और इस समय शारीरिक रूप से वह इस सत्य के प्रति जागरूक हो उठा था। वह छोटे कद का साधारण बदनवाला आदमी था और उसकी खोपड़ी के बाल भी इतने कम हो गये थे कि कभी कभी उसे ठण्ड लग जाया करती थी। उसके चेहरे में कोई भी ऐसा आकर्षण नहीं था, जो कभी-कभी सादे से-सादे चेहरों को भी सुन्दर बना देता है। औरतों के सामने उसकी स्थिति अजीब सी हो जाती थी। वह बहुत बातें करने लगता था और बेहूदा व्यवहार कर बैठता था। इस सब के लिए वह अब अपने ही को घृणा करने लगा था। उसे मालूम था कि यूलिया सरजीविना उसकी उपस्थिति के कारण ऊब रही है, इसलिए इस समय बात करना जरूरी है, लेकिन वह बात क्या हो? फिर वही बहन की बीमारी!

वह दवाओं के बारे में बातें करने लगा। सारी सामान्य जानकारी व्यक्त कर लेने के बाद, उसने स्वास्थ्य की आवश्यकता पर जोर दिया और बताया कि वहुत दिनों से मास्को में एक आवास-गृह बनाने की बात सोच रहा है और उसके लिए खर्च आदि का तखमीना भी तैयार हो गया है और वह उसके बारे में विस्तार से बताने लगा।

यूलिया सरजीविना हमेशा की तरह उसकी मौजूदगी में खामोश बैठी थी। लेकिन कुछ अजीब तरह से, या यों कहें कि प्रेमी की स्वाभाविक वृत्तियों से ही शायद लेपतेव ने यूलिया के विचारों और इरादों का अन्दाज लगा लिया था कि अगर प्रार्थना के बाद भी वह अपने कमरे में कपड़े बदलने के लिए नहीं जा रही है, तो इसका मतलब यही है कि वह फिर बाहर जरूर जायगी।

'मुझे इस योजना के बारे में कोई बहुत जल्दी नहीं है' वह आवेश के साथ डाक्टर से कहता रहा, जो खाली-खाली आंखों से उसे देख रहा था और स्पष्टतः हैरान था कि इस समय दवा और स्वास्थ्य की बात क्यों चलायी गयी है। " सम्भव है कि मुझे अभी खर्च के तखमीने की जरूरत भी न पड़े। मुझे तो यही डर है कि कहीं मेरा आवास गृह बहुत ज्यादा धर्मात्मा लोगों अथवा कल्याणमना महिलाओं के हाथ में न पड़

जाये, जो हर अच्छे काम को नष्ट कर देती हैं !"

यूलिया सरजीविना उठी और हाथ बढाते हुए कहने लगी, "मुझे क्षमा करें, मैं जा रही हूँ । कृपया अपनी बहन से मेरा अभिवादन कह ।"

डाक्टर रु रु रु के स्वर मे गुनगुनाया, "रु रु रु "

यूलिया सरजीविना बाहर चली गयी । उसके जाते ही लेपतेव न भी डॉक्टर से छुट्टी ली और घर चला गया । वे सारे नीबू के पेड, परछाइयाँ और बादल आदि प्रकृति की सारी सु दरता और आकर्षण उसे उस समय असार लगे, जैसे कि हर असन्तुष्ट और दुखी आदमी को लगते हैं । चाद आकाश मे ऊपर चढ गया था और बादल तेज़ी से उसके नीचे आत जा रहे थे । 'इस इलाक़े का चाँद कितना भद्दा है और य बादल के टुकडे कितने दयनीय !' वह सोचने लगा । उसे दवा और आवास गहवाली बात के लिए लज्जा का अनुभव हुआ । फिर यह सोचकर वह डर गया कि कल फिर यूलिया से मिलने और बात करने की कामना दबा नही सकेगा और कल फिर उसे निश्चय हो जायेगा कि यूलिया उसकी बिलकुल परवाह नही करती । कल के बाद परसो भी यही होगा । फिर इसका कब और कसे अन्त होगा उसे नही मालूम ।

घर आते ही वह अपनी बहन के कमरे मे गया ।

दखने म नीना पयोदोरोव्ना अब भी काफी स्वस्थ थी । आँखें बन्द किये बिस्तर पर पीठ के बल लेटे रहने पर उसके चेहरे पर जो मत्यु की-सी विवणता छायी रहती थी, उसे देखे बिना कोई उसे रोगी भी नहीं कह सकता था ।

उसकी सबस बडी दस-वर्षीय लडकी साशा उसके बिस्तर की बगल मे बठी स्कूल की किताब से कुछ जोर जोर स पढ रही थी ।

"अलेक्सी आ गया है," बीमार औरत ने फुसफुसाकर कहा ।

पुराने मौन समझौते के अनुसार साशा और उसका मामा दोना मरीजों के बिस्तर की ओर मुड गये । साशा न अपनी पुस्तक बन्द की और बिना बोले चुपके से बाहर निकल गयी । लेपतव ने शृंगार मेज से एक ऐतिहासिक उपन्यास उठाया, बीच का पष्ठ खोला और ज़ोर स पढ़-कर सुनाने लगा ।

नीना मास्को की रहनेवाली थी। वह और उसके दो भाई पातीत्स्काया स्ट्रीट पर अपने व्यापारी पिता के साथ बचपन बिता चुके थे। वह बहुत दिनो का और सरक्षण में बिताया हुआ बचपन था। पिता उनके साथ बहुत ही सरत व्यवहार करता था और कई बार उन्हे कोडे भी खाने पडे थ। उनकी मा एक लम्बी बीमारी से मर चुकी थी। घर मे रूखे और धूत किस्म के नौकर काम करते थे और वहाँ आनेवाले पादरी और साधु भी इसी स्वभाव के होते थे। य सब घर मे खाने-पीने के लिए आते और उनके पिता की चापलूसी किया करते थे, लेकिन सब-के सब उनके पिता से भीतर-ही भीतर घृणा करते थे। बच्चे इतने भाग्यशाली थे कि उन्हे स्कूल जाने का मौका मिला लेकिन नीना अशिक्षित ही रह गयी। वह बस किसी तरह लिखना पढना सीख सकी थी और ऐतिहासिक उपन्यास पढा करती थी। सत्रह वष पहले जब वह बाईस वष की रही होगी, खिमकी मे वह अपने मौजूदा पति से पहली बार मिली थी और वही दानो का प्यार हो गया। अन्तत नीना न अपने पिता की इच्छाओ के विरुद्ध छिपे तौर से उससे शादी कर ली। वह बूढा इस भूस्वामी को सडक पर सीटियां बजाते अथवा लम्प पोस्ट के पास सिगरेट जलाते देखकर उस लगभग अस्तित्वहीन ही समझता था। बाद को उसके दामाद ने दहेज़ मांगते हुए उसे कई पत्र लिखे। उसने अपनी बेटी को लिखा कि वह रोएँदार कोट चादी के बरतन और व दूसरे सामान, जो उसकी मा के हैं और साथ ही ३०००० रूबल भी भेज रहा है, लेकिन वह अपना आशीष उन्हे कभी नही द सकता। कुछ दिना के बाद बूढे ने बीस हजार रूबल और भेजे, लेकिन बहुत पहले ही यह सारा धन खत्म हो चुका था। मकान बिक गया और पेनोरोव अपने परिवार के साथ गुबरनिया (प्रान्तीय) सरकार मे एक नौकरी करने यहा आ गया था। लेकिन यहाँ उसने एक और परिवार बना लिया, जिसकी बडी चर्चा थी, क्योकि उसने इसे छिपाने का कोई भी प्रयत्न नही किया।

नीना अपने पति की श्रद्धा करती थी। इस समय ऐतिहासिक उपन्यास सुनते हुए वह साच रही थी कि अगर उसकी जिन्दगी—जैसी वह अब तक

बीती है, कोई लिखे, तो कितनी कारुणिक होगी ! चूँकि कसर की रसौली उसकी छाती म थी, इसलिए उसे हमेशा यह खयाल बना रहता था कि यह बीमारी उसके असफल प्रेम के कारण ही है और रोने कलपन और ईर्ष्या न उसकी तन्दुरुस्ती छीन ली है।

लेपतेव ने पुस्तक बन्द कर दी। "शुभ है, यह खत्म हो गयी," उसने कहा, 'कल हम लोग नयी किताबें शुरू करेंगे।"

नीना फ्यादोरोव्ना हँस पडी। वह हमेशा आसानी से हँस लेती है। लेकिन लेपतव ने ध्यान से देखा कि कभी-कभी उसकी बीमारी उसकी हँसी को प्रभावित करने लगती है, क्योंकि वह बहुत ही मामूली चीजा पर और प्राय बिना किसी प्रसग के हँसने लगती है।

"सुबह जब तुम बाहर गये थे, यूलिया यही थी," उसने कहा, 'मेरा खयाल है कि उस अपने पिता मे कोई बहुत विश्वास नही है, क्योकि वह कह रही थी, मेरे पिता की दवा तो होने ही दीजिए, लेकिन मेरी राय है कि आपको छिपे तौर से किसी साधु को भी दिखाना चाहिए, जिससे वह भी आपके लिए प्रार्थना करे।' शहर मे कोई बूढा साधु है, क्या तुम उसे जानते हो ? यूलिया अपनी छतरी यही भूल गयी है। कल उसे जरूर द आना।" वह तनिक रुककर फिर कहने लगी, 'लेकिन जब अन्त आ ही गया हो, तो न डॉक्टर ही कुछ कर सकता है, और न साधु।'

"नीना, तुम रात सोयी क्या नही ?" लेपतेव ने विषय को बदल देने के लिए धीरे से कहा।

' मैं नही जानती। शायद म सो ही नही सकती। मैं जागती रहती हू और सोचा करती हूँ

मेरी प्यारी नीना, आखिर तुम किस चीज के बारे मे सोचती हो ?'

बच्चो के बारे म, तुम्हारे बारे में अपनी जिन्दगी के बारे मे। मैं एक बहुत भयकर बीमारी से ग्रस्त हूँ अलेक्सी, और सोचती हूँ हे ईश्वर ! " वह हँसने लगी, 'मैंने पाच बच्चो को जन्म दिया। उनमे से तीन को दफनाया। कुछ दिन बाद मैं एक बच्चे को फिर जन्म देनेवाली

हूँ और उस समय मेरे ग्रिगोरी निकोलोविच उस औरत के साथ बठे होंगे और कोई दाई को बुलानेवाला भी नही होगा। मैं खुद रसोई या बडे कमरे के बाहर जाऊँगी कि किसी नौकर को बुलाऊ, लेकिन वहा यहूदी दूकानदार बठा, उनके घर लौटने का इतजार करता होगा मेरा सिर चक्कर खाने लगेगा वह मुझे प्यार नही करते, यद्यपि उन्होने यह मुझसे कभी भी नही कहा। अब मैं इसकी बिलकुल परवाह नही करती, न इसस मुझे कोई चोट ही पहुचती है। लेकिन जब मैं कम उम्र की थी—बहुत दुखी होती। मैंने एक बार उन्हे बाग मे एक औरत के साथ देखा। उस समय हम देहात म रहते थे। मैं वहा से लौटकर चल पडी और बिना यह जाने कि मैं कहाँ जा रही हूँ, चलती रही, यहा तक कि मैं एक चच की सीढियो पर पहुच गयी। मैं वहा अपने घुटनो के बल गिर पडी और बिलखन लगी, हे पवित्र माता!' अँधेरा गाढा हो गया था और चाँद चमकने लगा था।"

वह साँस लेन के लिए रुकी। फिर कुछ दर आराम करने के बाद उसने अपने भाई का हाथ अपन हाथो मे ले लिया।

तुम कितने अच्छे हो अलेक्सी!" उसने एक अजीब सी स्वरहीनता से कहा, "इतने चतुर इतने भले!"

लेपतव ने यूलिया की छतरी लेकर अपनी बहन का कमरा आधी रात को छोडा। इतनी रात बीतन पर भी उसने देखा कि नौकर रसोई मे चाय पी रहे हैं। घर मे कोई व्यवस्था नही रह गयी है—वह सोचने लगा। बच्चे अब भी जगे हुए थे और उनमे से कुछ रसोईघर मे भी थे। सब-के सब धीमी और बेचन आवाज मे बातें कर रहे थे। उन्हे इस बात का खयाल भी नही था कि एक टिमटिमाती हुई रोशनी गुल होनेवाली है। बच्चे और सयाने पहले से कई अपशकुनो के कारण बेचन थे—हॉल म रखे हुए शीशे म दरार पड गयी थी। समोवार मे स सी सी की आवाज रोज ही निकलती थी और इस समय भी निकल रही थी। लोगो का कहना था कि नीना प्योदोरोव्ना के जूते से एक चूहा तब निकलकर भागा, जब कि वह उसमे

पैर डाल रही थी। यहा तक कि बच्चे भी इन अपशकुनो का नतीजा जानते थे। काले बालोवाली सबसे बडी लडकी साशा मेज़ के पास डरी हुई खामोश और निराश बठी थी। सात वष की छोटे बालोवाली लीदा अगीठी की बगल मे खडी थी।

लपतेव नीचे अपने कमरे मे चला गया। कमरा छोटा सा, बिना हवा का और जिरेनियम के फूल की सी गध से भरा था। उसने नीना के पति को अपने कमरे मे अखबार पढते देखा। लेपतेव ने अपना सिर हिलाया और उसके सामने जा बठा। दोनो खामोश बने रहे। वे सारी शाम इस तरह की खामोशी मे बिता सकते थे।

छोटी बच्चिया रात्रि का नमस्कार कहने नीचे आयी। पेनोरोव ने बिना कुछ कहे क्रास का सकेत किया और अपना हाथ चूमने के लिए बढा दिया। वे विनीत हुई और लेपतेव की ओर बढ गयी। लेपतेव ने भी क्रास का सकेत किया और अपने हाथो पर उनका चुम्बन स्वीकार किया। यह प्रक्रिया हर शाम को इसी तरह दुहराई जाती थी।

जब छोटी बच्चिया चली गयी तो पेनोरोव ने हाथ का अखबार एक ओर रखते हुए कहा, "दोस्त, यह ईश्वर भीरु शहर इस कदर उबाऊ होगा, यह मै नही जानता था।' उसने सिर हिलाया, 'लेकिन मुझे बडी खुशी है कि तुम्ह मन लगाने के लिए एक साधन मिल गया।'

लेपतेव न आश्चय से पूछा, "क्या कह रहे हो ?"

"मैंने कल तुम्हे डॉक्टर बोरिसिच के घर से निकलते हुए देखा था। मुझे यकीन है कि तुम वहा डॉक्टर से मिलन तो नही गये थ।'

"इसमे कोई सन्देह नही," लेपतेव न कहा।

"स्वाभाविक ही है। वह बूढा तो एकदम खूसट है। तुम कल्पना भी नही कर सकत कि वह कितना गधा, गन्दा, अविश्वसनीय और उबाऊ आदमी है। राजधानी मे रह चुके होने के कारण तुम लोग अब भी कसबाई लोगो की अच्छाई ही देखने के आदी हो। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, मेरे प्यारे, कि यहाँ कुछ भी आकषक नही है। यहाँ पिछड़ेपन, क्रूरता और गन्दगी के अलावा कुछ भी नही है। हम लोगो के नानाजन और प्रतिभा को ही देखो, और इस शहर को देखो, जिसमे अट्ठाईस

डॉक्टर हैं, सबने बहुत पसा कमा लिया है और अपने निजी मकानो मे रहते हैं, लेकिन दवाइयो के मामले मे लोग अब भी असहाय है। जब नीना का आपरेशन होना था—इस बात का ध्यान रखो कि वह एक बहुत मामूली आपरेशन था—तो भी हम मास्को से एक सजन बुलाना पडा। यहा कोई भी ऐसा सजन नही था, जो इस काम को कर सकता। तुम कल्पना कर सकते हो कि इन्हे कुछ भी मालूम नही है, इनकी समझ मे कुछ भी नही आता और इनकी रुचि किसी भी चीज मे नही है। कोशिश करो और जरा इनसे पूछो कि कन्सर क्या है, यह कैसे होता है?'

फिर पेनोरोव कैंसर के बारे मे बताने लगा। वह विज्ञान की सभी शाखाओ का जानकार था और हर चीज का वैज्ञानिक विवरण दे सकता था, वह भी सब का-सब अपना निजी। रक्त सचार पर उसके अपने सिद्धान्त थे उसका अपना निजी रसायनशास्त्र था, अपना ज्योतिष था। वह धीरे धीरे बडी सहजता के साथ बोलता था। "कल्पना करो!" कहते समय उसकी आखें आधी खुली रह जाती थी। वह अपनी बात को जमाते हुए धीर-धीरे बोलता और सहसा मुस्करा पडता। साफ लगता था कि वह अपने पर ही मोहित है और अपनी पचास वष की अवस्था का कोई एहसास उसे नही रह गया है।

"मैं बहुत भूखा हूँ," लेपतेव ने कहा, "कोई नशीला खाद्य काफी होगा इस समय।"

'अच्छी बात है। इसका इन्तजाम अभी हुआ जाता है।"

थोडी ही देर बाद लेपतेव और उसका जीजा—दोनो ऊपर के कमरे मे खाने की मेज पर जा बैठे थे। लेपतेव ने वोदका का एक गिलास पिया और ऊपर से थोडी शराब भी ली। पनोरोव ने कुछ भी नही लिया। वह न तो कभी पीता है, न ताश ही खेलता है। फिर भी उसने अपना और अपनी बीवी का सारा धन खच करके अपने को कर्ज मे डाल लिया है। एक अजीबो गरीब प्रतिभा के आदमी के लिए इन व्यसनों के अलावा भी धन खच करने के अनेक तरीके हैं। पेनोरोव को अच्छे खाने का शौक है। साथ ही उसे अच्छी तरह परसा जाना चाहिए। खाते समय मधुर

मशीन और भाषण माना हो तो वह एक ही बार में दस से लेकर पच्चीस रूबल तक पलक परसनवाला या टिप देने में आगा पाता है। वह चर्च दान और लाटरी में पैसा लगाने में कभी नहीं चूकता। अपनी स्त्री मित्रों या उनके नामकरण दिवस पर फूल या उपहार भेजना वह कभी भी नहीं भूलता। प्याले, शीशे के टाइयाँ, तेल, सुगंधित वस्तुएँ, सिगरेट होल्डर, तोते, बुत और जापानी जैसी सजावट की वस्तुएँ वह खरीदता ही रहता है। रात को यह रेशमी कपड़े भी पहनता है। यह बहुत कीमती पलंग और दाढ़ बुखारा के बने ड्रेसिंग गाउन का उपयोग करता है। इसके लिए उसे थोड़े पैसे की जरूरत पड़ती है जैसा वह कहता भी है। खाने के पूरे समय वह आहें भरता रहा और अपना सिर हिलाता रहा।

ठीक है संसार में सभी चीजों का अंत होता है उसने धीरे से कहा और उसकी काली आँखें सिकुड़कर छोटी हो गयीं तुम प्यार में फँसोगे और दुख भोगोगे और फिर उसमें निकल भी आओगे। वह तुम्हारे प्रति बेवफा होगी जैसा हर स्त्री जल्दी या बाद में हो जाती है। तुम दुख भोगोगे निराश होगे और फिर तुम भी उसके प्रति बेवफा हो जाओगे। लेकिन जल्दी ही वह समय भी आयेगा कि जब सब कुछ स्मृतियों का हिस्सा बन जायेगा और तुम बहुत ठण्डे दिल से उसके बारे में बात करोगे और इस सबको बेमानी समझने लगोगे।

लेपतेव थका हुआ था और कुछ नशे का प्रभाव भी उस पर हो गया था। उसने पेनोरोव के पीछे से उसके सुगठ सिर को देखा। दाढ़ी के बाल अच्छी तरह छँटे हुए थे। उसकी समझ में आ गया कि स्त्रियाँ इस खूबसूरत और आत्मविश्वासी आदमी पर इतना क्यों मरती हैं।

खाने के बाद पनोरोव अपने दूसरे फ्लैट में चला गया। लेपतेव भी थोड़ी दूर तक उसके साथ गया। इस शहर में पेनोरोव ही अकेला आदमी था, जो बीच में ऊपर को उठा हुआ हैट पहनता था। भूरी झाड़ियों और लकड़ी के गन्दे मकानों के इस शहर में अपने सुन्दर शरीर ऊँचे हैट और पीले दस्तानों के कारण वह असामान्य और कुछ हद तक दयनीय

लगता था।

लेपनेव उसे नमस्कार करके धीरे-धीरे घर की ग्रोर वापस लौट रहा था। चाँद इतना तेज चमकने लगा था कि घास की पत्तियाँ भी स्पष्ट दिखायी पड़ती थीं। लेपनेव ऐसा महसूस करने लगा, मानो चाँदनी उसके नंगे सिर को स्नेह से सहला रही है।

उसने जोर से कहा, "मैं प्यार करने लगा हूं!" वह पेनोरोव को बुलाकर बाहों में भर लेना चाहता था। उसकी सारी गलतियों के लिए उसे क्षमा करके, उसे बहुत सा धन देकर कहीं जंगल या मैदान में बिना उसकी ग्रोर मुड़कर देखे भाग जाना चाहता था।

जब वह घर पहुंचा, तो देखा कि यूलिया सरजीविना की भूली हुई छतरी एक कुरसी पर पड़ी है। उसने लपककर उसे उठाया ग्रौर होंठों से दबा लिया। रेशम की बनी हुई इस छतरी को किसी भी तरह नयी नहीं कहा जा सकता था। इसे बांधनेवाला रबर का फीता पुराना हो चुका था ग्रौर मूठ मामूली सी सस्ती हड्डी की बनी थी। लेपनेव ने उसे खोलकर ग्रपने सिर पर लगा लिया। सहसा उसे ऐसा लगा, जैसे उसने सही ग्रर्थों में पहली बार खुशी की साँस ली है।

वह छाते को हाथ में लिये ही मास्को के ग्रपने एक दोस्त को पत्र लिखने लगा

'मेरे प्यारे कोस्त्या, मैं तुम्हें यह शुभ समाचार पहुंचा रहा हूँ कि मैं फिर प्यार करने लगा हूं। 'फिर' मैं इसलिए कह रहा हूँ कि छ वर्ष पहले मैं मास्को की एक एक्ट्रेस से प्यार करता था, जिससे मिलने में मैं कभी भी सफल नहीं हो सका। तुम जानते हो पिछले साल मैं एक ऐसी ग्रौरत के साथ रहा, जो न तो जवान थी, न सुंदर। मेरे प्यारे दोस्त, सोचो, मैं प्यार के मामले में कितना ग्रभागा रहा हूँ! स्त्रियों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने में मुझे कभी भी सफलता नहीं मिली। मुझे यह दुबारा कहने में हार्दिक क्लेश पहुंच रहा है कि मेरी जवानी बिना प्यार के बीत गयी, ग्रौर ग्रब चौंतीस वर्ष की ग्रवस्था में मैंने जाना है कि प्यार क्या चीज है। इसलिए मैं कहता हूँ कि इसे फिर से होने दो।

'ग्रगर तुम इस लड़की को जानते होते, तो मैं समझता हूँ कि तुम

इस सुदरी कभी नही कहत । इसके गालो की हड्डियाँ उभरी उभरी हैं और यह बहुत दुबली पतली है, लकिन कैसी दया की भावना उसके चेहरे से टपकती है और कितनी विचित्र उसकी हँसी है । उसकी आवाज म एक लोच है । वह मुझस कभी भी बात नहीं करती और मैं यह भी नहीं कह सकता कि मैं उसे जानता हूँ । लेकिन जब भी मैं उसके पास होता हूँ, मुझे लगता है कि मैं किसी असामान्य और अद्भुत व्यक्ति के पास हूँ, जो असीम बुद्धिमान और महान् है । वह धार्मिक प्रवृत्ति की है और तुम जान नहीं सकते कि इस एक बात न मेरे ऊपर कितना असर डाला है और मैं उसका कितना आदर करने लगा हूँ । इस विषय पर मैं तुमसे बिना किसी अन्त के बहस कर सकता हूँ, यह जानते हुए भी कि तुम सही हो और तुम उसे अपनी तरह स्वीकार करते हो । फिर भी मैं उसे उस समय अधिक प्यार करता हूँ जब वह चच म प्रार्थना करती होती है । वह एक कसबाई लडकी है, लेकिन उसकी शिक्षा-दीक्षा मास्को म हुई है और वह हमारे मास्को को प्यार भी करती है और मास्को फशन क कपड़े भी पहनती है । इसलिए भी मैं उसे बहुत चाहता हूँ, प्यार करता हूँ प्यार करता हूँ ।

मैं यहीं से तुम्हे उत्तजित होते और 'प्यार क्या है' विषय पर एक लम्बा भाषण देते देख रहा हूँ । किसे प्यार करना चाहिए, किसे नही, इत्यादि कहते सुन भी रहा हूँ लेकिन मेरे प्यारे कोस्त्या मैंने जब तक प्यार नही किया था मैं प्यार को नही जानता था ।

'मेरी बहन तुम्हारे अभिवादन के लिए धन्यवाद कहती है । वह अक्सर नन्हे कोस्त्या को स्कूल ले जाते समय की बात याद करती है । वह अब भी तुम्हे बेचारा कोस्त्या' ही कहती है क्योंकि तुम अब भी उसके लिए एक नन्हे स अनाथ बालक हो । इसलिए मेरे अनाथ बच्चे, मैं प्यार करने लगा हूँ । जब तक यह एक छिपी हुई बात है इसे उन लोगो स न कहना जो इससे सम्बन्धित हैं । मुझे विश्वास है कि सब कुछ निश्चय हो जायेगा या जसाकि तोल्सतोय के उपन्यास का कोस्त्या कहता है, हर चीज़ अपने ही स ठीक हो जायेगी "

पत्र समाप्त करके लेपतेव सोने चला गया । थकावट के कारण उसकी

और लोग उसे बहुत प्यार करते थे। जिस तरह उसकी मनुष्टि साथ बिना मुस्कराये हाथ पर दानवशी लोगों को पैसे देता रहता था, उसी तरह यह भी हाथ खोलकर दान देती थी। नीना गरीब लड़कों की स्कूल-फीस, गरीब बूढ़ी औरतों को चीनी, मुरब्बा और चाय, तथा ज़रूरतमन्द गरीब दुल्हनों का ज़रूरी सामान अक्सर दिया करती थी।

इस समय भी उसके हाथों में एक पुर्ज़ों की एक गड्डी थी जिसमें ज़रूरतमन्दों ने खाने का सामान खरीदा था और अब दूकानदार दाम की अदायगी के लिए उन्हें उसके पास लाया था।

कितना सामान उन लोगों ने खरीद लिया है! क्या वे इतने गिर गये हैं? यह मुश्किल से उन पुर्ज़ों पर अपनी लिखावट पहचानकर कह रही थी, उसने सोचा, बेचारी अबला! अगर मैं उनकी कीमत न चुकाऊँ, तो क्या होगा?

"मैं इन सबका मूल्य आज ही चुका दूँगा," लेपतव ने कहा।

"नहीं, नहीं! तुम ऐसा कभी मत करना," नीना फ्योदोरोव्ना ने नाराज़ होकर कहा, "यह काफी है कि २५० रूबल मैं तुमसे और फ्योदोर से हर महीने पाती हूँ। ईश्वर तुम दोनों का भला करे!" उसने इतने धीरे से कहा जिससे आस-पास काम में लगे नौकर न सुन सकें।

"लेकिन मैं ढाई हज़ार रूबल हर महीने खर्च करता हूँ," लेपतव ने कहा, "मैं तुम्हें एक बार फिर बता देना चाहता हूँ कि मेरे पैसे खर्च करने का तुम्हें उतना ही अधिकार है जितना फ्योदोर को या मुझे है। इस बात को आज और हमेशा के लिए समझ लो। हम तीन हैं और इसी हिसाब से हर तीन कोपेक में से एक तुम्हारा है।"

नीना फ्योदोरोव्ना कुछ भी समझ न सकी। उसके चेहरे पर एक ऐसी भंगिमा उभर आयी जैसे वह किसी गणित के सवाल में उलझ गयी हो। पैसों के बारे में कुछ भी समझ न पाने की उसकी यह अयोग्यता लेपतव को हमेशा दुःखपूर्ण लगा करती है। उसके मन में सन्देह है कि नीना के अपने भी कर्ज़ हैं, जिन्हें स्वीकार करने में उसे लज्जा का अनुभव होता है और इसी कारण उसे पीड़ा बनी रहती है।

इसी समय सीढ़ियों पर किसी के पैरों की आहट और मेहनत के

साथ सास लेने की आवाज सुनायी पडी। यह डॉक्टर था, हमेशा की तरह ढीला ढाला।

वह रु रु रु की ध्वनि निकालने लगा, "र रु रु !"

उससे न मिलने की इच्छा के कारण लेपतेव खाने के कमरे से होकर अपने कमरे मे चला गया। वह कभी भी डॉक्टर से इतनी आत्मीयता नही महसूस कर सका, जिससे वह अक्सर उसके घर जा सके। इसके अलावा वह इस खूसट को, जसे पनोरोव उसे कहता है, बरदाश्त भी नही कर पाता। इसी कारण यूलिया सरजीविना से वह अब तक इतना कम मिल सका था। उसके दिमाग मे यह बात एकाएक आयी कि इस समय वह यूलिया की छतरी पहुचाने की गरज से उसके घर जा सकता है, क्योकि घर म डॉक्टर नही होगा। इसमे जरा भी सन्देह नही कि इस समय वह अकेली होगी—उसे जल्दी करनी चाहिए। उसका हृदय तेजी से धडकने लगा। वह छतरी हाथ मे लेते ही काप उठा और प्यार के पखो पर चढकर तेजी से यूलिया के घर की तरफ निकल पडा।

बाहर बहुत गरम था। डॉक्टर के टूटे फूटे गन्दे अहाते में, जिसे बनवाने की बात डॉक्टर कब से सोच रहा है, बहुत-से लडके गेंद खेल रहे थे। दूर अहाते के एक कोने मे यूलिया अपने दहलीज की मेहराब के सामने अपने दोनो हाथ पीछे बाधे खडा उनका खेल देख रही थी।

"नमस्कार!" लेपतेव ने दूर से ही पुकारकर कहा।

वह घूमी, तो लेपतेव ने देखा कि उसका चेहरा जो रोज थका-हारा सा रहता था, आज अपने चारो तरफ खेलते हुए बच्चो की तरह जीवन और उत्साह से भरा हुआ है।

'देखिए, आपने मास्को मे ऐसा खुशी से भरा हुआ खेल कभी नही देखा होगा," उसने लेपेतव से मिलने के लिए उसकी ओर बढते हुए कहा "यह सच है कि वहा अहाते बहुत छोट छोट हैं। इतनी जगह भी नही होती कि इधर-उधर दौडा जा सके । पापा अभी आपके ही घर गये हैं।" कहते हुए वह फिर बच्चो की ओर मुड गयी।

'मैं जानता हूँ, लेकिन मैं तो आपसे मिलने आया हूँ, उनसे नही।" लेपतव ने उसकी जवानी और उत्साह, और उसकी छरहरी लम्बी गरदन

मे पडी पतली सोने की चेन की मन-ही-मन प्रशसा करते हुए दुहराया, "मैं आपसे मिलने आया हूँ। आपकी यह छतरी मेरी बहन ने इसे पहुचाने को कहा है। आप कल इसे वही भूल आयी थी।"

यूलिया ने पहले अपना हाथ छाता लेन के लिए बढाया, फिर सहमा उस छातिया से मटा लिया।

"कृपया इस मेरे ही पास रहने दीजिए," लेपतव ने उत्साह के साथ कहा और अपने को उस खुशी के हवाले कर दिया, जिसे उसने बीते हुए कल की सांझ को छतरी खोलकर सिर पर लगा लेने के समय महसूस किया था, "मैं इसके द्वारा आपकी दोस्ती और याद का सुख पाऊँगा।"

"आप इसे रख सकते है," यूलिया न कहा और शम स लाल पड गयी, "लेकिन इसम कोई खास बात नही है।"

लेपतेव ने मूक वेदना से उसकी आर देखा, जैस उसके पास अपने को व्यक्त करने के लिए शब्द ही नही थे।

'मैं इस धूप म आपको क्या खडा किय हूँ ?" यूलिया थोडी देर चुप रहकर बोली, 'अन्दर आइए!"

'मेरी वजह से आपके काम मे कोई हज तो नही होगा ?"

वे अन्दर चले गय। यूलिया सरजीविना अपने सफेद फूला-से वस्त्रो को फडफडाती हुई दौडकर सीढियो पर चढने लगी।

सहमा बीच म रुककर उसने कहा 'मेरे काम मे बाधा देना सम्भव नही, क्योकि मैं कुछ ऐसा करती ही नही। सुबह से लेकर रात तक हर दिन मेरे लिए छुट्टी का ही दिन है!'

'यह एक ऐसी बात है, जिस मैं समझ ही नही सकता," लेपतव ने उसके पास जाकर कहा "मैं तो ऐसे लोगा के बीच म पला हूँ, जिनमे स्त्रियाँ और मद दोना रोज काम करते है।'

"लेकिन जब करन के लिए कुछ हो ही न, तो फिर क्या किया जाये ?' उसने पूछा।

'आदमी को अपनी जिन्दगी इस प्रकार नियोजित करनी चाहिए, जिसमे काम करना आवश्यक हो उठे। बिना काम के पवित्र और सुखी जीवन असम्भव है।" उसने फिर छतरी को अपने से भीच लिया और

एक ऐस हलके स्वर मे बोल पडा, जिसे वह स्वय भी नही पहचान पाया, "अगर आप मेरी पत्नी बनना स्वीकार करें, तो मैं वह सब आपको दे दूगा, जो मेरे पास है सबकुछ दुनिया मे कुछ भी ऐसा नही है—बडे-से-बडा कोई भी त्याग—जो मैं न कर सकू।'

यूलिया ने चौककर भय और विस्मय की दृष्टि से उसे देखा।

"नही नही ! " वह पीली पड गयी, "मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि यह असम्भव है। मुझे क्षमा कीजिए।"

वह जल्दी मे अपना गाउन फडफडाती, दौडती ऊपर चली गयी और दरवाजे के पीछे अदृश्य हो गयी।

लेपतव के मन की हालत एकदम बदल गयी, जसे कोई रोशनी उसकी आत्मा मे प्रवेश कर गयी हो। वह शम और बेइज्जती से जलता हुआ तेजी से घर के बाहर निकल आया। वह सोचने लगा था कि वह विकपक और उबाऊ आदमी है, इसीलिए उसके प्रति नापसन्दगी और अनिच्छा का व्यवहार किया गया है।

'मेरे पास जो कुछ है, मैं सब दे दूगा !' वह कडी धूप म घर की ओर आते हुए बार बार अपना ही मजाक बनाता रहा। उसे अपनी स्वीकारोक्तियो का कुछ कुछ हिस्सा भी याद आता रहा, "मैं सबकुछ दे दूगा' ठीक व्यापारियो की तरह—जसे कोई आपका सबकुछ माग रहा है !

उसन जो भी कहा था, वह सब बेहूदगी की हद थी। उसने यह झूठ क्या बोला कि वह ऐसे लोगो के बीच रहा है जो हर दिन काम करते हैं ? पवित्र और सुखी जीवन की बात कहकर उसन नतिकता की झूठी उदारता क्या व्यक्त की ? य सब झठ गैरदिलचस्प और बेवकूफी की बातें थी।

धीरे-धीरे उसके मन की हालत एकदम बदल गयी। उसमे उस तरह की अतीव उदासीनता आ गयी, जस किसी अपराधी मे सजा सुनन के बाद आ जाती है कि चलो, जो कुछ होना था, वह हो गया। कम

स-कम अनिश्चय में लटके रहने से तो छुट्टी मिली। अब हर चीज़ साफ थी। उसके लिए प्रसन्नता की कोई सम्भावना नहीं थी। न कोई आशा और स्वप्न थे न ईर्ष्या और जलन थी। अब तो उसे उस उदासी की जगह जो उसके दिल दिमाग में घर बनाकर बैठ गयी थी, दूसरे की प्रसन्नता और सुख का बैठाना होगा। इस सबको फिर से जानने के पहले ही बुढ़ापा आ जायेगा और उसके लिए कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं रह जायगा। उसके लिए इस सबकी कोई परवाह नहीं रह गयी थी और अब वह भावनाओं से मुक्त होकर सोच सकता था। फिर भी उसका चेहरा—विशेषत आंखों के नीचे भारी लगता था और माथे पर एक अजीब सा तनाव बना हुआ था—ऐसा लगता था जैसे किसी समय भी आंसू निकल सकते हैं। कमजोर और निजलिजा लेपतेव अपने बिस्तर पर लेट गया और पांच ही मिनट में गहरी नींद में सो गया।

तीन

लपतेव के असम्भावित विवाह प्रस्ताव ने यूलिया सरजीयेवना को एक बहुत ही गहरी मानसिक पीडा में डाल दिया था।

वह लेपतेव को बहुत कम जानती थी। अकस्मात ही उनकी मुलाकात हुई थी। वह एक धनी आदमी था और मास्को की मशहूर फर्म फ्योदोर लेपतेव एण्ड सन्स का साझीदार था। हमेशा बहुत गम्भीर रहने और देखने में होशियार लगने के साथ ही उसे अपनी बहन के स्वास्थ्य

की हमेशा चिंता बनी रहती थी। यूलिया को पूरा यकीन था कि वह उसके अस्तित्व से भी अनजान है और वह स्वयं भी उसकी ओर से सदा उदासीन बनी रहती थी। लेकिन सहसा सीढ़ियों पर यह विवाह का प्रस्ताव! कितना दयनीय और दुख से भरा हुआ चेहरा था!

वह विचलित इसलिए भी थी कि यह सब एकाएक इस तरह कैसे हो गया। उसने 'पत्नी' शब्द का प्रयोग कर दिया—इसलिए उसे इस तरह इन्कार करना पड़ा। उसे यह भी याद नहीं था कि उसने उस समय उससे क्या कहा, लेकिन अरुचि का यह भाव, जो उस समय उसके मन को बहा ले गया था, अब भी बना हुआ था। ऊपर से वह उसे पसन्द भी नहीं करती थी—वह एक सेल्समैन की तरह का उबाऊ आदमी है। किसी भी तरह उसे स्वीकार करना सम्भव नहीं, फिर भी उसे एक अजीब-सी बेचैनी बनी हुई थी।

'हे ईश्वर! सीढ़ियों पर, यहाँ तक कि कमरे में आये बिना?" उसने घोर निराशा में कहा और अपने बिस्तर की बगल में टँगी हुई देव प्रतिमा की ओर घूम पड़ी, "बिना किसी तरह की कोर्टशिप के और इस भद्दे ढंग से!"

वह अकेली इस हर घड़ी बढ़नेवाले तनाव में तब तक के लिए पड़ गयी कि जब तक वह किसी से बात न कर ले कि उसने जो कुछ किया है, ठीक ही किया है। लेकिन वहाँ तो कोई बात करनेवाला भी नहीं था। उसकी माँ बहुत पहले ही परलोक सिधार चुकी है और पिता ऐसे नहीं थे, जिनसे गम्भीरतापूर्वक कोई बात की जा सके। प्रार्थना तक में वह एकाग्र नहीं हो पा रही थी, क्योंकि वह समझ ही नहीं पा रही थी कि प्रार्थना किसके लिए की जाये!

—

समोवार लाया गया। यूलिया सरजीविना बहुत थकी हुई दिख रही थी और एक अजीब-सी अवसन्नता उस पर छा गयी थी। वह खाने के कमरे में आयी, चाय उड़ेली और अपने पिता के लिए प्याला बना दिया। यह उसका रोज़ का निश्चित काम था। सरजी बोरिसिच

अपना घुटने तक का लम्बा कोट पहने हुए था। उसका चेहरा सुन था और दोनों हाथ कोट की जेब में घुसेड़े वह खाने के कमरे में पिंजड़े में बन्द पंछी की तरह चक्कर काट रहा था। कभी-कभी मेज के पास रुककर वह ज़ोर की आवाज़ के साथ चाय की चुस्की ले लेता था और इसी बीच बीच की रुकावट के साथ चक्कर काटता रहता था।

डॉक्टर ने उसकी ओर देखा—उसे ऐसा लगा, जैसे वह कुछ भी समझ न पा रही हो।

"लपतेव?" उसने पूछा, "वह जो पेनोरोव का भाई है?"

वह अपनी लड़की को बहुत प्यार करता था और यह भी जानता था कि देर सवेर वह शादी कर लेगी और उसे अकेला छोड़ जायेगी, लेकिन कोशिश करके उसने कभी भी इस बात पर न सोचने का निश्चय कर लिया था। इस बड़े मकान में अकेले रहने की सम्भावना से वह डर जाता था। यद्यपि वह इस बात को स्वीकार नहीं करता था, लेकिन व्यक्तिगत रूप से उसके मन में यह निश्चय था कि अगर वह इस बात को मन से भी मान लेगा, तो उसे लकवा मार जायेगा।

सचमुच मैं बहुत प्रसन्न हूँ" उसने अपना कंधा हिलाते हुए कहा, "मैं हृदय से तुम्हें बधाई देता हूँ! मुझे छोड़ने का तुम्हारे लिए यह बहुत बड़ा अवसर है। तुम्हारा ऐसा करना ठीक भी है। एक युवती के लिए एक बूढ़े बाप, बीमार और मूढ़चित्त जीव के साथ रहना बहुत मुश्किल भी है। तुम एकदम ठीक रास्ते पर हो। जितनी ही जल्दी मैं मृत्यु की सूचना दूंगा उतनी जल्दी यम मुझे उठाकर ले जायेंगे और सभी लोग इससे प्रसन्न होंगे। मैं तुम्हें बधाई देता हूँ, मेरी प्यारी!"

"मैंने उसे इन्कार कर दिया है।"

डाक्टर को इस बात से काफी राहत मिली, लेकिन वह अपने को रोक नहीं सका, "मैं प्रायः सोचता हूँ कि मैं अब तक पागलखाने में क्यों नहीं रख दिया गया?" उसने बोलना जारी रखा "मैं एक सीधे सादे जैकेट की जगह पर यह लम्बा कोट क्या पहने हुए हूँ? मैं अब भी सच्चाई और भलाई में क्यों विश्वास करता हूँ? क्यों इस गन्दे ज़माने में भी मैं तुम्हारे उन आदर्शवादियों में एक हूँ? मुझे मिलता ही क्या है मेरी इस

सच्चाई और ईमानदारी के बदले ? अक्सर लोग कक्ड फेंकते हैं और मुझसे फायदा उठाते हैं। यहाँ तक कि मेरे निकट सम्ब धी भी मेरे सिर पर लदे रहे है। मेरे जैसे बेवकूफ बूढ़े की धिक्कार है।"

"आपसे तो बात भी नही की जा सकती, पिताजी।" यूलिया ने कहा और वह गुस्स मे जल्दी से मेज़ से उठकर अपने कमरे मे चली गयी।

लेकिन फिर जल्दी ही यूलिया का अपने पिता पर तरस आ गया और जब उसके क्लब जाने का समय हुआ तो वह उसके पीछे पीछे नीचे तक गयी और खुद दरवाज़ा ब द किया। बडी बेचन और आधियो की रात थी वह। हवा के झोको से दरवाजे काप काप जाते थे और बाहरी छत पर इतनी जोर की बूदें पड रही थी कि उसकी मोमबत्ती बुझ गयी। अपने सभी कमरा को पार करते हुए वह ऊपर गयी और हर खिडकी और दरवाज़े पर उसने त्रास का सकेत किया। हवा चीखती रही और उस किसी के छत पर चलने की आवाज सुनायी देती रही। समय किसी भी प्रकार नही बीत रहा था—उसने इस तरह का अकेलापन पहले कभी भी महसूस नही किया था।

वह सोचने लगी, क्या सिफ सूरत पस द न आने के कारण लेपतेव के प्रस्ताव को ठुकराकर उसने उचित किया है ? यह सच है कि वह उसे प्यार नही करती है। उससे शादी करने का मतलब है कि उसने प्रस नता और वैवाहिक जीवन के बारे म जो भी साचा है उन सपनो को हमेशा के लिए नमस्कार कर देना। लेकिन क्या वह कभी उस आदमी को पा सकेगी, जिसके सपने उसने देखे हैं ? वह इक्कीस वष की हो गयी है कोइ भी दूसरा सम्भावित व्यक्ति इस शहर मे नही है। उसन सारे लोगा के बारे मे सोचा, जिन्ह वह जानती थी—सरकारी नौकर, अध्यापक, अधिकारी। उसने देखा कि उनम से कुछ विवाहित हैं जो उदास और खोखली जि दगी बिता रहे हैं और वे दिलचस्प न होने के साथ ही बवकूफ या चरित्रहीन है। कुछ भी हो, लेपतेव मास्को का रहनेवाला है। उसने यूनिवर्सिटी मे शिक्षा पायी है और फ्रेंच जानता है। वह राजधानी का रहनेवाला है, जहाँ बहुत से चतुर और विशिष्ट व्यक्ति रहते हैं। वह खुशियो मे भरा पूरा नगर है। वहा हर तरह के नाट्य गह, सगीत-

गोष्ठियां, अच्छे बाल सवारनवाले और तरह-तरह की दूकानें हैं लेकिन बाइबिल वह तो कहती है, एक स्त्री को अपने पति को प्यार करना चाहिए और उपन्यासो में तो एसी वैसी अनेक बातें होती है। लेकिन यह सब अतिशयोक्ति है। क्या शादी बिना प्यार क सम्भव नही है? क्या लाग कहते नही कि प्यार जल्दी ही खत्म हो जाता है और आदतें रह जाती हैं? शादी का मतलब प्यार और प्रसन्नता नही, बल्कि कर्तव्य है उदाहरण के लिए बच्चा का पालन पोषण, गृहस्थी का सचालन इत्यादि। शायद बाइबिल म भी प्यार का मतलब स्नेह और सहिष्णुता स ही है—अपने पति को अपने पडोसी की तरह प्यार करने से।

बिस्तर पर जान के पहले यूलिया ने ध्यान से समाचार पत्र पढा, झुककर अपनी छाती से अपना हाथ लगाया और मोमबत्ती की लौ की तरफ ध्यान से देखते हुए कहा 'हे पवित्र माता, मेरी सहायता करो! मेरे ईश्वर मेरी मदद करो!'

उसने उन सारी परिचित वृद्ध महिलाओ को याद किया जो बडी कड़ुआहट के साथ शादी के प्रथम प्रस्ताव पर कभी इन्कार करने के लिए पश्चात्ताप करती हैं। क्या यही उसके साथ नही हो सकता? शायद उसे भी किसी समर्पित माताओ के गृह म जाकर साध्वी (नन) ही बनना पडे।

उसने अपने कपड़े उतारे और बिस्तर मे जाते-जाते अपने चारों ओर क्रास का सकेत किया। इसी समय बरामदे मे ज़ोर की घण्टी बज उठी।

"हे भगवान!' उस आवाज के साथ पीडा की एक अनुभूति उसके सारे शरीर मे दौड गयी थी लेकिन वह लेटी सोचती रही कि आत्मा की यह पिछडी जिन्दगी कितनी नीरस और नसो को तोडनेवाली है! हर समय आप विस्मय और डर के पजे मे रहते हैं। हर समय किसी न किसी चीज के प्रति गुस्सा और अपराध की भावना बनी रहती है। अन्तत आप इतने शक्तिहीन हो जाते हैं कि अपने को दो कम्बलो म छिपा लेना पडता है।

आधे घण्टे बाद फिर घण्टी ज़ोर से और लगातार बजने लगी। लगता है, नौकर सो गये हैं और सुन नहीं रहे हैं—यूलिया ने मोमबत्ती जलायी, नौकरों पर गुस्से के मारे कांपते हुए जल्दी से कपड़े पहन लिये। लेकिन जब बरामदे में रास्ते पर पहुंची, तो देखा कि बैठक की नौकरानी दरवाज़ा बन्द कर रही थी।

"मैंने तो समझा मालिक थे, पर यह तो उनके लिए कोई बुलावा था।" उसने कहा।

यूलिया अपने कमरे में लौट गयी। उसने मेज़ की दराज़ से ताशों की एक गड्डी निकाली। उन्हें अच्छी तरह मिला दिया और फिर उन्हें काटकर रख दिया। अगर नीचे का ताश लाल होगा, तो इसका मतलब 'हाँ' होगा, यानी वह लेपतेव से शादी कर लेगी लेकिन अगर निचला पत्ता काला होगा, तो इसका मतलब 'नहीं' होगा। पैकेट के नीचे जो ताश का पत्ता निकला, वह हुकुम का दहला था।

इस कारण वह शान्त होकर सो गयी। लेकिन फिर सुबह वह न तो 'हाँ' ही रह गया, न 'नहीं' ही। इस समय अगर वह चाहे, तो अपना सारा जीवन बदल सकती है। वह सोचते-सोचते बेहद थक गयी। लेकिन ११ बजने के थोड़ी ही देर बाद उसने कपड़े पहने और नीना फ्योदोरोव्ना से मिलने चली गयी। असल में वह लेपतेव से मिलना चाहती थी। शायद वह उसे इस बार पहले से अच्छा लगे। शायद उसने अब तक उसके बारे में गलत धारणा बना रखी है। वह बहुत देर तक हवा से लड़ती, अपने हैट को दोनों हाथों से संभाले, धूल से चौंधियायी हुई चलती रही।

चार

असम्भावित रूप से यूलिया को इस तरह अपनी बहन के कमरे में आते देखकर लेपतेव पर पिछले दिन के अपमान के भाव का तीखापन हावी हो गया। कल जो कुछ भी हुआ है उसके बाद भी इतनी सहजता से यूलिया मेरी बहन से मिलने चली आयी है तो इसका मतलब यही है कि शायद उसने मुझे यहां नहीं देखा, या अपनी घृणा के योग्य भी मुझे नहीं समझा। लेकिन जब उसने हाथ मिलाया तो उसकी निगाह उसके पीले चेहरे और धून से भरी आंखों की ओर गयी। दुख और पश्चात्ताप का एक ऐसा आभास यूलिया ने उसे दिया कि लेपतेव को यह समझते देर नहीं लगी कि वह भी दुख में है।

उसकी तबीयत ठीक नहीं थी। थोड़ी देर—करीब दस ही मिनट रुकने के बाद वह उठ खड़ी हुई और वहाँ से रवाना हो गयी।

क्या आप मुझे घर पहुंचा सकेंगे, अलेक्सी फ्योदोरोविच ?" उसने बाहर जाते हुए लेपतेव से कहा।

वे लोग अपने हैट पकड़े हुए बाहर चले गये। लेपतेव कुछ कदम पीछे रहकर उसे हवा से बचाता रहा। वे मुख्य सड़क को छोड़कर पतली सड़क पर मुड़ गये। वहाँ हवा कम तेज थी, इसलिए वे अगल बगल चलते रहे।

"मैं कल बहुत ही सख्त हो गयी थी। कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए ' उसने कहना शुरू किया तो उसकी आवाज कांपने लगी जैसे वह रोने ही वाली हो, मुझे इतना दुख हुआ कि सारी रात मुझे नींद नहीं आयी।"

"सच कहती हैं ? मैं तो खूब सोया रात भर !" लेपतेव ने बिना उसकी ओर देखे कहा 'लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि मैं खुश हूँ। मेरा तो जीवन ही बरबाद हो गया और कल से तो मुझे ऐसा लगता है कि जैसे मुझे जहर दे दिया गया हो। जो भी बुरा होना था, वह कल हो गया। आज मेरे ऊपर से तनाव हट गया है। अब मैं काफी सफाई से

उस सबके बारे म बातें कर सकता हूँ। मै आपको अपनी बहन से भी ज्यादा प्यार करता हूँ—अपनी मा से भी ज्यादा। मै अपनी मा और बहन के बगैर जी सकता हू, लेकिन आपके बिना मेरा जीवन अर्थहीन हो जायेगा मैं कुछ भी नही "

हमेशा की तरह उसने यूलिया के इरादो का अन्दाज लगा लिया। वह जानता था कि उसने उसे घर आने के लिए कहा है—इसका मतलब तो यह होता है कि वह कल की बातचीत का सिलसिला आगे बढाना चाहती है और इसीलिए उसे अपने घर लिये जा रही है। लेकिन अपने उस इकार के आगे वह और क्या जोड सकती है ? अब उसने क्या सोचा है ? उसने उसके लट और मुस्कान से—यहा तक कि उसकी बगल स चलते हुए जिस तरह उसके कन्धे और सिर की झुकान बनती थी, उसस अन्दाज लगाया कि वह अब भी उसे प्यार नही करती। तब फिर वह उससे क्या कह सकती है ?

डॉक्टर लरजीबोरिसिच घर पर ही था।

"आइए, फ्योदार अलेक्सिविच, आइए !" उसन लेपतेव के नाम को पारिवारिक नाम मे भूल से मिलाते हुए कहा, "आपसे मिलकर बडी प्रसन्नता हुई।"

डॉक्टर इसके पहले कभी भी उससे इतनी आत्मीयता से नही बोला था। लेपतेव ने नतीजा निकाला कि उसे उसके विवाह प्रस्ताव के बारे मे मालूम है और वह नाराज है। वह डॉक्टर के ड्राइग रूम मे बठा था। यह कमरा ऐसा था, जिसम डॉक्टर ही की तरह का आदमी रह सकता था। इसकी बगल का इससे आकार म दूना एक बडा हॉल था। इसमे किनारे किनारे इस तरह की कुसिया लगी थी, मानो वह कोई नाचघर हो।

लेपतव डॉक्टर मे अपनी बहन के बारे मे बात कर रहा था पर उसका दिमाग इस बात से परेशान था कि यूलिया सरजीविना ने उसे यह बताने के लिए बुलाया है कि उसने अपना खयाल बदल दिया है। लेकिन इससे बुरी थी इस बात की जानकारी। उसका दिमाग सन्देह म फँस

गया था। उसने कल्पना कर ली थी कि बाप बेटी रात बडी देर तक बठ कर इस मामले पर गम्भीरता से विचार करते रहे होंगे। शायद उनमे अब तक यही बहस होती रही होगी कि यूलिया न इतने धनी आदमी के प्रस्ताव को ठुकराकर बेवकूफी की है। यहाँ तक कि वे शब्द लेपतेव के कान म सुनायी पडते थे, जो अभिभावक ऐसे मौको पर आकर अक्सर कहते हैं, "यह सच है कि तुम उसे प्यार नही करती, लेकिन दूसरी चीज़ो के बारे मे भी तुम्ह सोचना चाहिए, जिन्ह करने का तुम्हे मौका मिलेगा।"

डाक्टर मरीज़ो को देखने जाने के लिए उठा, लेपतेव उसी के साथ जानेवाला था, लेकिन यूलिया ने कहा, "कृपया अभी न जाइए।"

उसने हृदय की सारी शक्ति खोकर, किन्तु गहरी पीडा के साथ अपने को समझा लिया था कि एक दयालु और प्रेम करनेवाले ऐसे आदमी को इन्कार करना, जिससे शादी करके वह इस उदास और मनहूस जीवन से बाहर निकल सकती है—और वह भी तब, जब उसकी जवानी बीत रही है और भविष्य की कोई उज्ज्वल आशा भी उसे नही है, केवल पागलपन और बेवकूफी की बात होगी और ईश्वर उसके लिए उस दण्ड अवश्य देगा।

जैसे ही डाक्टर के कदमो की आवाज़ सुनायी पडना बन्द हुई, यूलिया एकाएक लेपतेव की ओर लौट पडी। उसका चेहरा उस समय एकदम पीला पड गया था, जब उसने निश्चयात्मक स्वर म कहना शुरू किया "मैंने आपके प्रस्ताव पर बहुत देर तक सोचा, अलेक्सी फ्योदोरोविच, और मैंन उसे स्वीकार करने का निश्चय कर लिया है।'

उसने कुरसी से उठकर यूलिया सरजीविना का हाथ चूम लिया और यूलिया ने भोंडे ढग से अपने होठो को उसके सिर पर दबा दिया। लेपतेव ने सोचा कि इस कथन मे उसका प्यार, जो मूल चीज है, उसी का अभाव है। जो कुछ भी है वह ऊपरी दिखावा मात्र है। यह सोचकर वह चीख पडना चाहता था और वहाँ स भागकर तुरन्त मास्को के लिए

रवाना हो जाना चाहता था। पर वह सामने खड़ी थी, उससे इतनी सटी हुई कि वासना ने उसे तुरन्त दबा लिया। इसलिए यह सोचकर कि अब वह काफी देर कर चुका है, उसने उसे सीने से भीच लिया। फुसफुसाकर प्रेम की कुछ बातें कहते हुए वह उसके गले को, फिर गालो को और बालो को चूमता रहा।

इन प्यार के स्पर्शों से चौकन्नी होकर वह ऊपर खिड़की के पास चली गयी। दोनों अपने कथनो के लिए क्षमा मागते रहे और घबराहट में अपने ही से कहते रहे, "यह सब क्यो हुआ ?"

"काश, तुम सिर्फ इतना जान सको कि मैं कितनी दुखी हूँ !" वह अपने हाथो को एक दूसरे मे कसकर कहने लगी।

"लेकिन क्या ?" लेपतेव ने उसके पास जाकर उसकी ही तरह हाथो को एक दूसरे मे कसते हुए कहा, 'क्या बात है ?—ईश्वर के लिए मुझसे सच सच कहो मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ बताओ न !"

चेहरे पर कोशिश करके मुस्कराहट लाते हुए उसने कहा, "कुछ नही। मैं वादा करती हू कि मैं तुम्हारी वफादार, श्रद्धावान पत्नी बनूगी। आज शाम को जरूर आना।"

बाद मे जब वह अपनी बहन को ऐतिहासिक उपन्यास पढकर सुनाने लगा तो उसे वह सब याद आया, जो कल हुआ था और यह सोचने मे उसे कष्ट होने लगा कि उसकी भावनाओं का उत्तर बड़े ही मोल तोल के ढग से दिया गया है। वह उसे बिल्कुल प्यार नही करती। इसमे कोई भी सन्देह नही कि उसके धनी होने के कारण ही उसने उसे पसन्द किया है, और इसी एक बात को वह बिल्कुल पसन्द नही करता। सम्भव है एक पवित्र और ईश्वर मे निष्ठा रखनेवाली युवती होने के नाते उसने उसके धनी होने का विचार न किया हो, पर वह उसे प्यार नही करती नही करती, चाहे वह अस्पष्ट और अनिश्चित क्यो न हो, लेकिन निश्चित रूप से किन्ही व्यावसायिक कारणो अथवा मतैक्यो से ही वह उससे शादी करना चाहती है। डाक्टर के घर के मध्यवित्तीय और बनावटी वातावरण के साथ ही स्वय डाक्टर ने उसे दबा दिया होगा। इस समय तो यूलिया नाम ही उसे भौडा लगने लगा। वे विवाह की वदी

पर एक दूसरे के लिए अपरिचित होकर ही जायेंगे। उनमे रत्ती-भर भी भावना नही होगी। ठीक उसी तरह, जैसे शादी किसी अगुआ द्वारा तय कर दी गयी हो। उसके मन को सिर्फ यह सोचकर सन्तोष हो रहा था कि हजारों लोगो की शादिया इसी तरह होती हैं और धीरे धीरे समय बीतने के साथ जब वह उसे अच्छी तरह जान सकेगी, तो शायद वह प्यार करना भी सीख लेगी।

"रोमियो और जूलियट !" उसने कहा और हँसते हुए पुस्तक बन्द कर दी, "मैं रोमियो हूँ ! तुम मुझे बधाई दे सकती हो, आज ही मैंने यूलिया सरजीविना से शादी का प्रस्ताव किया।"

नीना फ्योदोरोव्ना ने सोचा, शायद वह मजाक कर रहा है। लेकिन उसे गम्भीर देखकर वह रोने लगी—इस समाचार ने उसे अव्यवस्थित कर दिया।

"मैं मानती हूँ कि मुझे तुम्हे बधाई देनी चाहिए," उसने कहा, "लेकिन क्या यह सब बहुत जल्दी मे तो नहीं हो रहा है ?"

"नही ! यह सब तो मार्च ही से चल रहा था, सिर्फ तुम्हारी जानकारी मे नही आया। मैं मार्च ही मे तुम्हारे इसी कमरे मे मिलने पर उससे प्यार करने लगा था।"

"मैंने तो सोचा था कि तुम किसी मास्को की लडकी से शादी करोगे," नीना फ्योदोरोव्ना ने तनिक रुककर कहा, "हमारे ही अपने दायरे की कोई लडकी होती यह ज्यादा साधारण होगी। लेकिन खास सवाल तो तुम्हारी प्रसन्नता का है, अलेक्सी। मेरे ग्रिगोरी निकोलोविच ने ही मुझे कभी प्यार नहीं किया था और तुम स्वयं देख सकते हो कि हम लोग कैसे रहे। इसमे कोई सन्देह नही कि तुम्हे कोई भी औरत प्यार कर सकती है। तुम दयालु और चतुर हो। लेकिन यूलिया एक महिला है, वह लडकियो के स्कूल मे पढी है। दयालुता और बुद्धि उसमे अधिक नही है। वह अभी किशोरी है लेकिन तुम अब किशोर नही रहे, न तुम उससे सुन्दर ही हो।"

अन्तिम शब्दो को और भी मुलायम करने के लिए उसने अपने गालो को सहलाया।

"तुम खूबसूरत नही हो," उसने कहा, "लेकिन तुम बहुत अच्छे हो।"

वह बहुत उत्तेजित हो गयी थी। यहाँ तक कि एक धुँधली लाली का आभास उसके गालो पर उभर आया। क्या यह उचित होगा कि वह अल्योशा को अपनी शुभकामनाएँ दे? कुछ भी हो, वह उसकी बडी बहन है और माँ के स्थान की अधिकारिणी है। उसने अपने दुखी भाई को बहलाने का बहुत प्रयत्न किया कि विवाह बहुत धूमधाम से होना चाहिए, जिससे उसका नाम और भी बढे।

अब लेपतेव भावी दूल्हे की तरह तीन चार बार रोज डाक्टर के घर जाने लगा। इस तरह उसे साशा को छुडाने का समय ही नही मिलता था और वह अकेली अपनी माँ को उपन्यास पढकर सुनाया करती थी। यूलिया उसे अपने ही दोनो कमरो मे बैठाती, जो घर की दूसरी छोर पर थे और उसके पिता की बैठक और ऑफिस से काफी दूर पडते थे। लेपतेव इन कमरो को पसन्द करता। उनकी स्याह दीवारें, कोने की पटनी, कीमती खुशबू और चिराग मे जलनेवाले तेल को भी वह बहुत पसन्द करता था। यूलिया के बिस्तर और शृंगारदान पर कवर के कपडे पडे रहते थे। किताबो की आलमारी के किनारो पर भी हरे रंग का कपडा पडा रहता था और फर्श पर इतनी मोटी दरी बिछी थी कि उसके चलने की आवाज मुश्किल से ही सुनी जा सकती थी। वह गम्भीर स्वभाव की है और शान्त तथा एकान्त जीवन पसन्द करती है। वह अब भी किशोरी ही समझी जाती है। घर मे उसका अपना निजी पैसा नही होता। अक्सर बाहर जाते समय ही उसे पता लगता है कि उसके पास एक पैसा भी नही है। उसका पिता उसे कपडा और पुस्तको के लिए बहुत थोडा पैसा देता है, जो कभी भी एक सौ रूबल सालाना से ज्यादा नही होता। अपनी अच्छी प्रैक्टिस के बावजूद वह हमेशा तंगी मे रहता है, हमेशा अपने क्लब मे ताश खेलता है और हमेशा हारता है। उसने किसी पारस्परिक सहायता सोसाइटी की सहायता से मकान खरीद लिये थे, जिन्हे उसने किराये पर उठा रखा था। किरायेदार समय

पर किराया नहीं देते थे। कुछ भी हो उसका खयाल था कि सब उसके लिए काफी लाभप्रद सिद्ध हुआ है। जिस मकान में वह अपनी बेटी के साथ रहता था, वह रेहन पर चढ़ा हुआ था और उससे आय पैसे से उसने एक खाली जमीन लेकर एक बड़ा दोतल्ल का मकान बनवाना शुरू कर दिया था। उसे भी जल्दी ही रेहन करने का उसका इरादा था।

लेपतेव इस समय एक उत्तेजना में जी रहा था, जैसे वह अपने आप में न रहकर दो में बटा-बटा जी रहा हो और बहुत-सी चीजें करता जा रहा था जिनका उसने पहले कभी स्वप्न भी नहीं देखा था। वह डाक्टर के साथ तीन बार क्लब जाता और रात का खाना वहीं खाता। डॉक्टर को उसने मकान बनाने की योजना के लिए रुपया देने को कहा। यहाँ तक कि वह पनोरोव में उसके दूसरे मकान पर मिलने भी गया। पेनारोव ने उसे एक दिन खाने पर बुलाया और लेपतव ने बिना कोई विचार किये उसे स्वीकार कर लिया। वहा उसकी मुलाकात एक लम्बी दुबली-पतली, करीब पतीस वर्ष की औरत से हुई जिसके बाल सफेद हो रहे थे और आँखों की भौंह काली-काली थी। वह रूसी नहीं मालूम होती थी। उसका चेहरा सफेद पाउडर से ढका था। उसने मधुर मुस्कान के साथ उससे इतने झटके के साथ हाथ मिलाया कि उसकी बाँहों का ब्रासलेट झनझना उठा। लेपतव को उसकी हँसी के पीछे उसकी पीड़ा के दर्शन हुए। उसका ख्याल था कि वह उस पीड़ा को अपने ही साथ दूसरों से भी छिपाये रहना चाहती है। उसने दो छोटी बच्चियाँ भी देखी, जिनमें से एक की उम्र पाच और दूसरी की करीब तीन वर्ष की रही होगी, जो उसे सानो की तरह लगी। खाने में जो भी मिला वह सब एकदम सादा और स्वादहीन था लेकिन मेज साने के काँटा सिरके की खूबसूरत बोतलें और बड़ी ही सुन्दर बनावट के मिचदान में चमक रही थी।

खाना शुरू करने के बाद लेपतव को लगा कि यहाँ आकर उसने पूरी मूर्खता की है। औरत काफी सकोच में थी। वह लगातार हँसती और अपने दाँत दिखाती रही और पनारोव पेंस और उसकी उत्पत्ति का वैज्ञानिक विश्लेषण करता रहा।

जो सवाल है उसने अपनी रखैल को सम्बोधित करते हुए फ्रेंच

में कहा, "वह पूरी तौर पर विद्युत व्यापार की तरह का है। हममें से हर एक की खाल में सूक्ष्म ग्रन्थियां हैं, जो बिजली की धाराएँ पैदा करती हैं। अगर आप किसी ऐसे आदमी से मिलते हैं, जिसकी धारा आपके समानान्तर चलती है, तो प्यार अवश्यम्भावी है।"

जब लेपतेव लौटकर घर आया और उसकी बहन ने पूछा कि वह इतनी देर तक कहां रह गया था, तो वह शर्मिन्दा हो उठा और उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

शादी के पहले कुछ हफ्तों तक वह अपनी स्थिति के झूठेपन के प्रति सचेत रहा, लेकिन रोज़-ब-रोज़ उसका प्रेम बढ़ता ही गया। वह सोचने लगा कि यूलिया एक काव्यात्मक और परम सुख की ओर ले जानेवाली नारी है। लेकिन यह सत्य अपनी जगह पर अडिग रहा कि वह उसके प्यार का प्रतिदान नहीं देती और वह अपने को उसके हाथों बेच रही है। कभी-कभी वह भयंकर निराशा में जकड़ जाता और सब-कुछ छोड़ बैठने की स्थिति में पहुँच जाता। अब तो उसकी नींद उड़ गयी थी और वह रात रात भर जागता रहता और लेटा-लेटा सोचा करता था। शादी के बाद मिलने पर वह मास्को की उस महिला से क्या कहेगा जिसके लिए अपने मित्र को पत्र लिखते समय उसने 'व्यक्ति' सम्बोधन का प्रयोग किया है? उसके पिता और भाई उसकी शादी और यूलिया के बारे में क्या सोचेंगे, जिनके साथ उसका स्वयं का रहना मुश्किल हो गया था? उसे डर था कि शादी के बाद पहली बार मिलने पर उसका पिता यूलिया से सख्त व्यवहार कर सकता है। जहां तक उसके भाई फ्योदोर का सम्बन्ध है, उसके बारे में तो कुछ विचित्र घटनाएँ घट रही थीं। वह स्वास्थ्य के महत्त्व दिमाग पर बीमारी के प्रभाव और धर्म के सार-तत्त्व पर उसे लम्बे पत्र लिखता था लेकिन मास्को और व्यवसाय की एक भी बात उसके पत्र में नहीं होती थी। लेपतेव को इन पत्रों से चिढ़ होती थी कि उसके भाई का स्वभाव बदलकर बुरी दिशा में जा रहा है।

सितम्बर मे पीतर और पाल की सामूहिक प्राथना के बाद उनकी शादी हो गयी। उसी दिन दम्पति मास्को के लिए रवाना भी हो गये। जब लपतेव और उसकी पत्नी यूलिया ने, जो काले कपड़ों मे अब भिखारी सी नहीं दिखती थी गाडी के चलते समय नीना फ्योदोरोव्ना से विदाई ली, तो उसका चेहरा कुछ ऐंठ-सा गया, लेकिन आखें सूखी ही रही।

'अगर मैं मर जाऊँ तो मेरी छोटी बच्चियों को सँभाल लेना।"

"ओह, जरूर जरूर मैं आपसे वादा करती हूँ," यूलिया ने उत्तर दिया और उसकी पलकें और होठ कापने लगे।

'मैं तुमसे अक्तूबर मे आकर मिलूगा,' लेपतेव ने भावुकता से विगलित होते हुए कहा, 'तुम जल्दी ही अच्छी हो जाओगी, मेरी प्यारी "

वे एक स्पेशल डिब्बे मे यात्रा कर रहे थे। एकान्त मे होने पर दोनो रुग्ण और दुखी हो उठते थे। वह एक कोने मे अपना हैट पकडे यह बहाना किये बैठी थी, जैसे वह ऊँघ रही हो और लेपतेव अव्यवस्थित कर देनेवाले ढेरो विचारो मे उलझा, उसके सामने की गद्दी पर बैठा था। वह सोच रहा था अपने पिता के बारे मे, उस 'व्यक्ति' के बारे मे और उसे चिन्ता थी कि यूलिया उसके मास्कोवाले मकान को पसन्द करेगी या नहीं। वह अपनी पत्नी को भी देख रहा था, जो उसे प्यार नहीं करती और खिन्न मन से सोच रहा था कि यह सब-क्या हुआ ?

पाँच

ल्येपतेव का परिवार मास्को में कपड़े का थोक व्यापार करता था। मुख्य रूप से किनारी, फीते, बटन और ऐसी ही अन्य चीज़ों का उनका रोजगार था। उनकी बिक्री हर साल बीस लाख तक पहुंच जाती थी। इसमें लाभांश क्या था, इसे बड़े मालिक के अलावा कोई नहीं जानता था। उसके लड़कों और बिक्री करनेवाले लोगों का अन्दाज था कि लाभ करीब तीन लाख रूबल का है। उन लोगों का कहना था कि अगर बूढ़ा इतना मुक्त होकर उधार न बाँटा करे, तो वह एक लाख रूबल और बढ़ सकता है। पिछले दस वर्षों में फर्म ने दस लाख के करीब रद्दी बिल इकट्ठे कर रखे हैं। जब भी यह मामला बड़े बाबू के सामने रखा गया, उसने बड़े ही गूढ़ढंग से कहा, 'युग का मनोवैज्ञानिक नतीजा है।"

मुख्य व्यवसाय शहर में होता था, जिसे मालगोदाम कहते थे। वहाँ तक पहुँचने के लिए एक सूने आँगन को पार करना पड़ता था, जिसमें से एक प्रकार की गंध आती थी और घोड़ों की टापों की-सी पट पट की ध्वनि प्रतिध्वनित होती रहती थी। आगन से लोहे के जंगलोंवाले दरवाज़े में होकर एक पतले कमरे में घुसना पड़ता था, जिसकी दीवारें धब्बों से भरी और सीली थीं और अलकतरे के दागों से अटी पड़ी थीं। इसके बायें एक दूसरा कमरा था, जो कार्यालय कहा जाता था। यह बड़ा और साफ था। इसमें लोहे की एक अँगीठी और दो मेजें पड़ी थीं, लेकिन इसमें भी जेल की तरह की खिड़कियां लगी थीं। यहाँ से एक पतली, पत्थर की सीढ़ी ऊपरी तल्ले पर जाती थी, जो कारबार का मुख्य स्थान था। यह बहुत बड़ा कमरा था, लेकिन इसमें भी धुंधलका छाया रहता था। इसकी छत नीची थी और इस पर किनारियों और फीतों का ढेर लगा रहता था। लोगों के तेज़ी से इधर-उधर आने-जाने के कारण यह कमरा उसी तरह बदसूरत बना हुआ था, जैसे नीचे के कमरे थे। दीवारों के सहारे खत्तियों में गड्डियां, दफ्ती के बक्सों और पैकेटों में सामान सजा रहता था। लाल कपड़े, फीते या

दूसरी चीज़ें अगर बक्सों के छेदों से बाहर दिखायी न पड़ती तो शायद किसी को यह अन्दाज़ लगाना भी मुश्किल हो जाता कि कसी वस्तुए यहाँ बिकती हैं। यह बात विश्वास के बाहर थी कि इन गन्दे डिब्बों म से इतनी सम्पत्ति कमायी जा सकती है और खरीदारो के अतिरिक्त कुल पचास आदमी हर समय काम मे व्यस्त रहते हैं।

मास्को आने के दूसरे दिन दोपहर के बाद जब लेपतव यहा आया, तो नीचे और ऊपर के कमरो मे सामान खोलनवाले मजदूर अपने हथौडा से इतना शोर कर रहे थे कि किसी न उसके आने की आवाज भी नहा सुनी। यहाँ तक कि उस पोस्टमन न भी उसे नही जाना, जो चिट्ठियो का एक बण्डल लेकर इस छोर पर नाक-भौ सिकोड़ता हुआ आया था।

ऊपरी तल्ले पर सबसे पहल उसस उसका भाई फ्योदोर मिला जो शक्ल सूरत मे उससे इतना अधिक मिलता-जुलता था कि दोना जुड़वाँ लगते थे। दोना का यह हमसूरत होना लेपतेव को हमेशा अपनी शक्ल की याद दिलाता था। इस समय इस छोटे कद के साधारण आदमी को देखकर, जिसके गाल हल्के लाल थे, सिर पर बालो की कमी थी और कमर पतली और भद्दी थी, लेपतव न अपने ही से पूछा, 'क्या मैं भी ऐसा ही दिखता हूँ?"

'तुमसे मिलकर मुझे बडी खुशी हुई," फ्योदोर ने अपन भाई को चूमकर उसके हाथो का दबाते हुए कहा "मैं तुम्हारा इन्तजार रोज ही कर रहा था। जब से तुमने अपनी शादी की बात लिखी तभी स मैं बहुत उतावला था। मुझे तुम्हारी कमी बेहद खल रही थी, क्याकि छ महीने से हम एक दिन के लिए भी नही मिले। अच्छा, तो और क्या समाचार हैं? नीना कैसी है? ठीक नही है? बिल्कुल ही ठीक नही?"

"हाँ, बहुत ही खराब हालत है उसकी।"

"यह ईश्वर की इच्छा है!' फ्योदोर ने आह भरत हुए कहा, "अब अपनी पत्नी के बारे मे बताओ। मैं समझता हूँ वह सुन्दर है। मैं पहल से ही उसे प्यार करता हूँ। अब तो वह मेरी छोटी बहन है। उसे दिल से प्यार करने के लिए मैं तुम्हें बढावा दूगा।'

इसी समय लेपतेव ने अपने पिता पयोदोर स्तपोनिच की चौडी भुकी हुई कमर देखी। वह काउण्टर के स्टूल पर बैठा एक खरीदार से बातें कर रहा था।

'पिताजी, यह देखिए अच्छे ईश्वर ने हमारे लिए क्या भेजा है!" पयोदोर ने पुकारकर कहा, "एलेक्सी आ गया है!"

पयोदोर स्तेपोनिच लम्बा और चौडे बदन का आदमी था और अपनी अस्सी वर्ष की आयु और झुर्रियो मे भी स्वस्थ और मजबूत दिखता था। वह अपने चौडे सीने से बहुत ही भारी आवाज निकालकर बोलता था, मानो बन्दूक की नली से आवाज निकल रही हो। उसकी दाढी साफ रहती थी। वह सिफ छँटी हुई हल्की मूछें रखता था और सिगार पीता था। चूकि उसे हमेशा गरमी लगती थी, इसलिए वह साल-भर हर समय लिनन के ढीले जकेट पहनता था। अभी हाल ही मे उसने अपनी आँख से मोतियाबिन्द की दली निकलवायी थी। आँखो की कमजोरी के कारण अब वह व्यापार नही चला सकता था, सिफ खरीदारो से बात करता, मुरब्बे खाता और चाय पिया करता था।

लेपतव ने झुककर अपने पिता का हाथ चूमा, फिर होंठ चूम लिए।

"मेरे प्यारे बच्चे! तुम्हे देखे बहुत दिन हो गये," बूढे ने कहा, 'सचमुच बहुत समय बीत गया। मैं समझता हूँ, तुम चाहते होगे कि मैं तुम्हे तुम्हारी शादी की मुबारकबाद दू। ठीक है, तुम्हें मुबारकबाद देता हू।" उसने अपना सिर ऊपर किया और लेपतेव ने फिर झुककर उसे चूम लिया।

'तुम अपनी युवा पत्नी को अपने साथ लाये हो? बूढे ने पूछा। और उत्तर का इन्तजार किये बिना खरीदार की ओर मुडकर कहने लगा, 'पिताजी, मैंने इनसे शादी कर ली है ठीक है! प्यार पिता की सलाह और आशीर्वाद की कोई जरूरत नही। आजकल के लडके बडे होशियार हो गये हैं। जब मैंने शादी की, मेरी उम्र चालीस से ज्यादा की रही होगी लेकिन फिर भी मैंने घुटने टेककर अपने पिता से सलाह

के लिए निवेदन किया। अब वैसा कोई रहा ही नहीं।"

बूढ़ा अपने पुत्र को देखकर खुश था, लेकिन उसका खयाल था कि उस खुशी का इजहार करना ठीक नहीं है। उसके स्वर का स्तर, उसके बोलने का ढंग और 'युवा पत्नी' के सम्बोधन ने लेतपेव के ऊपर वही हताश करनेवाला असर डाला, जो मालगोदाम आने पर हमेशा उसके ऊपर पड़ता था। यहाँ तक कि हर नन्ही चीज उसे उस दिन की याद दिलाती रही, जब वह बेंत से पीटा जाता था और सजा के तौर पर सिर्फ रोटी और पानी पर रखा जाता था। वह जानता था कि यहाँ बच्चे अब भी पीटे और झोंके जाते हैं, फिर वे ही बच्चे जब बड़े हो जाते हैं, तो वे खुद दूसरों से यही व्यवहार करते हैं।

फयोदोर ने ग्राहक की पीठ पर थपथपाते हुए कहा, 'अल्योशा यहाँ आओ। मैं तुम्हारा परिचय राबोव के ठेकेदार ग्रीगोरी रिमोफिच से करा दूं। यह नवयुवकों, पचास के ऊपरवालों और पिताओं के लिए एक उदाहरण है।"

बिक्रीवाला क्लर्क हँस पड़ा था और वह दुबला, पीले चेहरेवाला ग्राहक भी हँसने लगा था।

काउण्टर पर बैठा बाबू बोला, "यह प्रकृति का अद्भुत नियम है कि जो कुछ अन्दर जाता है वह बाहर जरूर आता है।"

करीब पचास वर्ष की उम्र का लम्बे कदवाला बड़ा बाबू काली दाढ़ी रखता था, उसकी आंख पर चश्मा होता था और कान पर पेंसिल टंगी रहती थी। वह हमेशा उलझी हुई बातें बनाता, भ्रम पैदा करके दूर की कौड़ी लाने की कोशिश करता और बेवकूफी से मुस्कराकर अपनी बात की बारीकी पर जोर डालता। किताबी कथनों की अपनी तरह भाष्य करके वह अर्थ को छिपाये रखने का शौकीन था। वह साधारण शब्दों का भी असामान्य ढंग से इस्तेमाल करता था—उदाहरण के लिए 'अलावा' शब्द को ही लें। स्पष्ट बात कहते समय भी वह अपने दायें हाथ को बढ़ाकर कहता "इसके अलावा '

सबसे विस्मय की बात यह थी कि दूसरे बिक्रीवाले क्लर्क और ग्राहक भी उसे अच्छी तरह समझते थे। उसका नाम पोचातकिन था

ग्रौर वह कशीरा का रहनेवाला था।

"ग्रापने ग्रपने ग्रनुकूल ही प्रेम-चर्या की है," उसने लेपतेव को मुबारकबाद देते हुए कहा, "जैसाकि स्त्री का हृदय 'शामिल' का होता है।"

मालगोदाम का दूसरा महत्त्वपूण व्यक्ति मैंकीचेव था। वह हट्टे-कट्टे बदन का ग्रादमी था। उसकी चिकनी खोपडी के चारो ग्रोर भाले की तरह गुथे हुए बाल ग्रौर चेहरे की बगल मे दाढी थी। उसने लेपतेव के पास जाकर नम्रतापूवक धीरे से कहा, "मुझे यह कहने की इजाज़त दीजिए, हुजूर ईश्वर ने ग्रापके महान ग्रभिभावकों की प्राथना सुन ली। ईश्वर को घन्यवाद है, हुजूर!"

इसके बाद दूसरे क्लक भी बारी बारी से ग्रपने छोटे मालिक को मुबारकबाद देने लगे। सब-के-सब फशन के ग्रनुकूल कपडे पहने हुए थे ग्रौर खुशहाल तथा विनीत दिखायी पडते थे। उनके मुबारकबादी के शब्द बहुत टूटकर धीरे-धीरे सू-सू करके ऐसे निकलते थे, जैसे हवा मे कोडे चलाये जा रहे हो।

थोडी ही देर मे लेतपेव ऊब गया ग्रौर उसे घर जाने की इच्छा होने लगी। लेकिन साथ ही दिखावे के लिए उसे दो घण्टे रुकना पडा इस लिए वह काउण्टर से हटकर मैंकीचेव से पूछने लगा कि गरमियाँ तो उसने ग्रच्छी तरह बितायीं—कोई ग्रन्य समाचार भी है। मैंकीचेव ने इन प्रश्नों का उत्तर ग्राँखें नीची करके ग्रादर के साथ दिया। भूरी कमीज़ पहने एक लडके ने, जिसके बाल छोटे छोटे छँटे थे, उसे बिना प्लेट के एक गिलास मे चाय दी। थोडी देर बाद ही एक लडका चलते समय एक पेटी मे उलझ गया ग्रौर गिरते गिरते बचा। मैंकीचेव क्रोध से मुह बिगाडकर उसकी ग्रोर मुडा ग्रौर चिल्लाया, 'ग्राँख खोलकर चलो! कहाँ जा रहे हो तुम?"

बिक्रीवाले क्लक खुश थे कि उनका छोटा मालिक ब्याह करके घर लौट ग्राया है। वे उसे प्यार से देख रहे थे ग्रौर उनमे से जो भी

उसके पास से निकलता, वह विनीत होकर कोई खुश करनेवाली बात कहता। लेकिन लेपतेव को विश्वास था कि यह सब झूठा दिखावा है और वे सब डर के कारण उसकी चापलूसी कर रहे हैं। पन्द्रह वर्ष पहले की वह घटना उसे याद आ रही थी, जब एक क्लर्क पागल होकर सड़क पर नंगा भाग निकला था और अपने मालिक की खिड़की के पास मुट्ठियाँ हिला हिलाकर गाली बक रहा था। जब वह गरीब आदमी पकड़ा गया तो हर आदमी ने उसे यह याद दिलाने में मज़ा लिया कि वह किस तरह अपने मालिक को शोषक की बजाय शापण कह रहा था।

जिस तरह का व्यवहार लेपतेव के कर्मचारियों के साथ होता था, वह बहुत दिनों से गली की चर्चा का विषय बन चुका था। बूढ़ फ्योदोर की नीति उनके प्रति हुक्मराना ढंग की थी और यह और भी बुरा था। उदाहरण के लिए कोई यह नहीं जानता था कि वह अपने प्रियपात्र पोचातकिन और मकीचेव को क्या देता था। वे तीन हज़ार प्रति वर्ष से ज़्यादा नहीं पाते थे, लेकिन लोगों को यह जानने का मौका दिया जाता था कि उन्हें सात किश्तें बोनस की भी मिलती हैं। इस तरह की किश्तें सभी क्लर्कों को मिलती थीं, लेकिन छिपे तौर से, जिससे हर आदमी गर्व से प्राप्त धन को बढ़ाकर बताता था। नये आदमी को यह पता नहीं रहता था कि उसकी कब तरक्की होगी। कोई क्लर्क यह नहीं जान पाता था कि मालिक उससे नाराज़ है या खुश। खुले तौर पर कुछ भी मना नहीं था इसलिए किसी को भी पता नहीं रहता था कि क्या करने की छूट है। शादी की मनाही नहीं थी, लेकिन इस डर से कि मालिक नाराज़ होकर नौकरी न छुड़ा दे, लोग शादी नहीं करते थे। उन्हें दोस्ती करने और दोस्तों के यहाँ जाने की छूट थी, मगर रात को नौ बजे दरवाज़े बन्द हो जाते थे और हर सुबह इस बात का निश्चय करने के लिए कि उनमें से कोई शराब तो नहीं पीता, मालिक एक एक करके लोगों को पास बुलाता और अपने मुँह पर ज़ोर-ज़ोर से साँस लेने को कहता था।

हर चर्च के त्यौहार के दिन यह अपेक्षा की जाती थी कि वे सुबह की प्रार्थना में शामिल होंगे और चर्च में खड़े होंगे, जिससे उनका

मालिक उन्हें देख सके। उपवास सख्ती के साथ किये जाते थे। मालिक या उसके परिवार के किसी भी व्यक्ति के जन्म दिवस पर या किसी भी अन्य त्यौहार के अवसर पर क्लर्कों से उम्मीद की जाती थी कि वे सम्मिलित रूप से मिलकर कोई केक या एलबम भेंट में देंगे। वे मकान के निचले हिस्से में या पातनितस्किया के अगल बगलवाले हिस्सों में एक एक कमरे में तीन चार एक साथ रहते थे और एक ही बरतन में खाना खाते थे, जबकि सबके लिए प्लेटें थीं। अगर वे खाना खाते हों और उनका कोई मालिक आ जाये तो वे सब उठकर खड़े हो जाते थे।

लेपतेव ने बहुत पहले इस बात को महसूस कर लिया था कि केवल वे क्लर्क ही उन्हें सही माने में अपना मालिक मानते हैं, जिन्हें बूढ़े ने अपनी शिक्षा से मरोड़ दिया है, शेष तो उन्हें दुश्मन मानते थे। अपनी इस छः महीने की अनुपस्थिति में भी उसने कोई खास परिवर्तन नहीं देखा। हां, कुछ नये लोग जरूर आ गये थे, लेकिन कोई अच्छाई नहीं आ पायी थी। उसका भाई फ्योदोर, जो कभी शान्त, विचारवान और बड़ा ही चतुर आदमी था, अब अपने कान पर पेंसिल खोंसे परेशानी से इधर-उधर चलता फिरता और खरीदारों की पीठ थपथपाता हुआ क्लर्कों को दोस्त कहकर पुकारा करता था। वह खुले तौर पर अपना पार्ट अदा कर रहा था और अलेक्सी मुश्किल से उसे पहचान पाता था।

बूढ़ा अकसर गरज उठता था। कुछ काम न होने की हालत में वह खरीदारों को रहन सहन तथा कार्य संचालन पर भाषण पिलाकर खुश होता और अपना उदाहरण उनके सामने रखता। लेपतेव आत्म प्रशंसा की वे गम्भीर और अधिकारपूर्ण बातें दस पन्द्रह बीस वर्षों से सुनता आया है। बूढ़ा अपनी ही श्रद्धा करता है। उसकी बातें सुनकर हर कोई यही सोच सकता है कि उसने अपनी मृत पत्नी और उसके सम्बन्धियों को बड़ा सुख दिया है, अपने बच्चों को उपकृत किया है और अपने मालिक-कर्ताओं को लाभ पहुंचाता रहा है, यहां तक कि सारे मुहल्ले और जान-पहचान के लोगों पर उसने इतने उपकार किये हैं कि उन्हें आन्तरिक कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिए। जो भी उसने किया है, वह सब अच्छा ही किया है। अगर किसी को अपने कारोबार में कोई तकलीफ हुई है

तो केवल इसलिए कि उसने उसकी सलाह मानने से इन्कार किया। बिना उसकी सलाह के सफल होना मुश्किल है। चर्च में भी वह सबसे आगे खड़ा होता है और अगर पादरी पूजा ठीक न करा रहा हो, तो वह उसे भी हटा देता है। उसका विचार है कि वह अपनी जगह से ईश्वर की सेवा कर रहा है, इसलिए ईश्वर की कृपा उस पर है।

लगातार दो बजे तक मालगोदाम में हर आदमी व्यस्त था, सिवाय उस बूढ़े के, जो लगातार दहाड़ता रहता था। लेपतेव बेकार खड़े रहने की बजाय एक दर्जिन से कपड़ा लेकर छाँटता रहा, फिर वोलोगरोद के एक व्यापारी से बात करने लगा और उसे एक बिक्री क्लर्क के पास पहुँचाने में सहायता दी।

वहाँ से रवाना होने के पहले लेपतेव ने सिर्फ फ्योदोर से विदाई ली। 'मैं अपनी बीवी को कल पातीनितस्किया लाऊँगा," उसने कहा, "लेकिन देखो, अगर पिताजी ने कोई भी चोट पहुचानेवाली बात उसको कही, तो मैं तुरन्त वहाँ से चला जाऊँगा।"

"तुम अब भी जहाँ के तहाँ हो!" फ्योदोर ने आह भरी, "शादी कर ली, लेकिन तुम्हारे अन्दर कोई परिवर्तन नहीं आया! तुम्हें बूढ़े से थोड़ा आनन्द भी लेना चाहिए। कल करीब ग्यारह बजे हम लोग तुम्हारा इन्तजार करेंगे। प्रार्थना से सीधे यहीं आ जाना।"

"मैं प्रार्थना में नहीं जाता।"

"कोई बात नहीं। असल बात तो यह है कि तुम्हें ग्यारह बजे आने में देर नहीं करनी चाहिए जिसमें प्रार्थना और दोपहर के खाने पर हम लोग साथ रह सकें। मेरा प्यार कहना मेरी प्यारी भौजाई से और कहना कि मैंने उसके हाथ चूमे हैं। मैं जानता हूँ कि मैं उसे पसन्द करूँगा," फ्योदोर ने पूरी सच्चाई से कहा, 'मेरे प्यारे भाई, मैं तुमसे ईर्ष्या करता हूँ।" वह नीचे जाते-जाते अलेक्सी से कहता रहा।

लेपतेव निकोलस्काया स्ट्रीट से गुजरते हुए फ्योदोर के इस परिवर्तन पर विस्मय करता रहा और अपने ही से पूछता रहा कि वह इस तरह अजीब ढंग से घुटन में तड़प क्यों रहा है, मानो वह एकदम नंगा हो। कितने अजीब ढंग से वह बोल रहा था—शेड्रिन के जूदा की तरह—

भाई, मेरे प्यारे भाई, ईश्वर कृपालु है, ईश्वर की प्रार्थना करो।"

दूसरे दिन इतवार को ११ बजे लेपतव एक हल्की गाड़ी में निकोलस्काया स्ट्रीट पर चला जा रहा था। वह भेंट के इस कार्यक्रम के प्रति उत्साहित नहीं था, क्योंकि वह जानता था कि उसका पिता फ्योदोर स्तपानिच कुछ भी कर सकता है। दो रातों के बाद यूलिया सरजीविना ने अपनी शादी को एक गलती और विपत्ति मान लिया था। अगर उसे मास्को के अलावा किसी दूसरे शहर में रहना पड़ता, तो उसके लिए इसे सहन करना भी मुश्किल हो जाता, लेकिन मास्को ने उसे आकर्षित कर लिया था। उसे यहाँ की सड़कें, घर और चर्च बहुत अच्छे लगते थे। अगर उसे मज़बूत घोड़ों द्वारा खींची जानेवाली इन गाड़ियों में सुबह से रात तक घूमने को और पतझड़ की ठण्डी हवा में साँस लेने को मिल जाये, तो वह कभी अपने को इतनी दुखी महसूस न करे।

कोचवान ने एक नये सफ़ेद दोतल्ले मकान की बगल में अपने घोड़े की लगाम खींची और दाहिनी ओर एक आँगन में मुड़ गया। साफ़ मालूम होता था कि उनके आने का यहाँ इन्तज़ार है, क्योंकि दो पुलिस के आदमी और नये ऊँचे जूते और दस्ताने पहने दरबान दरवाज़े पर और बाहर तैनात मिले। आँगन से दरवाज़े तक सफ़ेद चूना छिड़का हुआ था। दरबान ने अपनी टोपी उतार दी और पुलिस के आदमियों ने उन्हें सलाम किया। फ्योदोर बहुत गम्भीर चेहरा बनाये दरवाज़े पर ही उनसे मिला।

'मेरी नन्ही बहन, तुमसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई," उसने यूलिया के हाथ चूमते हुए कहा, 'हमारे घर में तुम्हारा स्वागत है।"

वह सीढ़ियों पर और लोगों से भरे बरामदे से होकर यूलिया का पथ प्रदर्शन करता हुआ चला गया। बड़े कमरे का रास्ता भी लोगों से भरा था और वहाँ से धूप जलने की गन्ध आ रही थी।

"अब मैं तुम्हारा परिचय पिताजी से कराऊँगा," [फ्योदोर ने उस गम्भीर शान्ति में फुसफुसाकर कहा, "वह एक श्रद्धेय वृद्ध व्यक्ति हैं—

परिवार के रक्षक।"

बड़े कमरे में पूजा के लिए तैयार मेज की बगल में पयादार स्तपा निच पादरी की टोपी लगाये पादरी की जगह खड़ा था। बूढ़े ने बिना कुछ बोले यूलिया की ओर अपना हाथ बढ़ाया। हर आदमी खामोश था। यूलिया घबराहट के कारण परेशान हो गयी।

पादरी और उसके सहायक ने अपना पवित्र चोगा पहन लिया। धूपदानी अन्दर लायी गयी, जिसमें से चिनगियाँ छिटक रही थी और धूप की खुशबू उड़ रही थी। मोमबत्तियाँ जला दी गयीं। क्लर्क अपने अँगूठों के बल आकर दीवार की बगल में दो कतारों में खड़े हो गये। चारों ओर गहरी खामोशी थी, कहीं से खाँसने की भी आवाज नहीं आती थी।

बड़ी गम्भीरता से पूजा हुई, कुछ भी छूटने नहीं पाया। दो भजन गाये गये, एक पवित्र माता मरियम और दूसरा यीशु मसीह के लिए। भजनीक लम्बे खिंचाव के साथ मात्राओं को देखकर गाते थे। लेपतेव अपनी बीवी की घबराहट देख रहा था। बाजे के लहराकर बजने और 'ईश्वर हम पर दया करो' प्रार्थना के गाये जाने के समय हर ध्वनि पर वह गहरे तनाव के साथ उम्मीद करता था कि बूढ़ा एकाएक घूमकर कहेगा, "तुम्हें इतना भी नहीं मालूम था कि क्रास का निशान कैसे बनाया जाता है?" इतने लोगों की उपस्थिति, सारा उत्सव, पादरी और बाजे वाले कुछ भी उसे पसन्द नहीं थे। ये सब बहुत ही उबाऊ और पुराने ढंग की बातें थीं। लेकिन जब उसने देखा कि यूलिया ने बूढ़े के साथ अपना सिर बाइबिल में झुका लिया है और कई बार घुटनों के बल झुक रही है, तो उसे लगा कि उसे यह सब अच्छा लग रहा है और वह कुछ आश्वस्त हो उठा।

प्रार्थना के अन्त में जब 'दीर्घजीवन' गाया जा रहा था, तो पादरी ने अलेक्सी और उसके पिता को चूमने के लिए क्रास दिया, लेकिन जब यूलिया सरजीविना आगे बढ़ी, तो उसने क्रास को अपने हाथ से ढँक लिया और इशारा किया कि वह कुछ कहना चाहता है। किसी ने बाजे को रुकने के लिए इशारा किया।

पादरी ने कहना शुरू किया, "मसीहा समुअल ईश्वर के आदेश

पर आया था। शहर के बुजुग उसके आते ही यह कहते हुए काप उठे थे, 'तुम शाति के लिए आये हो ?' और मसीहा ने कहा, 'मैं शान्तिपूर्वक त्याग के निमित्त आया हूँ। अपने को पवित्र कर लो और मेरे साथ त्याग करने के लिए आओ।' ईश्वर की दासी यूलिया, तुम भी इस घर मे शान्ति के लिए पधारो!"

यूलिया का चेहरा भावनाओ के आवेश मे आरक्त हो गया। जब उसने पाठ समाप्त कर दिया, तो पादरी ने उसे क्रास चूमने के लिए दिया और एकदम बदली हुई आवाज मे कहा, "यह ठीक समय था कि जब फ्योदोर फ्योदोरिच की शादी हुई। यह समय एकदम उचित है।"

सामूहिक गान फिर शुरु हो गया। हॉल मे फिर से जीवन और स्वर फूट पडा। बूढे की आखों मे आवेग के कारण आँसू छलछला आये। उसने तीन बार यूलिया का हाथ चूमा और उसके चेहरे पर क्रास का निशान बनाते हुए कहा, "यह तुम्हारा घर है। मैं बूढा आदमी हू, मुझे कुछ भी नही चाहिए।"

क्लक लोग शुभकामनाएँ देने आये, लेकिन उनकी आवाजें गाने के बीच डूब गयी। यूलिया बूढे की बगल मे बैठी रही और बूढा उसे बताता रहा कि अलग रहना ठीक नही है। सबको मिल-जुलकर एक ही घर मे रहना चाहिए क्योकि अलगाव बिलगाव से हमेशा बरबादी आती है।

"मैंने रुपया कमाया और मेरे बच्चे उसे खच करते हैं," उसने कहा, "अब तुम्हे इस घर मे रहकर मेरी सहायता करनी चाहिए। मैं बूढा हूँ। यह मेरे आराम करने का समय है।"

फ्योदोर उसके पति से बहुत मिलता जुलता था, पर उससे ज्यादा घबराया घबराया और सकोच से भरा हुआ वह उसके चारो ओर घूमता रहा और बार-बार उसके हाथो को चूमता रहा।

"हम लोग बहुत साधारण लोग हैं, मेरी नन्ही बहन," उसने कहा और उसके चेहरे पर गहरी लाली उभर आयी, "हम लोग सादगी के साथ सादे रूसी लोगो की तरह रहते हैं—ठीक उसी तरह, जस अच्छे ईसाइयो को रहना चाहिए।"

घर लौटते समय लेपतव एकदम स्वच्छन्द था, क्योंकि वहाँ सब-कुछ इतनी अच्छी तरह बीता कि उसका भय आधारहीन सिद्ध हो गया था। उसने अपनी पत्नी से कहा "तुम्हें आश्चर्य हुआ होगा कि मेरे पिता-जैसे लम्बे चौड़े और शक्तिशाली आदमी के मेरे और फ्योदोर-जैसे पिद्दी लड़के हैं फिर भी इसे समझना बहुत मामूली बात है। मेरे पिता ने पैंतालीस वर्ष की अवस्था में शादी की थी। तब मेरी माँ मात्र सत्रह वर्ष की थी। वह इतने भयग्रस्त हो गयी थी। नीना के पैदा होने तक वह अपेक्षाकृत स्वस्थ थी। इसी कारण वह हम लोगों से हमेशा अधिक स्वस्थ और मजबूत रही। फ्योदोर और हम तब पैदा हुए, जब वह लगातार भय के कारण टूट चुकी थी। मुझे याद है कि पिताजी ने किस तरह मुझे पहले-पहल पढ़ाना शुरू किया था, यों कहें पीटना शुरू किया, जबकि मैं मुश्किल से पाँच वर्ष का ही था। वह मुझे बेंत से मारते थे, मेरे कान खींचते और मेरा सिर लड़ा देते थे। सुबह उठते ही मेरे दिमाग में सबसे पहले यही आता कि आज पिताजी मुझे पीटेंगे या नहीं ? फ्योदोर और मुझमें से कोई भी न तो इधर-उधर दौड़-भाग सकता था न खेल पाता था। हमें सुबह की प्रार्थना में नियमित रूप से जाना पड़ता था और साधुओं और पादरियों के हाथ चूमने पड़ते थे और घर पर धर्म-वाक्य पढ़ने पड़ते थे। तुम धार्मिक वृत्ति की हो, इसलिए इस सबको पसन्द करती हो, लेकिन मुझे तो धर्म से डर लगता है और जब भी मैं किसी चर्च की बगल से गुजरता हूँ मुझे मेरा बचपन याद आ जाता है और मैं भयग्रस्त हो जाता हूँ। आठ वर्ष की अवस्था में मैं मालगोदाम में एक साधारण बेकार बच्चे की तरह काम करने के लिए लाया गया जो मेरे लिए बहुत बुरा सिद्ध हुआ क्योंकि मैं प्रायः रोज ही पीटा जाता था। बाद को जब मैं स्कूल भेजा गया, तो दोपहर का खाने के समय तक मुझे पाठ पढ़ने पड़ते थे और बाकी समय मालगोदाम में बिताना पड़ता था। यह तब तक चलता रहा जब तक कि मैं बाईस वर्ष का नहीं हो गया और यूनिवर्सिटी में दाखिल नहीं हुआ। यहीं मेरी यार्त्सेव से मुलाकात हुई और उसने मुझे समझाया कि मुझे घर छोड़कर अलग रहना चाहिए। यार्त्सेव ने मेरे साथ अनेक भलाइयाँ की,"

लेपतेव ने हँसते हुए कहा, 'आओ, चलकर उससे भी मिल आयें। वह मेरी जान पहचान के लोगों मे सबसे अच्छा आदमी है। वह हमसे मिलकर बहुत खुश होगा।"

छह

नवम्बर की एक शाम को एतोन रुबिन्स्तीन एक सगीत सम्मेलन कर रहे थे। बडा कमरा भीड से बेहद भरा हुआ बद बद सा था। लेपतेव पीछे खडा था और उसकी पत्नी और कोस्त्या कोचोवाइ बहुत आगे दूसरी या तीसरी पक्ति मे थे। बीच का अवकाश शुरू ही हुआ था कि लेपतेव ने एकाएक 'व्यक्ति'—पोलीना निकोलेवना राजूदिना को देखा। शादी के बाद से ही वह उससे मिलने की सम्भावना से डर रहा था। अब जब उसकी सीधी और साफ दृष्टि उससे मिली, तो उसे याद आया कि उसने उसे एक नन्हा सा दोस्ताने का पत्र भी सफाई देने के लिए नही लिखा है। वह मारे शम के लाल पड गया। उसने लेपतेव से दृढता और कडाई से हाथ मिलाया और पूछा 'क्या तुमने यार्त्सेव को देखा है?"

जब तक कि लेपतेव उत्तर दे, वह लम्बे लम्बे डग रखती हुई जल्दी से आगे निकल गयी, जैसे कोई पीछे से उस ठेल रहा हो।

वह बहुत ही दुबली और पीली हो उठी थी। उसकी नाक लम्बी थी और चेहरे पर थकान का ऐसा भाव था कि लगता था वह प्रयत्न करके आँखें खोल पा रही है और अपने पैरो पर खडी है। उसकी आखें सुन्दर

श्रीर काली थी, जिनमें से उसके प्रतिभावान और दयालु होने का भाव झलकता रहता था, लेकिन उसका चलना फिरना कुछ अजीब-सा टेढ़ा और सहसा हुआ करता था। उससे बात करना भी मुश्किल था, क्योंकि वह एक अयोग्य श्रोता की तरह थी और शांतिपूर्वक बोल भी नहीं पाती थी। उसे प्यार करना भी बहुत मुश्किल था। वह अपने हाथों से अपना चेहरा ढँककर बहुत देर तक हँस सकती थी, सिर्फ यह व्यक्त करने के लिए कि प्यार ही उसके जीवन में मुख्य वस्तु नहीं है और चूम जाने के पहले सत्रह वर्ष की लड़की की तरह वह प्यार करनेवालों से सभी मोमबत्तियाँ बुझाकर अँधेरा करने के लिए कह सकती थी, यद्यपि वह तीस वर्ष की हो चुकी थी। उसकी शादी एक स्कूल मास्टर से हुई थी, लेकिन वह कई वर्षों से उससे अलग रह रही थी। वह संगीत की शिक्षा देकर और सामूहिक वाद्यवृन्दों में हिस्सा लेकर अपनी जीविका कमा लेती थी।

जब नवाँ राग बज रहा था, तो फिर वह लपतव के पास से अनजान-सी बनी गुजर गयी, लेकिन पिछली कतार के पीछे से भीड़ के कारण उसे रास्ता नहीं मिला। लेपतेव ने देखा कि उसने वही मखमली ब्लाउज पहन रखा है, जो वह पिछले दो सालों से संगीत सम्मेलनों में अक्सर पहना करती है। उसने एक नया दस्ताना भी पहन रखा है और उसके हाथ का पंखा भी नया है पर है बहुत ही सस्ते किस्म का। उसे अच्छे कपड़े पहनने का शौक है, लेकिन उपहारों का अभाव रहता है और कपड़ों के लिए पर्याप्त पैसे नहीं मिलते। नतीजा यह होता है कि वह बड़ी लापरवाही से कपड़े पहनती है। अगर कोई उसे पढ़ाने जाते समय जल्दी में लम्बे और ढीले कदम बढ़ाते हुए, जाते देखे तो उसे गिरजे के अरदली होने का सन्देह हो सकता है।

'तुम्हें आज शाम मेरे साथ बितानी होगी," पोलीना निकोलेवना ने लेपतेव के साथ आकर उसे कड़ी दृष्टि से देखते हुए कहा, 'हम यहाँ से चलकर साथ चाय पियेंगे। तुम मेरी बात सुन रहे हो ? मैं इस बात को जोर देकर कह रही हूँ। तुम्हारे ऊपर मेरे बहुत से एहसान हैं और तुम्हें

कोई नैतिक अधिकार नही है कि तुम इस नन्ही सी बात के लिए इन्कार करो ।"

"बहुत अच्छा ।" लेपतेव ने स्वीकार किया ।

सगीत के बाद चारो ओर से पुकार होने लगी । श्रोता किसी भी तरह कमरे से बाहर जाने की जल्दी मे नही थे । लेकिन लेपतेव अपनी पत्नी से बिना कुछ कह बाहर नही जा सकता था । इसलिए वह दरवाजे पर खडा इन्तजार करता रहा ।

"एक प्याला चाय के बिना मेरे प्राण निकले जा रहे हैं," राजूदिना शिकायत के स्वर मे बोली, "मेरी आत्मा गल रही है ।"

"क्या यहा चाय मिल सकती है ?" लेपतेव ने कहा, "चलो, किसी रेस्तरॉं मे चलें ।"

"मैं इस तरह पैसा बरबाद नही कर सकती । मैं कोई धनी मानी व्यवसायी नही हूँ ।"

लेपतव ने उसे अपने हाथो का सहारा दिया, पर उसने इन्कार कर दिया—वही पुरानी बात दुहराते हुए कि मैं स्त्री वग की नही हूँ जो किसी पुरुष का सहारा लेकर खडी होऊँ ।

कुछ भी बोलते हुए वह लगातार भीड की ओर देखा करती थी और अक्सर जान पहचान के लोगो से अभिवादन का आदान प्रदान भी किया करती थी । इनम से अधिक गूर्यरियर कोर्स के विद्यार्थी थे और उसके अपने बहुत से चेले थे । उनसे वह झटके और तेजी के साथ हाथ भी मिलाती रहती थी । बात करते करते वह अचानक कापने लगी, जैसे उसे बुखार आ गया हो ।

"तुमने किससे शादी की है ?" अन्त मे उसने भुनभुनाकर उसे डराते हुए कहा, "बेवकूफ, तुम्हारी निगाह किधर है ? उस खोखले और बेवकूफ प्राणी मे तुम्हे क्या दिखता है ? मैंने तुम्हारे मन और बुद्धि के लिए प्यार किया था, लेकिन वह चीनी गुडिया तो तुम्हारी सम्पत्ति को प्यार करती है ।"

"कृपा कर यह सब न कहो, पोलीना" उसने प्राथना की, "मेरे विवाह के बारे मे तुम जो भी कह सकती हो, वह मैंने बार बार कहा है ।

कृपया मुझे बेकार की तकलीफ न दो।"

यूलिया सरजीविना काले वस्त्रों में रत्नजटित पिन, जो उसके ससुर ने प्रार्थना के बाद उसके पास भेजा था, लगाये दिखायी पड़ी। उसके पीछे कोस्त्या, दो डाक्टर दोस्त, सरकारी अफसर और किश नाम का एक स्वस्थ युवक था, जो विद्यार्थियों की वरदी पहने था।

लेपतेव ने अपनी पत्नी से कहा, "कोस्त्या तुम्हें घर ले जायगा। मैं कुछ देर के बाद आऊँगा।'

यूलिया ने सिर हिलाया और आगे बढ़ गयी। घबराहट से काँपती हुई पोलीना ऊव, घृणा और दुख से देखती हुई उसके पीछे पीछे चलती रही।

लेपतेव उसके घर नहीं जाना चाहता था, क्योंकि उसका खयाल था कि वहाँ भद्दे दृश्य पैदा होंगे और साथ ही रोहाराहट होगी और कड़ी बातें सुननी पड़ेंगी। इसलिए उसने घर की बजाय किसी रेस्तराँ में चलने का प्रस्ताव किया।

उसने सख्ती से कहा, "नहीं, नहीं, हम लोग घर ही चलेंगे। रेस्तराँ में चलने की बात भी मत करो।"

वह रेस्तराओं को पसन्द नहीं करती, क्योंकि उसके विचार से वहाँ की हवा पुरुषों की साँस और तम्बाकू के धुएँ से जहरीली हो उठती है। वह हर उस आदमी के प्रति अजीब ढंग से गलत धारणा रखती है, जिन्हें वह नहीं जानती। उन्हें वह बलात्कारी समझती है, जो जरा सा बढ़ावा पाने पर उस पर हमला बोल सकते हैं। सबसे बढ़कर तो यह बात थी कि रेस्तराओं के संगीत के कारण उसके सिर में दर्द होने लगता था।

नोवेल्टी क्लब से आगे बढ़कर उन्होंने एक घोड़ागाड़ी कर ली। लेपतेव गाड़ी में चलते हुए लगातार तब तक उसी के बारे में सोचता रहा जब तक कि वह ओस्तोजेंका पहुंचकर साबीलस्की स्ट्रीट पर मुड़ नहीं गया। यहीं वह रहती थी। वह ठीक कहती थी कि लेपतेव पर उसके बहुत से एहसान थे। वह अपने दोस्त यार्त्सेव के घर पर उससे मिला था। उसे वह संगीत के सिद्धान्त पढ़ाती थी। लेपतेव के प्रति उसका प्यार सच्चा था और उसमें कोई स्वार्थ नहीं था। यहाँ तक कि

जब वह उसके साथ रहने लगी, तब भी उसे पहले की तरह इतनी मेहनत से पढ़ाती रही कि वह थककर चूर हो जाती थी। इसी के कारण उसने संगीत समझना और उससे प्यार करना सीखा था।

'एक प्याला चाय पर मेरा राज्य निछावर है।" उसने गहरी आवाज़ में कहते हुए अपना मुंह गुलूबन्द से ढँक लिया कि कहीं उसे ज़ुकाम न हो जाय, "आज मैंने पाँच जगह पढ़ाया है। भाड़ में जायें सब—ऐसे बेवकूफ़ शिष्य, ऐसी औंधी खोपड़ीवाले कि मैं क्रोध से पागल हो गयी। मैं समझ नहीं पाती कि यह गुलामी कब खत्म होगी? तीन सौ रूबल बचाते ही मैं सब-कुछ छोड़ दूंगी और क्रीमिया चली जाऊँगी। मैं समुद्र के किनारे पर लेटकर साँस से आक्सीजन लूंगी। उफ़, समुद्र मुझे कितना अच्छा लगता है।"

"तुम कहीं भी नहीं जाओगी," लेपतेव ने कहा, "पहले तो तुम कुछ बचा ही नहीं सकोगी। दूसरे, तुम पैसे की शिकायत करोगी। मुझे क्षमा करो, लेकिन मैं फिर कहूँगा कि एक एक पैसा करके तीन सौ रूबल ऐसे लोगों से, जो सिर्फ अपनी घुटन कम करने के लिए तुमसे संगीत की शिक्षा लेते हैं, इकट्ठा करने से कम अपमानजनक तो यह है कि तुम इतना धन अपने दोस्तों से उधार ले लो।'

'मेरा कोई दोस्त नहीं है" उसने क्रोध में कहा, "और मेहरबानी करके बेवकूफ़ी की बातें मत करो। मैं कमकर वर्ग की हूँ और ऐसे वर्ग के पास एक ऐसी चीज़ है, जो भ्रष्टाचार से मुक्त है। उन्हें अधिकार है कि वे सड़े हुए व्यापारियों से कर्ज न मांगें, उन्हें अधिकार है कि वे उनसे घृणा करें। नहीं जनाब, आप मुझे खरीद नहीं सकते, मैं यूलिया नहीं हूँ।"

लेपतेव ने गाड़ीवाले का किराया नहीं दिया, सिर्फ इसलिए कि वह जानता है कि इसके कारण शब्दों की बौछार फिर शुरू हो जायेगी, जिसे वह पहले भी कई बार सुन चुका है। उसने उसे किराया देने दिया।

एक फ्लैट की मालकिन से पोलीना ने एक सजा सजाया कमरा और

छज्जा किराये पर लिया था। उसका बड़ा बेकार पियानो बोलशाया निकित्सकाया स्ट्रीट पर मार्तोव के घर पड़ा था, जहाँ वह राज अभ्यास के लिए जाया करती थी। उसका कमरा ऐसी कुरसियों से सजा था, जिनके कवर हटाये जा सकते थे। सफेद रंग के हल्के पलंगपोश से ढँका हुआ पलंग और पौधे लगे गमले मकान मालकिन के थे। दीवारों पर छोटे टँगी रहती थीं। कमरे में कोई भी वस्तु ऐसी नहीं थी, जिससे यह मालूम हो सके कि उसमें कोई औरत रहती है और वह पहले छात्रा भी रह चुकी है। कोई शृंगारदान, कोई पुस्तक या लिखने की छोटी मेज भी वहाँ नहीं थी। यह स्पष्ट था कि वह घर लौटते ही बिस्तर में घुस जाती है और सुबह उठने के थोड़ी ही देर बाद कमरा छोड़ देती है।

खानसामा सेमोवार ले आया। पोलीना निकोलेवना ने उसी तरह काँपते हुए चाय बनायी, क्योंकि कमरे में बहुत ठण्ड थी। साथ ही वह एक गायक की आलोचना करने लगी। उसकी पलकें थकान के कारण झुक झुक जाती थीं। वह एक के बाद एक और चाय का गिलास पीती चली गयी।

"हाँ, तो तुमने शादी कर ली," उसने कहा, "लेकिन चिन्ता न करो। मैं तुम्हें अपने दिल से नोच फेंकूगी। लेकिन यह देखकर मेरे हृदय को गहरी पीड़ा पहुँचती है कि तुम भी सारे पुरुषों की तरह ही बुरे हो क्योंकि तुम भी स्त्री के मन की अपेक्षा उसकी देह, सुन्दरता और जवानी को ज्यादा पसन्द करते हो। जवानी ' उसने अनुनासिक स्वर में दुहराया और हँसने लगी, "जवानी! तुम कौमार्य चाहते हो कौमार्य! यही बात है कौमार्य!" वह ठहाका मारकर हँसते हँसते अपनी कुरसी के पिठास से टिक गयी "कौमार्य! "

जब उसने हँसना बन्द किया तो उसकी आँखें आँसुओं से भरी थीं। कम से कम तुम प्रसन्न तो हो?"

"नहीं।'

"क्या वह तुम्हें प्यार करती है?'

'नहीं।"

बहुत दुखी और बेचैन होकर लेपतेव खडा हो गया और फर्श पर चक्कर काटने लगा।

'नही," उसने दुहराया, "सच तो यह है पोलीना, कि मैं बहुत दुखी हूँ। लेकिन मैं क्या करू ? मैंने बहुत भद्दी गलती की है और अब कोई चारा नही रह गया है। मुझे अब इसके बारे मे फिलसफियाना रवया अपनाना पडेगा। उसने भी बिना प्यार के शादी कर ली—बेवकूफी के कारण, या शायद हो, धन की लोलुपता के कारण, लेकिन मात्र यही कारण नही था और अब वह पूरी तौर पर गलती समझ गयी है और दुखी है। मुझे अब यह साफ दिखने लगा है। दिन मे अकेले मेरे साथ पाच मिनट भी रहने मे डरती है, इसलिए वह आनन्द देनेवालो का साथ खोजता रहती है। मेरे साथ वह डरी डरी और शरमायी रहती है।"

'लेकिन तुम्हारा धन लेने मे उसे शर्म नही आती ?'

'यह बेवकूफी है, पोलीना," लेपतेव ने कहा, "वह मुझसे पैसे लेती है, क्याकि उसके पास पैसा होना या न होना बराबर है। वह एक अच्छी और साफ दिमाग की औरत है। उसने सिर्फ अपने बाप से छुटकारा पाने के लिए मुझसे शादी की।'

'क्या तुम्हे विश्वास है कि अगर तुम धनी न होते, तो भी वह तुमसे शादी कर लेती ?' पोलीना ने पूछा।

लेपतेव ने खिन्न होकर कहा, 'मैं निश्चित रूप से कुछ भी नही कह सकता। मेरी समझ मे कुछ भी नही आता। ईश्वर के लिए इस विषय को छोड दो, पोलीना।"

"क्या तुम भी उसे प्यार करते हो ?"

"पागलपन की सीमा तक।"

बहुत देर तक खामोशी छायी रही। उसने चाय का चौथा गिलास पिया, जबकि लेपतेव अपनी पत्नी के बारे मे सोचता रहा। अब शायद डाक्टर के साथ उसके क्लब मे दोपहर का खाना खाने की बात उसे याद आ रही थी।

'लेकिन क्या बिना कारण जाने भी प्यार किया जा सकता है ?" वह अपना कधा हिलाते हुए बोली, "यह हैवानी वासना के अलावा कुछ

भी नहीं है। तुम प्रेम मे दीवाने हो गये थे। देह की सुदरता ने तुम्हे कामोन्मत्त कर दिया था—उस कुमारी की देह ने मुझसे दूर हट जाओ तुम गन्दे हो जाओ उसी के पास !"

उसने दरवाजे की तरफ इशारा किया और अपना हैट लेकर उसकी ओर फेंका। उसने चुपचाप अपना कोट पहना और बाहर की ओर चल पडा लेकिन वह पीछे से दौडकर उसके कधो मे चिपटकर इस तरह रोने लगी, जैसे उसे दौरा पड गया हो।

उसन उसकी पकड ढीली करने की बेकार कोशिश करते हुए कहा, "पोलीना, कृपा करके यह सब न करो। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ चुप हो जाओ !"

उसने अपनी आँखें बन्द कर ली, फक पड गयी और उसकी नाक से मुर्दे की तरह की आवाज निकलने लगी। वह बेहोश हो गयी थी। लेपतेव ने उसे धीरे से उठाया, बिस्तर पर लिटा दिया और करीब दस मिनट तक बैठा रहा जब तक कि वह सचेत नहीं हो गयी। उसके हाथ ठण्डे थे और नाडी बहुत धीमी और रुक-रुककर चल रही थी।

'चलो जाओ !" उसने आँख खोलते हुए कहा, 'चले जाओ, नहीं तो मैं फिर चिल्लाने लगूगी। मुझे अपने को वश मे करना ही पडेगा।

वह उसे छोडकर डाक्टर के क्लब म, जहाँ लोग उसका इतजार कर रहे थे, जाने की बजाय, सीधे घर चला गया।

सारे रास्ते मे बडी कटुता के साथ वह अपने से यह प्रश्न पूछता रहा कि उसने उस औरत से शादी क्यो नहीं की, जो सचमुच उसे प्यार करती है और कभी उसकी दोस्त और पत्नी भी रह चुकी है। अकेली वही एक व्यक्ति रही है, जो सचमुच उसकी आत्मीय थी। इसके अलावा भी क्या इस चतुर, अभिमानी और सख्त काम करनेवाली औरत को प्रसन्नता, शान्तिपूर्ण जीवन और एक गहस्थी प्रदान करना एक अच्छी और उचित बात न होगी ? वह होता कौन है सौन्दर्य और जवानी की खुशियो की माग करनेवाला जो उसकी पहुच के बाहर है ? लेकिन ये उसे सजा की तरह या धोखेधडी मे मिल गयी हैं और उसे दिमाग की इस घुटी हुई और उदास हालत मे तीन महीने से रखे हुए हैं। उसकी

सुहागरात बीते बहुत दिन हो चुके हैं और यह बात कितनी बेकार मालूम होती है कि वह अब तक नहीं जान पाया कि उसकी बीवी किस तरह की स्त्री है। वह पाँच पाँच पन्नो की चिट्ठियाँ अपनी स्कूल की साथियों और पिता को लिखती है। इसके लिए उसके पास समय भी बहुत होता है लेकिन उससे वह सिर्फ मौसम की बात करती है, या कहती है कि 'अब खाने का समय हो गया', 'अब रस लेने का समय हो गया'। सोने जाने के पहले जब वह उसे प्रार्थना करते, नन्हे क्रास और प्रतिमाओं को चूमते देखता है तो वह घृणा से यह सोचे बगैर नही रह पाता कि वह किसके लिए प्रार्थना कर रही है। विचारो में वह यह कहते हुए उसका और अपना अपमान करता है कि उसके साथ सोकर वह जिस चीज़ को अपनी बाँहों में लेता है, वह खरीदी हुई है, उसके लिए मूल्य चुकाया गया है, लेकिन फिर उसे यह सोचना बहुत भयंकर लगता है। अगर वह स्वस्थ, बहादुर और पतित स्त्री होती, तो बात दूसरी थी, लेकिन वह कितनी श्रद्धावान, कमज़ोर और कम उम्र की है और उसकी आँखें कितनी मासूम हैं! जब तक वह दुल्हन थी, तब तक उसे उसके ऊपर दया आती थी, लेकिन अब उसे लगता है कि परम्परागत विचारों के विश्वास दीवार की तरह सच्चाइयों को छिपा रहे हैं। उसका जीवन पहले से ही दुख का मारा हुआ है। जब उसकी बीवी नाट्य प्रदर्शनों में उसकी बगल में बैठती है और आह भरती है या जी भरकर हँसती है, तो उसे यह सोचकर गहरी चोट लगती है कि वह अपने आनन्द में बिना उसे सम्मिलित किये भी कितनी खुश हो लेती है और ध्यान देने लायक बात तो यह थी कि वह उसके दोस्तों के साथ भी बहुत अच्छी तरह रह लेती थी और वे सभी उसे अच्छी तरह जानते थे, लेकिन वह अब तक उसे तनिक भी नहीं जान सका। वह उद्विग्न अवस्था में ईर्ष्या की प्रतारणा को खामोशी से सहता जा रहा था।

घर आकर लेपतेव ने कपड़े बदले और पढ़ने के कमरे में एक उपन्यास पढ़ने बैठ गया। उसकी बीवी अब भी घर नहीं लौटी थी, लेकिन आधे घण्टे बाद ही घण्टी बजी और दरबान तेज़ी से दरवाज़ा खोलने दौड़ा। *यह यूलिया ही थी। वह सीधी पढ़ने के कमरे में ही चली आयी।*

उसने एक रोयेंदार कोट पहन रखा था और कुहर के कारण अब भी उसके गाल लाल थे।

उसने सांस रोके हुए कहा, "प्रेस्निया में भयंकर आग लग गयी है। आसमान लाल हो रहा है। मैं कोस्त्या के साथ वहाँ घोड़ागाड़ी में जाना चाहती हूँ।"

"जरूर जाओ।"

स्वास्थ्य की ताजगी और उसकी आँखों की बच्चों-सी आतुरता ने लेपतेव को शान्त कर दिया था। उसने आधे घण्टे और पढ़ा और सोने चला गया।

दूसरे दिन पोलीना ने मालगोदाम से उस को पुस्तकें भेजी, जो वह कभी उससे माँगकर पढ़ने के लिए ले गयी थी और साथ में उसके चित्र और पत्र भी वापस कर दिये।

सात

अक्तूबर के अन्तिम हिस्से में नीना फ्योदोरोव्ना की हालत बहुत बिगड़ गयी। उसका वजन तेजी से घटने लगा और उसकी शक्ल भी तेजी से बदलने लगी। अत्यधिक दर्द बढ़ जाने पर भी उसका खयाल था कि उसकी हालत में सुधार हो रहा है और हर सुबह वह इस तरह कपड़े पहनती, जैसे वह बिल्कुल ठीक हो। फिर दिन भर वही कपड़े पहने बिस्तर पर पड़ी रहती। अन्तिम समय में वह बहुत बातूनी हो गयी थी।

वह पीठ के बल लेटे लेटे धीमी आवाज मे बात करती और थकान से कराहती रहती। मृत्यु एकाएक आ गयी।

एक साफ चादनी रात थी। शहर के लोग ताजे बरफ पर स्लेज की सवारी का आनन्द ले रहे थे और सडक से उठनेवाला शोर कमरो तक सुनायी पडता था। नीना अपने बिस्तर मे सोयी थी और साशा, जिसे छुडानेवाला अब कोई नही था, बगल मे बैठी ऊघ रही थी।

'मैं उसका पारिवारिक नाम याद नही कर पा रही हूँ" नीना फ्योदोरोव्ना ने धीरे से कहा, "लेकिन उसका पहला नाम ईवान था और जातीय नाम कोचोवाई। वह एक सरकारी अधिकारी था, लेकिन बहुत ही गरीब, कायर और शराबी। ईश्वर उसकी आत्मा को शान्ति दे। वह हमारे यहा हमेशा आया करता था और हम हर महीने उसे आधी किलो चीनी और एक पैकेट चाय दिया करते थे। कभी-कभी पैसा भी दे देते थे। एक दिन कोचोवाई ने कुछ ज्यादा पी ली और मर गया। उसके पीछे उसका बेटा रह गया था। सात वर्ष का छोटा बच्चा—गरीब, नन्हा, लावारिस। हम लोगो ने उसे बिक्रीवाले क्लर्कों के घर मे छिपा दिया और एक वर्ष तक पिताजी को उसके बारे मे कुछ भी मालूम नही हुआ। जब उन्हे मालूम हो गया, तो भी उन्होने कुछ भी नही कहा। जब वह लावारिस लडका कोस्त्या नौ वर्ष का हुआ, तब मेरी शादी हो गयी थी। मैं उसे सभी प्राइमरी स्कूलो मे ले गयी। लेकिन किसी ने उसे भरती नही किया। बेचारा गरीब चिल्लाने लगता था। 'किसलिए चिल्ला रहे हो बेवकूफ लडके ?' मैंने उससे कहा। मैं उसे राजगुलाई की पाठशाला ले गयी। ईश्वर को धन्यवाद है कि वहा लोगो ने उसे भरती कर लिया। हर दिन उस छोटे बच्चे को पातनितस्किया से राजदुलाई तक पदल ही जाना पडता था और राजदुलाई से पातनितस्किया पदल ही आना पडता था। अल्योशा उसकी पढाई का खर्च बरदाश्त करता था। ईश्वर की कृपा से बच्चे ने सख्त मेहनत की और अच्छी तरह पढा। अब वह मास्को मे वकील है और अल्योशा का दोस्त है और उसी की तरह शिक्षित है। यह अच्छा ही हुआ कि हम लोगो ने उस गरीब बच्चे को अपनाकर उसे घर मे रख लिया। बहुत सम्भव है, वह हमे प्रार्थनाओ

मे याद करता हो ..."

उसकी आवाज धीरे धीरे धीमी होती गयी और बीच की रुकावट लम्बी हो उठी। थोड़ी देर की शान्ति के बाद वह उठ बैठी।

"मुझे अपनी तबीयत ठीक नहीं लग रही है।" उसने कहा, "ईश्वर मेरे ऊपर दया करें। मैं ठीक साँस नही ले पा रही हूँ।"

साशा जानती थी कि उसकी माँ शीघ्र ही मरनेवाली है और जब उसने देखा कि उसके गाल सहसा धँस गये हैं, तो उसने अन्दाज़ लगा लिया कि अन्त करीब है और वह डर गयी।

"मेरी प्यारी माँ ... नही माँ ... नही ..." वह सिसक सिसककर रोने लगी।

"दौड़कर रसोई मे जाओ और किसी से कहो कि कोई तुम्हारे पिता को जल्दी बुला लाये। मेरी तबीयत बहुत खराब है।"

साशा सारे कमरे म नौकरो को आवाज देती फिरी, पर लीदा के अलावा कोई और घर मे नही था। वह भी पूरे कपड़े पहने रसोई म बक्स के ऊपर बिना तकिया लगाये सो रही थी। साशा कोट या दस्ताने पहनने के लिए भी नही रुकी और आगन से भागती हुई सड़क पर हो रही। नस घर के दरवाज़े पर बैठी सड़क पर स्लेज की दौड़ देख रही थी। नीचे नदी पर सेना का एक बैण्ड बज रहा था, जहाँ लोग स्लेज की दौड़ देख रहे थे।

"नस नस ... मा मर रही है," साशा सिसकते हुए चिल्लायी, "पिता जी को फौरन बुलवाना चाहिए।"

नस ऊपर सोने के कमरे म गयी। उसने एक नज़र बीमार औरत के ऊपर डाली और एक जलती हुई मोमबत्ती उसके हाथ मे थमा दी। साशा डर के मारे इधर उधर दौड़ती रही और लोगो से अपने पिता को बुला लाने के लिए याचना करती रही। फिर उसने अपना कोट पहना, शाल लिया और बाहर भागी। उसने नौकरो को कहते हुए सुना था कि उसके पिता ने दूसरी बीवी कर ली है, जिसके दो बच्चिया है और

वे लोग बज़ानियाँ स्ट्रीट पर रहते हैं। वह रोती, लोगों से शरमाती, वर्फ मे ढकती ग्रौर सरदी से कापती सडक पर भागी।

एक किराय की गाडी सडक से गुजरी, पर साशा ने उसे डर से नही लिया कि कही गाडीवान उसे शहर के बाहर ले जाकर मारकर कब्रिस्तान मे फेंक न दे (एक बार उसने नौकरो को चाय पीते हुए इस तरह की बात करत सुना था)। वह तेजी से बढती गयी। थकान से उसकी सास बन्द हो जाती थी। लेकिन वह सिसकती जाती थी। जब वह बजानिया पहुच गयी तो एक ग्रौरत को देखकर पेनोरोव का पता पूछने के लिए रुकी ग्रौर उसे पूरा ब्योरा समझाने ही जा रही थी, लेकिन जब स्त्री को लगा कि वह कुछ भी समझ नही पा रही है, तो उसने उसका हाथ पकडकर उसे एकमजिले मकान तक पहुचा दिया। सामने का दरवाज़ा बन्द नही था। साशा सामनेवाले दरवाज़े से दौडती एक बडे कमरे को पार करके बरामदे मे पहुची, तो उसने ग्रपने को एक गम ग्रौर रोशनी से भरे कमरे मे पाया ग्रौर देखा कि उसके पिता एक स्त्री ग्रौर दो बच्चियो के साथ एक समोवार की बगल में बैठे चाय पी रहे है। ग्रब तक साशा की बोलती बन्द हो चुकी थी ग्रौर सिसकिया ही बाकी रह गयी थी। पेनोरोव ने फौरन ताड लिया कि वह क्यो ग्रायी है।

"क्या तुम्हारी माँ ? उसकी हालत खराब है क्या ?" उसन पूछा, "बताग्रो बच्ची, क्या माँ की हालत ठीक नही है ?"

जल्दी से उठकर उसने एक किराये की गाडी मँगवायी।

जब वे पहुचे, तो देखा कि नीना पयोदोरोव्ना तकियो के घेरे म बैठायी हुई थी। उसके हाथा मे मोमबत्तिया थी, उसका चेहरा काला पड गया था ग्रौर उसकी ग्राँखें बन्द हो चुकी थी। सोने का कमरा लागा से भरा था। नस फुसफुसाकर कुछ हिदायतें दे रही थी, लेकिन कोई नही समझ पा रहा था कि वह उनस क्या करने के लिए कह रही है। खिडकी की बगल मे कमरे के छोर पर लीदा खडी थी। वह पीली पड गयी थी। उसकी नीद ग्रब भी नही टूटी थी, फिर भी ग्रपनी माँ को ग्राँख फाडकर देख रही थी।

पेनोरोव ने उसके हाथो से मोमबत्तियाँ ले ली ग्रौर इस भोंडेपन से

मुड़ हाकर उन्हें भोजनालय की आलमारी पर फेंक दिया।

"यह बहुत बुरी बात है," उसने कहा और उसके कन्धे काँप उठे, "नीना तुम्हें लेट जाना चाहिए।" उसने बड़े कोमल स्वर में कहा, "लेट जाओ मेरी प्यारी।"

नीना ने उसकी ओर देखा, लेकिन उसे पहचान नहीं सकी। माशा ने सहारा देकर उसे लिटा दिया।

जब पादरी और डाक्टर सरजी वासिलिच पहुँचे, तो नौकर नाम का निशान बनाकर अपनी मालकिन के लिए प्रार्थना कर रहे थे।

'यह दुख की बात है,' डाक्टर ने बैठक में जाते हुए कहा, 'अभी उम्र ही क्या थी! चालीस भी पूरे नहीं हुए थे।"

छोटी बच्चियाँ फूट-फूटकर रो रही थीं। पनोराव पक पड़ गया था और उसकी आँखें भीग गयी थीं। उसने डाक्टर के पास आकर धीमी और दुखी आवाज में कहा, "मेरे प्यारे दोस्त, कृपा करके मास्को एक तार भेज दो। मैं एकदम टूट गया हूँ।"

डाक्टर ने स्याही लेकर अपनी लड़की को एक तार लिखा, 'पनारोवा का आठ बजे देहान्त हो गया। उसके पति का डोरीनियस्कायावाला मकान कर्ज के एवज में बिक रहा है। बारह को नीलाम है। तुरन्त आ जाओ!"

आठ

मलाया दिमित्रोवा की एक छोटी सडक पर लेपतेव रहता था। यह जगह सन्तक्लीमेन्त चर्च के निकट थी। सडक के सामनेवाले बडे मकान के एक किनारे का दोतल्ला मकान उसने अपने मित्र युवक बैरिस्टर कोस्त्या कोचोवाई के लिए, जिसे लेपतेव परिवार के लोग बचपन से ही कोस्त्या कहते थे, किराये पर ले लिया था।

एक फ्रासीसी परिवार, जिसमे पति पत्नी और पाच लडके-लडकियाँ थी, दूसरी तरफ रहते थे। दिन बेहद ठण्डा था और खिडकिया के ऊपर कुहरा जमा था। कोस्त्या सुबह परेशान-सा जगा और किसी दवा की पन्द्रह बूद पी गया और किताबो की आलमारी से डम्बल्स लेकर कसरत करन लगा। वह बहुत दुबला और लम्बा था और घनी मूछें रखता था, लेकिन उसके शरीर मे सबसे विचित्र थे उसके अत्यधिक लम्बे पाँव। अधेडउम्र दरबान प्योत्र, सेमोवार ले आया और चाय बनाकर दी।

'बहुत ही प्यारा दिन है, हुजूर!" उसने कहा।

"हो सकता है, मेरे प्यारे दोस्त, लेकिन दुख यह है कि मुझे और तुम्हे प्रसन्न होने के लिए कुछ भी नही है!" कोस्त्या ने कहा।

प्योत्र ने धीमे से आह भरी।

"छोटी बच्चियो का क्या हाल है?" कोस्त्या ने पूछा।

"पादरी साहब अभी नही आये। एलेक्सी फ्योदोरोविच स्वय उन्हे पढा रहे है।" कोस्त्या को खिडकी के शीशे पर थोडी-सी खाली जगह दिखी, जहा बर्फ नही जमी थी। उसने अपनी दूरबीन के फोकस को ठीक करके उस खिडकी मे देखा, जहा फ्रासीसी परिवार रहता था।

'कुछ भी दिखायी नही पडा।" उसने कहा।

इस बीच एलेक्सी फ्योदोरोविच साशा और लीदा को बाइबिल पढाता रहा था। इन बच्चियो को मास्को म रहते छ सप्ताह बीत चुके थे और वे नीचे के बगलवाले हिस्से मे अपनी शिक्षिका के साथ रहती थी। शहर के पब्लिक स्कूल से एक अध्यापक और एक पादरी हफ्ते मे

तीन बार उनके लिए आते थे। साशा न्यू टेस्टामेंट पढ रही थी और लीदा ने अभी ही ओल्ड टेस्टामेंट शुरू किया था। अंतिम पाठ के समय लीदा से कहा गया था कि वह अब्राहम तक पाठ को याद कर ले।

'तो अब, आदम और ईव के दो बच्चे हो गये" लपतेव ने कहा, "हाँ बताओ, उनके क्या नाम थे ? तुम्हे याद है ?"

हमेशा की तरह लीदा गम्भीर चेहरा बनाये मेज़ की तरफ एकटक देखने लगी। उसके होंठ हिलने लगे। उससे बडी बच्ची उसकी ओर उत्सुकता से देखती रही।

तुम अच्छी तरह जानती हो। घबराओ नही," लपतेव ने कहा, 'हा आदमी के बच्चो के क्या नाम थे ?'

'अबल और क्वेल" लीदा ने फुसफुसाकर कहा।

केन और अबल," लपतेव ने उसे ठीक किया।

आँसू की एक बडी सी बूद लीदा के गालो पर लुढककर पुस्तक पर गिर पडी। साशा भी रोने ही वाली थी। उसने आँखें नीची कर ली और उसका चेहरा भभर आया लेकिन लेपतेव सहानुभूति के साथ कुछ भी नही कह पाया। वह उठा और एक सिगरेट जलाकर पीने लगा। तभी कोस्त्या हाथ मे एक अखबार लिये सीढियो से उतरा। छोटी बच्चियो ने उठकर बिना उसकी ओर देखे उसका अभिवादन किया।

लपतेव ने उससे आजिजी के साथ कहा ईश्वर के लिए कोस्त्या, इन्हे इनके पाठ पढा दो। मुझे डर है कि मैं खुद भी रोने लगूगा। इसके अलावा मुझे खाने के पहले मालगोदाम भी पहुचना है।' ठीक है।"

अलेक्सी फ्योदोरोविच बाहर चला गया। कोस्त्या गुस्से मे बहुत सख्त होकर मेज़ के पास बैठ गया और बाइबिल खोलने लगा। हाँ तो,' उसने कहा तुम लोग कहा तक पहुँचे ?

वह बाढ के बारे मे जान चुकी है साशा ने कहा।

जान चुकी है ? बहुत अच्छा हम लोग बाढ के बारे मे बातें करेंगे।

कोस्त्या ने पुस्तक मे बाढ के सक्षिप्त वणन पर निगाह दौडायी और

कहने लगा, "मैं बाढ के बारे मे बताऊँगा, गोकि जैसा इसमे लिखा है, वैसा बाढ कभी भी नही आती, फिर भी मैं तुम्हे बताऊँगा। ईसा के जन्म के हजारो साल पहले एक बार प्रलय हो गयी थी। उसका उल्लेख तुम्ह सिफ बाइबिल ही म नही, बल्कि हिदुओ, चाल्दियाइयो और यूनानियो मे भी मिलेगा। लेकिन चाह जितनी बडी यह बाढ रहा हो सारी पथ्वी को यह बाढ डुबो नही पायी होगी। हो सकता है कि मदान डूब गये हो, लेकिन पहाडो पर पानी नही चढ पाया होगा। इस पुस्तक को पढने मे कोई खतरा नही है, लेकिन इस पर विश्वास करने की भी जरूरत नही है।'

लीदा की आख फिर भरने लगी। वह सहसा उठकर चली गयी और बेहाश-सी फफक-फफककर रोने लगी। कोस्त्या डरकर अपनी कुरसी से उठ खडा हुआ।

"मैं पापा और अपनी आया के पास घर जाना चाहती हूँ।" वह सिसकने लगी।

साशा भी सिसकने लगी। कोस्त्या ने ऊपर जाकर यूलिया को फोन किया, "बच्चे फिर चिल्ला चिल्लाकर रो रह है। मैं समझ नही पाता कि क्या किया जाय।"

यूलिया सरजीविना कपडो पर ऊनी चादर ओढे अपने घर से तेजी के साथ भागती हुई आयी। वह ठण्ड से काप रही थी।

बच्चिया को अपने सीने से लगात हुए उसने बार-बार कहा, 'तुम्हारे पापा आज आयेंगे। उन्हाने मुझे आज ही तार भेजा है। मा के लिए बहुत दुख है तुम लोगो के लिए हमारे दिल फटे जा रहे हैं, पर क्या किया जा सकता है! हम लोग ईश्वर की मरजी के विरुद्ध नही जा सकत।"

जब बच्चा ने रोना बन्द कर दिया, तो उसने उन्हें तैयार कराया और गाडी मे बठकर बाहर निकल गयी। वे लाग मलाया मिदोवका गये और स्त्रास्तोनाय होते हुए वरस्किया पहुँचे। इवरस्की के गिरजे मे उनम से हरएक न प्रतिमा के सामने एक-एक मोमबत्ती रखी और घुटने टककर प्राथना की। लौटत हुए वे लोग फिलीपोव्स के यहा रुके और

कमरे मे जा बठे। वहाँ वे पतना मुखला और ओरलिया की नागी के बारे मे बातें करते रहे। कोस्त्या ने एक नाटक से, जिसे वे लोग यामलोव का सच्चा अनुकरण मानते थे, एक संवाद पढकर सुनाया। इसके बाद वे 'विंट' का खेल खेलने लगे। छोटी बच्चियाँ अपने कमरा मे नही गयी, बल्कि वही अगल बगल आरामकुरसी मे बैठी रहीं। वे बहुत उदास थीं, उनका रंग फक पड गया था और उधर से गुजरती हुई गाडी की आवाज पर वे चौंक उठती थी कि कहीं उनके पिता तो इसमे नहीं आ गये। वे विशेषत शाम को बहुत उदास हो उठती थी, यहा तक कि बत्ती जलने पर भी वैसी ही बनी रहती थी। ताश खेलनेवाली मेज से आनेवाली बातचीत, प्योत्र के चलने की आवाज और अलाव मे जलनेवाली लकडी का चटखना भी उन्हें अव्यवस्थित कर देता था। आग की लपट देखकर वे बहुत खिन्न हो उठती थी। अब तो वे और अधिक रो भी नहीं सकती थी। यह सब बहुत भयंकर था और उनका दिल बहुत ही भारी हो उठा था। वे यह समझ ही नही पाती थी कि मा के मरने के बाद कोई कैसे हँस या बोल सकता है।

"आपने आज अपनी दूरबीन से क्या देखा।" यूलिया सरजीविना ने कोस्त्या से पूछा।

"आज कुछ नही देख पाया, लेकिन कल मैंने बूढ फ्रासीसी को नहाते हुए देखा था।"

सात बजे यूलिया सर्जीविना और कोस्त्या माली थियेटर चले गये। लेपतेव लडकियो के साथ घर रह गया।

अब तक तुम्हारे पिता को यहा आ जाना चाहिए था" उसने घडी देखते हुए कहा, "लगता है गाडी लेट हो गयी।"

जानवरो के नन्हे, सहमे बच्चो की तरह एक दूसरे से सटी हुई दोनो बच्चियाँ चुपचाप आरामकुरसी मे बठी रहीं और लेपतेव कमरे मे इधर-उधर चक्कर काटता बेसब्र होकर हर मिनट अपनी घडी देखता रहा। घर एकदम शान्त था। दस बजे के लगभग दरवाजे की घण्टी बजी। प्योत्र दरवाजा खोलने गया।

अपने पिता की आवाज सुनकर दोनो बच्चियाँ चिल्ला पडी और

बडे ज़ोर से सिसकती हुई उससे मिलने के लिए दौड पडी। उसने एक कीमती रोएदार कोट पहन रखा था और उसकी मूछ और दाढी कुहरे की नन्ही बूदो से ढँकी थी।

"वहाँ चलो, उधर!" उसने साशा और लीदा से धीरे स कहा, जो साथ साथ रोती और हँसती जा रही थी और उसके हाथो का हैट को, कोट को लगातार चूम रही थी। उदासीन सुन्दर और अत्यधिक प्यार से पाली हुई उन बच्चियो की पीठ उसने उडे-उडे मन से थपथपायी और कमरे म जाकर अपने हाथ मलते हुए कहने लगा, "मैं ज्यादा देर नही रुक सकूगा। कल मैं पीतसबर्ग चला जाऊगा। मुझे दूसरे शहर मे एक नौकरी देने का आश्वासन मिला है।"

वह ड्रेसडन मे रुक गया था।

नौ

इवान गावरिलिच यार्त्सेव लेपतेव के यहाँ प्राय आया करता था। वह एक तगडा आदमी था। उसके बाल सुन्दर और काले थे। उसका चेहरा बहुत ही तेजवान था। वह सुन्दर माना जाता था, लेकिन बाद को धीरे धीरे वह मोटा हो गया था और इसके कारण उसकी आकृति विगड गयी थी। उसने अपने बाल भी बहुत छोटे करा लिये थे। विश्वविद्यालय के दिना मे अपने कसरती शरीर के कारण उसका नाम ही 'खरादा हुआ' पड गया था।

उसने लपतेव आइया के साथ ही भाषा विज्ञान विभाग में शिक्षा पायी थी। इसके बाद उसने प्राकृतिक विज्ञान का अध्ययन किया था और अभी उसने रसायनशास्त्र में डिग्री ली थी। उसे रसायनशास्त्र में किसी पद की न आशा थी न वह कभी प्रयोगशाला में काम ही करता था। वह एक व्यावसायिक स्कूल और औरतों के एक व्याकरण स्कूल में भौतिक विज्ञान और प्राकृतिक इतिहास पढ़ाता था। वह अपने शिष्यों के बारे में बड़ा उत्साही था विशेषकर लड़कियों के बारे में उसका खयाल था कि एक महान पीढ़ी विकसित हो रही है। रसायनशास्त्र के अलावा उसने समाजशास्त्र और रूस का इतिहास अपने आप पढ़ा था और अखबारों तथा पत्रिकाओं में 'या' नाम से छोटे छोटे लेख लिखा करता था। जब भी वह वनस्पति या प्राणिशास्त्र के बारे में बात करता, तो वह इतिहासज्ञ की तरह लगता और जब इतिहास के बारे में कुछ कहता, तो आप मालूम होता कि वह विज्ञानविद है।

लपतेव का दूसरा मित्र किश था। लोग उसे सार्वभौमिक छात्र मानते थे। उसने तीन वर्ष डाक्टरी पढ़ी फिर गणित पढ़ने लगा और उनमें दो-दो वर्ष लगाये। उसका पिता एक प्रान्त में औषधि विक्रेता था। वह हर महीने उसे चालीस रूबल भेजता था और उसकी माँ छिपे तौर से उसे बीस रूबल और भेज देती थी। उसके खर्च के लिए इतना धन काफी था। साथ ही वह पोलिश बुनकरों के बुने हुए कॉलर, दस्ताने और सुगन्ध की वस्तुएँ और फोटो (वह अपना चित्र उतरवाकर परिचितों को भेंट-स्वरूप दिया करता था) जैसी शौक की चीजें भी ले सकता था। वह छोटे कद का साफ सुथरा आदमी था और कुछ गंजा था। वह कानों के नीचे थोड़ी सी लाल दाढ़ी रखता था और विनीत होने के साथ ही व्यवहारकुशल भी था। वह हमेशा लोगों का काम कर दिया करता था। कभी वह चन्दे की कापी लेकर चन्दा जुटाता होता, तो कभी किसी लोकप्रिय नाटक के टिकट खरीदने के लिए सुबह से जाड़े में परेशान लाइन में खड़ा होकर किसी परिचित महिला मित्र के लिए टिकट ले देता या किसी के लिए माला या गुलदस्ते खरीदने के लिए तेजी से भागता हुआ दिखायी देता। वह प्राय अलग अलग व्यक्तियों से मिले आदेशों में घपले

करता रहता था फिर भी लोग उसे बार बार इस तरह के काम करने के लिए कहते रहते। अक्सर लोग उसे पैसे देना भी भूल जाते, लेकिन वह कभी शिकायत न करता। वह कभी भी प्रसन्नता या नाराजगी को व्यक्त नहीं करता था। वह बड़ी उबाऊ और देर तक खिंचनेवाली बातें करता। लोग उसके मजाकों पर इसलिए हँसते कि उनमें कोई भी हँसने की बात नहीं होती थी। उसने एक बार प्योत्र से कहा, "प्योत्र, तुम तो दुलकी चाल चलते हो!" इस पर सब लोग हँस पड़े। वह अपने को चतुर समझकर बहुत प्रसन्न हो उठा था।

यार्त्सेव और किश प्रायः शाम की चाय के समय आते थे। अगर मेजबान कहीं बाहर जानेवाले न हुए तो रात के खाने के समय तक चाय चलती रहती। फरवरी के महीने में एक शाम को जब वे खाने के कमरे में बैठे हुए थे तो बात कला पर चल पड़ी।

कोस्त्या यार्त्सेव की तरफ देखते हुए कह रहा था, "कलात्मक रचना का मूल्य तभी है, जब वह किसी गम्भीर सामाजिक समस्या का निदान करती है। ऐसी कलात्मक रचना, जो जमींदारी प्रथा के विरुद्ध प्रतिरोध व्यक्त करती है या ऊँचे वर्ग के प्रति लेखक की घृणा व्यक्त करती है, वह महत्त्वपूर्ण और मूल्यवान है। लेकिन ऐसे उपन्यास, जो आह और आह या ऐसी कहानियाँ, जिनमें 'वह' 'उसके' प्यार में फँस जाता है और 'वह' 'उसके' प्यार से मुक्त हो जाता है, मैं कहता हूँ कि ऐसी पुस्तकें एकदम बेकार हैं और उनकी निन्दा होनी चाहिए।"

"मैं तुमसे एकदम सहमत हूँ, कोस्त्या," यूलिया सरजीविना ने कहा, "एक लेखक प्रेमियों के मिलन का वर्णन करता है, दूसरा उनमें अवि श्वास की बात लिखता है और तीसरा उनके फिर से मिलन की कथा कहता है, इसके अलावा कुछ और लिखने के लिए है ही नहीं क्या? कितने ही बीमार, दुखी और गरीबी के मारे लोग हैं, जिनके मन में ऐसी चीजों पर विद्रोह जरूर पैदा होगा।

लेपतेव को अपनी पत्नी की बातें पसन्द नहीं थीं। वह कम उम्र की औरत

थी। अभी २२ वर्ष की भी नहीं हो पायी थी और प्यार के बारे में इतने ठण्डे दिल और बौद्धिकता से बातें करती थी ! वह सोचता था कि ऐसा क्या है।

'लेकिन अगर कविता उन समस्याओं का समाधान नहीं दे पाती, जो आपके लिए इतनी महत्त्वपूर्ण है, तो फिर उपयोगी साहित्य की ओर क्या न लौट जाये ? कानून और वित्त पर पुस्तकें क्या न हों या वैज्ञानिक लेख ही क्या न लिखे जायें ?" यार्त्सेव ने कहा, "रोमियो और जूलियट के प्रेम की जगह अध्ययन की स्वाधीनता या जेलों के शुद्धीकरण के ऊपर क्या न लिखा जाये, जब इस विषय पर वह सब तुम किसी विशेष लेख या उल्लेख्य सामग्री में ही पा सकते हो ? '

"अब तुम दूसरे छोर पर जा रहे हो," कोस्त्या ने बीच में ही रोका। "हम लोग शेक्सपियर या गोथे जैसे महान लेखकों की बात नहीं कर रहे हैं। हमारा मतलब है, उन सैकड़ों प्रतिभावान सम्पन्न औसत लेखकों से, जो सिर्फ प्यार के विषय को छोड़ देने से अच्छा लिख सकते हैं, बशर्ते कि वे जनता तक ज्ञान और मानवीय आदर्श पहुँचाने का काम करें।'

किश हकलाकर नाक में बोलते हुए एक कहानी सुनाने लगा, जो उसने हाल ही में पढ़ी थी। उसने उसको जान बूझकर धीरे-धीरे और विस्तार से सुनाया। दस मिनट बीत गये पर वह कहानी सुनाता ही जा रहा था और कोई उसकी बात नहीं समझ रहा था कि यह सब किस चीज के बारे में है। वह जितना बोलता था, उतना ही उसके बोलने का ढंग शुष्क और ऊबाऊ होता जाता था।

यूलिया सरजीविना ने बेसब्र होकर चिल्लाकर कहा, "किश, जल्दी खत्म करो अपनी कहानी ! तुमने तो हम लोगों को परेशान कर दिया !"

"बन्द करो, किश !" कोस्त्या चिल्लाया।

सब लोगों के साथ किश भी हँस पड़ा।

इसी समय फ्योदोर आया। उसके चेहरे पर लालिमा के दाग उभरे हुए थे। उसने जल्दी से सबसे हाथ मिलाया और अपने भाई को अलग कमरे में ले गया। इधर वह ज्यादा लोगों के जमघट को नापसन्द करने लगा था।

"कम उम्र के लोगो को आपस मे आनन्द लेने दो ! हम तुम यहा शान्तिपूर्वक बैठकर आपस मे कुछ अच्छी बातें करेंगे," उसने कहा और राशनी से हटकर आरामकुरसी मे बठ गया, 'हा, बुजुग बच्चे ! मै तुममे बहुत दिना से नही मिला । मालगोदाम गये तुम्ह कितने दिन हुए ? एक सप्ताह से ज्यादा ? ठीक है न ?"

'मेरे लिए वहा काम ही क्या है ? इसके अलावा मैं स्वीकार करता हू कि बुटऊ के कारण परेशानी से मैं तो बेजार हो जाता हूँ ।'

'इसमे सन्देह नही कि मालगोदाम का अच्छी तरह इतजाम हमारे बगर भी हो सकता है, लेकिन तुम्ह कुछ तो करना ही चाहिए । अपनी भ्राख के इशारे पर क्या तुम अपनी रोटी खा सकते हो ? तुम जानत हो कि ईश्वर उन्ही को प्यार करता है, जो परिश्रम करते हैं ।"

प्योत्र ट्रे मे एक गिलास चाय ले आया । पयोदोर ने उसे बिला चीनी के पी लिया और एक गिलास और मागा । चाय वह हमेशा बहुत ज्यादा पीता है । कभी-कभी तो एक ही शाम मे दस-दस गिलास पी जाता है ।

"दखो, अलेक्सी" *उसने उठकर अपने भाई के पास जाते हुए कहा,* 'तुम शहर के दयूमा (विधानसभा) के लिए क्यो नही खडे होते ? धीरे धीरे हम तुम्ह काउसिल का सदस्य बना देंगे और फिर बाद का नगर उपप्रमुख । तुम प्रतिभाशाली और सुशिक्षित व्यक्ति हो । तुम्हारी ओर लोगा का ध्यान जरूर जायेगा और हो सकता है तुम्ह पीतसबग भी बुला लिया जाय । देहाती और शहरी नेताओ का आजकल वहा बहुत चलन है और कौन जानता है, पचास से पहले ही तुम अपने कन्धे पर एक फीता पहनो और महासभा के सदस्य हो जाओ ।

लेपतेव ने कुछ भी नही कहा । वह जानता था कि पयोदोर सभी चीजें स्वय अपने लिए चाहता है, लेकिन उसकी समझ म नहीं आता कि यह बात वह कैसे कहे ।

दोना भाई चुपचाप बैठे रहे । पयोदोर ने अपनी घडी निकाली और उसे खोलकर एकटक बहुत देर तक उसे देखता रहा, जैसे वह सुइया की चाल पकडना चाहता हो । उसका यह रूप लेपतेव को बहुत विचित्र लगा ।

रात के खाने की बुलाहट हुई। लेपतेव खाने के कमरे मे चला गया, लेकिन फ्योदोर वही बैठा रहा। खाते समय कोई बहस नही हुई। यार्त्सेव विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों के से स्वर मे बोलता रहा, "जलवायु, शक्ति रुचि और उम्र की विभिन्नता के कारण समानता भौतिक रूप से असम्भव है लेकिन एक सुसभ्य आदमी इस असमानता को खतरे से हीन कर सकता है जैसे उसने कच्छ और भालू के साथ किया है। हम सभी उस वैज्ञानिक के बारे मे जानते हैं, जिसने एक बिल्ली एक चूहे, एक बाज और गौरैया का एक ही प्लेट मे खाने की शिक्षा दी। मेरा ख्याल है कि आदमी के साथ भी शिक्षा वही करेगी। जीवन हमेशा विकसित होता है। संस्कृति का अत्यधिक विकास हो रहा है और इसमे सन्देह नही कि एक ऐसा भी समय आयगा, जब उदाहरण के लिए आज के फैक्टरी मजदूर की स्थिति उसी प्रकार बेकार हो जायेगी, जैसी आज जमीदार की है, जबकि किसानो की लडकिया कुत्तो से बदली जाने लगेंगी।'

"इसके आने मे बहुत समय लगेगा' कोस्त्या ने कुछ मुस्कराकर कहा, 'इसके बहुत पहले कि रात्सचाइल्ड (फ्रांसीसी बैंकर) अपनी सोने की तिजोरिया को बेकार की समझे। इस बीच मजदूर अपनी कमर झुकाये भूखो मर जायेंगे। नही जनाब, इससे काम नही चलने का। हमे इन्तजार नही करना चाहिए। हमे लडना चाहिए। अगर एक बिल्ली उसी प्लेट मे खाती है जिससे चूहा खाता है, तो आप क्या समझते हैं कि उसने अपने रास्ते की गलतियाँ समझ ली हैं? ऐसी कोई बात नही है। ऐसा इसीलिए है कि उसे ऐसा करने के लिए लाचार कर दिया गया है।"

"मैं और फ्योदोर धनवान हैं। मेरे पिता पूंजीपति हैं, लखपति! इसलिए लोगो को हमसे लडना चाहिए," लेपतेव अपने माथे को रगडते हुए बोला, "मुझसे लडना मेरी समझ मे नही आता। मैं धनी हूँ, ठीक है। लेकिन हमने उस धन से क्या पाया है? मैंने उस शक्ति से क्या अर्जित किया है? क्या मैं किसी तरह तुम लोगो से अधिक सुखी हूँ? मेरा बचपन पूरी तौर पर गुलामी का था और मेरे धन ने मुझे बेंत खाने से कभी नहीं बचाया। जब नीना बीमार थी और मर रही थी,

तब भी मेरे धन ने उसकी रक्षा नही की। अगर मुझे कोई प्यार नही करता, तो मैं लाखों रुपये खर्च करके भी उस अपने को प्यार करने के लिए मजबूर नही कर सकता।"

"लेकिन आप अधिक से अधिक भलाई तो कर सकते है," किश ने कहा।

"बेमानी! तुम्ही ने एक गणिका को एक जगह दिलाने म मदद करने को कहा था। विश्वास करें कि मैं भी उसी तरह उसके लिए कुछ नही कर सकता कि जिस तरह तुम। मैं उसे पैसा द सकता हू, लेकिन सिर्फ इतना ही वह नही चाहता। एक बार मैंने एक प्रसिद्ध सगीतज्ञ से एक गरीब वायलिन बजानेवाले को काम दिलाने के लिए कहा, तो उसने उत्तर दिया, 'अगर आप सगीतज्ञ होते, तो मुझस यह कभी न कहते।' यही मैं तुमसे कहता हूँ। अगर तुम भी मेरी तरह एक धनी आदमी के वारिस होते, तो कभी भी इतने विश्वास के साथ मेरे पास सहायता के लिए न आते।"

'मैं यह बात बिल्कुल नही समझ सकी" यूलिया ने कहा और शम से लाल पड गयी, "इससे प्रसिद्ध गायक से क्या मतलब ?"

उसका चेहरा घृणा से कापने लगा और इसे छिपाने के लिए उसने जल्दी से आखें नीची कर ली। लेकिन मेज पर बठे उसके पति और अन्य लोगो मे से कोई भी ऐसा नही था, जिसने इसको भाप न लिया हो।

"प्रसिद्ध गायक का इससे क्या सरोकार?' उसन धीमे स्वर मे दुहराया, "गरीब आदमी की मदद करना सबसे आसान काम है।"

एक खामोशी छा गयी। प्योत्र ने चिडिया का मास परोसा, लेकिन किसी न सलाद के अलावा कुछ भी नहीं छुआ। लेपतव अब तक भूल चुका था कि उसने क्या कहा था और उसका कोई महत्त्व भी नही था। उसे मालूम था कि उसके शब्द नही, बल्कि उसका बोलना ही यूलिया के लिए घृणा का कारण बन गया था।

खाने के बाद वह अपने पढने के कमरे म चला गया और वहीं बठा

रहा। खाने के कमरे की बातें गहरे तनाव के साथ सुनते हुए उसका दिल जोरों से धड़क रहा था। वह कुछ और भी अपमान की अपेक्षा कर रहा था। वे लोग फिर बहस करने लगे थे। इसके बाद यार्त्सेव ने पियानो पर बैठकर एक भावुकता से भरा हुआ गाना सुनाया। वह बहुमुखी प्रतिभा का आदमी था। वह गाना गाने के साथ ही पियानो भी बजा सकता था। यहां तक कि वह हाथ की सफाई दिखाने में भी निपुण था।

"आप लोगों के बारे में तो मैं नहीं जानती, लेकिन मेरे मन में इस समय घर रुकने की इच्छा नहीं है," यूलिया ने कहा, "आइए, कहीं चला जाये।"

उन्होंने सवारी में शहर के बाहर जाने का निश्चय किया और किश को भेजा कि वह मरचेंट क्लब से तीन घोड़े की गाड़ी लाये। उन्होंने लेपतेव से साथ चलने के लिए भी नहीं कहा, क्योंकि वह प्रायः शहर के बाहर घूमने कभी नहीं जाता था और इसलिए भी कि इस समय उसका भाई उसके साथ बैठा हुआ था। लेकिन लेपतेव ने इसे इस बात का संकेत माना कि वह उन लोगों के लिए अत्यधिक मनहूस है और इन कम उम्र खुशदिल लोगों की मण्डली में उसकी कोई जगह नहीं है। उसने इसे इतने तीखेपन से महसूस किया कि वह इस पर रो पड़ने की सीमा तक जा सकता था। यहां तक कि वह खुश भी था कि उन लोगों ने उसके साथ बुरा बर्ताव किया है और उसकी उपेक्षा की है, क्योंकि वह एक दिलचस्प पति होने की जगह मिट्टी का लोंदा है—रुपयों की एक सड़ियल थैली मात्र! वह सोचने लगा कि यह और भी अच्छा होता कि उसकी बीवी उसके प्रति वफादार न रहती। वह उसी रात को अपने सबसे प्यारे दोस्त के साथ भाग जाती और बाद को घृणा से भरी दृष्टि के साथ स्वीकार करती कि... । वह उन सबसे ईर्ष्या करता था, उसके विद्यार्थी मित्रों से, अभिनेताओं से, गायकों से, यार्त्सेव से और यहां तक कि हर पास से गुजरनेवाले से। वह कितना चाहता है कि वह बेवफा हो जाय जिससे वह उसे किसी के साथ पकड़ ले और जहर खाकर इस दुःस्वप्न को हमेशा के लिए समाप्त कर दे।

फ्योदोर जोर-जोर से चाय की चुस्की लेते हुए बैठा था, लेकिन अन्त

मे वह भी जाने के लिए उठ खडा हुआ। उसने अपना कोट पहनते हुए कहा, "मुझे लगता है कि बुढऊ की आख की रोशनी धीरे-धीरे कम हो रही है।"

लेपतेव ने भी कोट पहना और बाहर निकल पडा। फ्योदोर स्मारनाय-बुलेवार तक लेपतेव के साथ गया और फिर एक किराये की गाडी लेकर घर चला गया।

"इसी को लोग विवाह का सुख कहते है!" उसने अपने ही को चिढाया, "प्यार सचमुच!"

या तो ईर्ष्या के कारण या किसी अन्य कारण से उसके दात किट किटा रहे थे—किस कारण, यह वह समझ नही पाया। रस्तरा मे पहुचकर मेजो की बगल से इधर उधर घूमता हुआ बडे कमरे मे गायको को सुनता रहा और इस बात पर अचम्भा करता रहा कि अगर उसकी पत्नी और उसके दोस्तो से उसकी एकाएक मुलाकात हो गयी, तो वह क्या कहेगा। वह पहले से ही जानता था कि वह दयनीयता और बेवकूफी से मुस्करा देगा और सभी लोग जान जायेंगे कि वह क्यो आया है। तेज रोशनी की चमक, जोर के सगीत स्वर चेहरो के पाउडर की गन्ध और स्त्रियो के उसकी ओर घूरकर देखने के कारण उसे बेहोशी सी आन लगी। वह दरवाजे म ही रुक गया, यह सुनने और देखने के लिए कि व्यक्तिगत बैठक-वाली कोठरियो मे क्या हो रहा। उसे महसूस हो रहा था कि वह, ये औरतें और गायक—सभी मिलकर घृणा का कोई खेल खेल रहे हैं। थोडी देर बाद वह सवारी से स्त्रेला आया, लेकिन उसकी बीवी वहाँ भी नही थी। फिर जब वह लौटकर घर पहुच रहा था कि एक शोर मचाती हुई तीन घोडो की गाडी ने उसे अपनी ओर आकर्षित कर लिया, जिसके शराबी ड्राइवर की तेज पुकार के ऊपर यारसैंव की हो हो नही सुनायी पड रही थी।

चार बजे के करीब वह घर पहुचा था। यूलिया सरजीविना बिस्तर पर पहले से लेटी हुई थी। यह देखकर कि वह अभी सोयी नही है, वह उसके बिस्तर के पास गया और तीखेपन के साथ बोला 'मैं तुम्हारी परेशानी और घृणा समझ रहा, लेकिन कम से-कम अपरिचितो के सामने

तो मुझे तुम इससे बरी रह सकती थी !'

यूलिया उठ बैठी और उसने अपने पैर बिस्तर से नीचे लटका लिये। प्रतिमावाले चिराग की रोशनी में उसकी काली आँखें और भी बड़ी हो उठीं।

"मुझे इस बात का बड़ा दुख है," उसने कहा।

वह चुप रहा। उत्तेजना इतनी अधिक थी कि वह कुछ भी बोल नहीं सकता था। यूलिया भी अपराधी की तरह उसके सामने बैठी काँप रही थी।

"यह घोर प्रतारणा है। मैं इसे सहन नहीं कर सकता," उसने कस कर अपना माथा दबोच लिया, 'मुझे लगता है मैं पागल हो रहा हूँ।"

क्या तुम समझते हो कि मेरे लिए यह सहज था ? सिर्फ ईश्वर ही जानता है कि मैं इस किस कदर महसूस कर रही हूँ !'

'तुम करीब छः महीने से मेरी पत्नी हो, लेकिन तुम्हारे दिल में प्यार की एक नन्हीं सी चिनगारी भी नहीं है, जरा भी चमक नहीं। मुझसे तुमने शादी ही क्यों की ?" लेपतव हताश होकर बोलता गया, 'क्या ? किस राक्षस ने तुम्हें मेरी बाहों में डाल दिया ? तुम किस आशा में हो ? तुम क्या चाहती हो ?'

वह भयग्रस्त होकर लेपतव की ओर लगातार देखती रही। उसे डर लगा कि कहीं वह उसे मार न डाले।

'तुमने कभी मेरी परवाह की ? तुमने मुझे प्यार किया ?" वह जोर-जोर से साँस लेता रहा। 'नहीं ! अब फिर क्यों ? किसलिए, बोलो !" वह चिल्लाया, 'वही अभिशप्त धन शापग्रस्त पूँजी ?"

'मैं ईश्वर की कसम खाती हूँ, यह वह नहीं है, वह जोर से चीखी और अपने चारों ओर क्रास का संकेत किया। इस अपमान से उसे गहरा धक्का लगा और पहली बार लेपतव ने उसे रोते हुए सुना, "मैं ईश्वर की कसम खाती हूँ यह गलत है," उसने अपनी बात दुहरायी, मैंने कभी तुम्हारे धन के बारे में नहीं सोचा। मैं उसे नहीं चाहती। मैंने सिर्फ इतना सोचा था कि अगर मैं तुमसे इन्कार करूँगी, तो वह गलत होगा। मुझे डर था कि कहीं हम लोगों की जिन्दगी चौपट न हो जाय। अब मैं

अपनी गलती का नतीजा भुगत रही हूँ। मैं इसे बरदाश्त नहीं कर सकती।"

वह फूट फूटकर रोने लगी। लेपतव को लगा कि उसने अपार कष्ट झेला है। वह कुछ भी कह नहीं पाया और यूलिया के सामने घुटनो के बल गिर पड़ा।

मत रोओ! नहीं नहीं!" उसने धीरे से कहा, "मैंने तुम्हारा अपमान इसलिए किया है कि मैं तुम्हें पागलों की तरह प्यार करता हूँ" उसने उसके पैरों को चूम लिया और गहरे आवेग में उसे सीने में भीच लिया। "मैं प्रेम की एक चिनगारी मात्र चाहता हूँ," वह फुसफुसाया, "कृपया मेरे पास लेट जाओ लेट जाओ! अब यह न कहो कि हमारी शादी एक गलती थी!"

लेकिन वह रोती रही। लेपतव ने देखा कि उसके सारे प्रेम-स्पर्शों को वह अपनी गलती के लिए दण्ड मानकर भोग रही थी। उसने उस पैर को झटके के साथ खींचकर चिड़िया की तरह सिकोड़ लिया, जिसे उसने चूमा था। सहसा लेपतेव को यूलिया के लिए दुख होने लगा।

यूलिया ने लेटकर ओढ़ने से अपने को ढँक लिया। लेपतेव ने भी कपड़ा उतारा और उसकी बगल में सो गया। सुबह दोनों पशोपेश में थे और समझ नहीं पाते थे कि क्या कहें यहाँ तक कि उस पैर पर वह कम भार देकर चलती थी, जिसे उसने रात को चूमा था।

खाने के पहले पनोरोव विदाई लेने आया। यूलिया के मन में अपने कसबे जाने के लिए गहरी इच्छा पैदा हो गयी थी। वह सोचती रही कि इस निरन्तर की गलती की भावना और भौंडी परिस्थिति से दूर भाग जाना कितना अच्छा होगा? खाते समय यह तय हुआ कि वह पनोरोव के साथ दो या तीन सप्ताह के लिए अपने पिता के पास चली जायगी।

दस

यूलिया सरजीविना और पनाराव न अपने लिए गाडी का एक अलग डिब्बा सुरक्षित करा रखा था। पनोराव ने बकर की खाल की एक विचित्र सी बनावटवाली टोपी पहन रखी थी।

मैं सेंत पीतसबग स बिल्कुल सन्तुष्ट नही हूँ उसने लम्बी सास लत हुए कहा 'मुझे बहुत से आश्वासन मिले थ, लकिन यह भी निश्चित नही है। मैं मजिस्ट्रेट रह चुका हूँ। मैं गाँव अदालत का स्थायी सदस्य और सभापति हूँ और गवनर की काउसिल का सदस्य हूँ। मैंन अपने देश की बहुत अच्छी तरह सवा की है और मैं विश्वास करता हूँ कि मेरी स्थिति पर विशेष रूप स विचार किया जाना चाहिए। इतने पर भी तुम देखो कि एक दूसरे शहर म मै अपना तबादला नही करा सकता।

उसने अपनी आँखें बन्द करके अपना सिर हिलाया।

'मेरी प्रशसा नही होती,' वह उदासीन मन स बोलता रहा "यह सच है कि मैं प्रतिभासम्पन्न प्रशासक नही हूँ लकिन मैं ईमानदार और समझदार आदमी हूँ और ये गुण आजकल मुश्किल से प्राप्त होते हैं। मैं स्वीकार करता हूँ कि स्त्रियो के प्रति मैं वफादार नही हूँ, लेकिन रूसी सरकार से सम्बन्धो मे मैं हमेशा भला, बल्कि उससे भी आगे बढा हुआ, आदमी रहा," उसने आख खोलत हुए कहा, "आओ, अब तुम्हारे बारे म बातें करें इतनी जल्दी अपने पिता के घर जाने का कारण क्या है?'

'बस, थोडी-सी आपसी नासमझी," यूलिया ने उसकी टोपी की तरफ देखत हुए कहा।

"हा, वह है भी कुछ विचित्र। और वही क्या, सभी लेपतेवा के साथ यही बात है। तुम्हारा पति उतना बुरा नही है लकिन उसका भाई फ्योदोर तो पूरा मूख है।'

यूलिया चुप रही।

पेनोरोव ने ज़ोर से साँस लेकर दिली तौर पर पूछा, 'क्या तुम्हारा

कोई प्रेमी भी है ?"

यूलिया ने उसकी ओर विस्मय से देखा और हँस पड़ी, "हे ईश्वर ! आपके पास कहने के लिए यही एक बात है !"

११ बजे के करीब वे एक बड़े स्टेशन पर नीचे उतरे और रेस्तराँ में उन्होंने खाना खाया। जब वे फिर डिब्बे में पहुँचे तो येनोरोव ने अपना कोट और टोपी उतार दी और यूलिया की बगल में आ बैठा।

"मैं मानता हूँ कि तुम बहुत मीठी हो," उसने कहना शुरू किया, "अगर मैं यह कहूँ कि तुम एक ताज़ी चुनी हुई कगारी ककड़ी की तरह हो जिसमें से अभी भी गरम घर (शीत प्रदेश में पौधे लगाने के लिए शीशे के घर बना लिये जाते हैं) की महक आ रही हो, साथ ही उसमें हल्का नमक और सोये की महक भी मिली हो तो इस नीरस तुलना के लिए मुझे क्षमा करना। तुम्हारा ढाँचा एक बहुत सुन्दर, प्यारी और चुस्त औरत का है। काश, हम लोग पाँच वर्ष पहले इस तरह साथ-साथ सफ़र किये होते !" उसने आह भरी, "तब मेरा यह कर्तव्य होता, और इससे मुझे खुशी होती कि मैं भी तुम्हारे प्रशंसकों में एक बनूँ, लेकिन अब दुख है कि मैं बेकार हो चुका हूँ।"

उसने उदास, लेकिन आकर्षक ढंग से मुस्कराकर अपना हाथ यूलिया की कमर में डाल दिया।

"आप ज़रूर पागल हैं" वह डर से सिकुड़ती और शर्म से लाल पड़ती हुई काँपने लगी। फिर उसने उसी तरह हाँफते हुए कहा, "ग्रिगोरी निकोलाइविच, मुझे छोड़ दीजिए !"

"तुम्हें किस बात का डर है मेरी प्यारी !" उसने कोमलता से कहा, "बस, तुम्हें आदत नहीं पड़ी है !"

जब कोई औरत उसके प्रेम निवेदन को अस्वीकार करने लगती है, तो वह इसे अपनी विजय का निश्चित चिह्न समझता है। यूलिया की कमर को मज़बूती के साथ पकड़े हुए उसने उसके गालों को फिर होंठों को इस विश्वास के साथ चूमा कि वह उसे दुनिया का सबसे बड़ा आनन्द दे रहा है। यूलिया उलझन और डर से राहत पाते ही हँसने लगी।

"यही सब कुछ है, जो तुम एक पुंसत्वहीन मर्द से पा सकती हो,

उसने उसे एक बार और चूमकर अपनी हास्यजनक टोपी पहनते हुए कहा 'कभी तुर्की में एक पाशा था—एक बहुत ही अच्छा बूढ़ा आदमी। उसे एक पूरा जनानखाना उपहार में मिला था उसने इसे पैतृक सम्पत्ति के रूप में पाया—मैं कह नहीं सकता कि कैसे। जब उसकी प्यारी जवान बीवियाँ एक कतार में खड़ी हुई, तो वह कतार के पास गया और क्रम से एक एक को उसने चूमा और कहा, 'बस, सिर्फ इतना ही मैं तुम्हें इस समय दे सकता हूँ।' बस, यही मैं भी कहता हूँ।"

यह सब यूलिया को बहुत ही बेवकूफी से भरा हुआ और अजीब लगा लेकिन इससे उसका मनोरंजन जरूर हुआ। उसका भी खुराफात करने का मन हुआ। वह ऊपर की सीट पर चढ़ गयी और धीरे धीरे गुनगुनाते हुए अपने बक्स से एक मिठाई का डिब्बा निकाला और पेनो रोव की ओर एक चाकलेट फेंकते हुए बोली "लो!"

उसने उसे लोक लिया। दूसरी चाकलेट फेंकते हुए वह प्रसन्नता से हँसी, फिर तीसरी। वह सभी को लोकता गया और उसकी ओर और भी चाहने की मुद्रा में देखते हुए मिठाइयों को निगलता रहा। यूलिया यह सोचे बगैर नहीं रह सकी कि उसके चेहरे और व्यवहार में कुछ आकर्षक और बच्चों का सा है। जब वह नीचे आकर साँस रोके हुए बैठ गयी और उसकी ओर आनन्द के साथ देखने लगी, तो उसने अपनी उँगलियों से उसका गाल छुआ और उसके नख़रे का मज़ाक बनाते हुए बोला, "क्या नटखट बच्ची!"

'लो इसे!' यूलिया ने उसे पूरा डिब्बा देते हुए कहा, 'मैं मिठाइयाँ पसन्द ही नहीं करती।"

उसने सारी मिठाइयाँ निगल ली और खाली डिब्बे को अपने सूटकेस में रख लिया। उसके मन में ऐसे डिब्बों के लिए कमज़ोरी है जिन पर तस्वीरें बनी हों।

'बहुत बेवकूफी हो चुकी,' उसने कहा, 'अब यह इस नकारे के सोने का समय है।'

उसने अपना सोते समय पहनने का चोगा और तकिया निकाला और अपने को चोगे से ढककर लेट गया।

'नमस्कार, मेरी प्यारी।' फुसफुसाकर कहा और उसने गहरी साँस भरी मानो उसके सारे शरीर में चुभन हो रही हो।

थोड़ी ही देर बाद उसकी नाक बोलने लगी। यूलिया भी बिना कुछ संकोच महसूस किये नटकर सो गयी।

दूसरे दिन सुबह जब वह स्टेशन से घर की ओर सवारी में चली तो उसे शहर की सड़कें जनशून्य लगीं। बर्फ भूरी भूरी और सारे घर छोटे और बाहर की ओर कुछ खिंचे खिंचे लगे। रास्ते में उसे एक जनाज़ा जाता मिला। शव एक टिकटी पर खुली हुई गाड़ी में रखा था और उस पर चर्च के झण्डे लगे थे।

'लोग कहते हैं मुर्दे का मिलना अच्छा शकुन है' उसने सोचा। उसने उस मकान पर 'किराये के लिए खाली है' का नोटिस देखा, जिसमें नीना फ्योदोरोव्ना रहती थी।

दिल की तेज़ धड़कन के साथ वह अपने घर की ओर बढ़ी और उसने घण्टी बजायी। एक नयी नौकरानी ने मकान का दरवाज़ा खोला। वह एक मोटी और सोयी-सोयी सी आँखोंवाली लड़की थी और उसने गरम जमावदार जाकेट पहन रखा था। जब वह बिना झाड़ू लगी गन्दी सीढ़ियों पर चढ़ने लगी, तो उसे याद आया कि यह वही जगह है जहाँ लेपतेव ने उससे शादी का प्रस्ताव किया था। ऊपर ठण्डे बरामदे में उसके पिता के मरीज़ भारी भारी ओवरकोट पहने भीड़ में अपनी बारी का इन्तज़ार कर रहे थे। किन्हीं कारणों से यूलिया का दिल बहुत तेज़ी से धड़कने लगा और वह कमज़ोरी महसूस करने लगी। डाक्टर पहले से अधिक तगड़ा हो गया था। उसका चेहरा ईंट की तरह लाल था और वह बालों में बिना कंघी किये बैठा चाय पी रहा था। वह यूलिया को देखकर खुश हुआ और थोड़ा रो भी पड़ा। इस बूढ़े की ज़िन्दगी में वही एक खुशी थी। भावनाओं के आवेश में उसने गहरे प्यार से उसका स्वागत किया और कहा कि वह अब काफ़ी दिन तक उसके पास रहने के लिए आयी है, कम से-कम ईस्टर तक के लिए। कपड़े बदलकर यूलिया

खाने के कमरे में चाय पीने आयी, तो डाक्टर जेबों में हाथ ठूंसे इधर-उधर चक्कर काटता रहा और 'ह' की ध्वनि निकालता रहा, जो उसके किसी चीज़ से नाराज़ होने का लक्षण था।

"तुम मास्को में प्रसन्नतापूर्ण जीवन व्यतीत कर रही हो,' उसने कहा, 'मैं तुम्हारी ओर से बहुत प्रसन्न हूँ। जहाँ तक मेरी बात है, तो मेरे जैसे बूढ़े को और क्या चाहिए? मैं जल्दी ही मृत्यु के मुंह में चला जाऊँगा और लोगों को राहत मिलेगी। आश्चर्य की बात तो यह है कि मेरे शरीर का ढांचा इतना फ़ौलादी और मज़बूत है कि अब भी जीता जा रहा हूँ, आश्चर्य है!"

उसने कहा कि वह बूढ़ा और सख्त काम करनेवाला ऐसा गधा है कि जिस पर हर आदमी चढ़ चुका है। यह वही था जिसने नीना फ्योदरोव्ना की चिकित्सा की, उसके बच्चों की देखभाल की और शव-यात्रा का प्रबन्ध किया। उस दम्भी पनारोव ने कुछ भी करने से इन्कार कर दिया, यहाँ तक कि उसने उससे सौ रूबल उधार लिए और अब तक नहीं लौटाये।

'अच्छा हो कि तुम मुझे मास्को ले चलो और किसी पागलखाने में रख दो!" डाक्टर ने कहा, 'मैं पागल हूँ, मैं एक भोला-भाला बच्चा हूँ, जो अब भी अच्छाई और न्याय में विश्वास करता है।"

फिर वह उसके पति के बारे में बातें करने लगा कि वह इतना अदूरदर्शी है कि उसने वे मकान नहीं खरीदे, जो बहुत ही सस्ते बिक रहे थे। यूलिया अब तक यह महसूस करना छोड़ चुकी थी कि अकेली वही इस बूढ़े आदमी के जीवन की प्रसन्नता है। जब वह अपने मरीज़ों को देखने लगा तो वह उद्देश्यहीना सी कमरों में घूमती रही। उसने अपने जन्म के शहर में और स्वयं अपने घर में कुछ बदला बदला-सा महसूस किया। उसके मन में बाहर जाने की या किसी से मिलने की इच्छा ही नहीं पैदा हुई और जब उसने लड़कपन के दोस्तों के बारे में तथा शादी के पहले के अपने जीवन के बारे में सोचा, तो उसे कोई दुख या उदासी नहीं महसूस हुई।

शाम को वह अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनकर प्रार्थना में गयी।

लेकिन वहा सीधी सादी जनता के अलावा दूसरा कोई नही था और उसके बढिया कोट ने वहा कोई प्रभाव नही डाला। उसे एसा लगा, जैसे उसके और चर्च दोनो के अन्दर कुछ परिवर्तन हो गया है। वह सन्ध्या प्रार्थना म धर्मसूत्र के पाठ को कितने प्रेम से सुनती थी। लेकिन अब वह प्रार्थना के समाप्त होने की उद्विग्नता के साथ प्रतीक्षा कर रही थी और चर्च से बाहर आते समय उसके मन मे मात्र इतनी इच्छा थी कि भिखमगे उससे भीख न मागे तो अच्छा है, नही तो उसे रुककर जेबें टटोलनी पडेंगी इसके अलावा अब उसके पास ताबे के सिक्को की जगह चादी के रूबल ही होते हैं।

वह बहुत जल्दी ही सोने चली गयी पर बहुत देर तक उसे नीद नही आयी और जब उसे नीद आयी, तो उसे स्वप्न मे शव-यात्रा का वह जुलूस दिखायी पडा, जो उसने सुबह आते हुए देखा था। उसने देखा कि मृतक की खुली हुई पेटी उसके आगन मे लायी गयी है और देर तक आगे-पीछे झूलती रहने के बाद वह जोर से फेंक दी गयी है, जिससे वह एका एक दरवाजे से टकरा गयी है। वह जगकर डर के मारे बिस्तर से कूद पडी। नीचे दरवाजे पर कोई दस्तक दे रहा था।

उसने डाक्टर को खासते, नौकरानी को नीचे जाते और लौटते देखा। उसके दरवाजे पर भी एक दस्तक हुई।

नौकरानी ने कहा, "श्रीमतीजी श्रीमतीजी !"

"क्या है ?" यूलिया ने पूछा।

'आपके लिए तार है।"

यूलिया ने मोमबत्ती ली और बाहर की दहलीज मे चली गयी। नौकरानी के पीछे डाक्टर अपनी कमीज पर कोट पहने खडा था और उसके हाथ मे भी एक मोमबत्ती थी।

'घण्टी खराब हो गयी है' उसने जम्हाई लेते हुए कहा, "इसे कबका बन जाना चाहिए था।"

यूलिया ने तार खोला, "हम आपके स्वास्थ्य की कामना करते हैं— यार्त्सेव कोचीवाई।' उसने पढा।

'कैसी बेवकूफी है!" उसने कहा और हस पडी, लेकिन एकाएक

उसका दिल दुखा और अशान्त हो उठा।

अपने कमरे में लौटते हुए उसने धीरे से हाथ मुँह धोया और रात में अपना सामान ठीक करती रही। दूसरे दिन दोपहर को वह मास्को के लिए रवाना हो गया।

ग्यारह

मिस्टर-गप्लाह में एक दिन पूरा लपतव परिवार आर्टस्कूल में चित्रों की एक प्रदर्शनी देखने गया। मास्को की प्रथा के अनुसार सारा परिवार एक साथ गया। दोनों बच्चियाँ, उनकी नर्सें और कोस्त्या भी साथ गये।

लपतव को सारे प्रसिद्ध कलाकारों के नाम मालूम थे और वह कोई भी प्रदर्शनी देखना नहीं भूलता था। वह कभी कभी खुद भी, जब गरमियों में देहात जाता था, तो चित्र बनाया करता था और उसका विश्वास था कि उसमें कला के प्रति गहरी रुचि है। अगर उसने कला का अध्ययन किया होता, तो वह अच्छा कलाकार बनता। जब भी वह बाहर जाता तो पुरानी, संग्रहणीय वस्तुओं की दूकानों में ज़रूर जाता और एक पारखी का दिखावा करते हुए चीज़ों को देखता, अपनी राय देता और अन्त में कोई चीज़ खरीद लेता, जिसके लिए दूकानदार मन माना मूल्य ले लेता और बाद को वह खरीदी हुई वस्तु पैकिंग के डिब्बे में बँधी-बँधायी गाडियों की छत में तब तक पड़ी रहती जब तक कि वह गायब न हो जाती, या वह किसी पुरातत्व का सामान बेचनेवाले के

मढ़ा जाता और छपाई या फ्रेम के सामान का ध्यान से देखता, कला-कारिता की समालोचना करता और कोई छोटा-सा सस्ता चौखटा या रद्दी कागज फेंकने की टोकरी खरीद लाता। उसके घर में जो चित्र लगे थे, वे बड़े आकार के और अधिकांश सामान्य थे। जो भी अच्छा चित्र उसके पास था, वह भद्दे ढंग से टँगा रहता था। उसने बहुत-से चित्रों के लिए बहुत ज्यादा पैसा दिया था, लेकिन बाद को पता चला था कि वे सब रद्दी अनुकृति मात्र थे। यद्यपि वह बहुत सी चीजों के बारे में संकोची था लेकिन उस कला प्रदर्शनी के बारे में वह अनिरिक्त उत्साह और आत्मविश्वास का परिचय दे रहा था।

यूलिया सरजीविना ने अपने पति की तरह एक आंख बन्द करके या मुट्ठियों के सूराख से देखकर चित्रों का परीक्षण किया और तारीफ की कि चित्रों में बनी हुई मनुष्य-आकृतियां जीवित-सी नजर आ रही हैं और पेड़ तो ऐसे लगते हैं मानो सचमुच के ही हों। सभी चित्रों में उसे समानता दिखायी पड़ी लेकिन उसका विश्वास था कि कला का मन्तव्य मात्र इस बात में है कि आदमी और दूसरी अन्य वस्तुओं की जो भी आकृतियां उसमें बनायी जायें, वे मुट्ठियों से या एक आंख बन्द करके देखने पर सच्ची मालूम हों।

उसके पति ने उसे बताया, "यह शिशकिन का जंगल है।" उसने और कोई संकेत नहीं किया। "उस बर्फ को देखो, बर्फ कभी भी वैसा बैंगनी नहीं होता। उस लड़के का बांया हाथ दाहिने से छोटा है।"

अन्त में जब उनमें से सभी थककर चूर हो गये और लेपतेव कास्त्या को लेने बाहर गया, जिससे कि वे लोग घर जा सकें, तो यूलिया एक छोटे चित्र के आगे उसे एक भिन्न स्तर का मानकर रुक गयी।

उस चित्र में एक छोटी-सी नदी थी जिस पर लकड़ी का पुल बना हुआ था और दूसरी ओर का रास्ता दूर गहरे रंग के कछार में डूबा हुआ था, और चारों ओर रात के समय के जंगल की झालर बनी थी। उसमें जानवर चरानेवालों का एक अलाव भी था और क्षितिज के पास आकाश अब भी धधक रहा था।

यूलिया ने उस पुल और रास्ते पर टहलते हुए आगे और आगे उस

धूप की हल्की रोशनी की ओर बढ़ने की कल्पना की, जहाँ जमीन का किनारा साया हुआ दम तोड़ रहा था, और दूर पर आग की लपटें उठ रही थीं। वे बादल, वह जंगल और घाटी भी उसे इन में परिचित लगते थे। उसने उन्हें बहुत पहले कई बार देखा था, लेकिन उसके ऊपर एक गहरा अकेलापन छा गया और वह सूर्यास्त की दिशा में दूर तक उस बादल के रहस्यात्मक टुकड़े की ओर उसी रास्ते से जाने की इच्छा से अभिभूत हो गयी।

"ऐसा ही अद्भुत चित्र है!" वह यह जानकर विस्मित थी कि उसने चित्र को समझ लिया है। "अलेक्सी देखो, क्या तुम इस चित्र को बिल्कुल महसूस नहीं करते?"

उसने चित्र को क्यों पसन्द किया, यह समझाने की कोशिश की लेकिन कोस्त्या और उसके पति में से किसी ने कुछ भी नहीं समझा। एक उदास हँसी के साथ और इस बात से क्षुब्ध होकर भी कि उसमें कोई विशेष बात किसी को नहीं मिली, वह उस चित्र को निहारती रही। वह एक बार लौटकर सभी तसवीरों को दुबारा देखती हुई लौटी। उसका खयाल था कि वे सभी समान रही हैं। जब वह घर लौटकर आयी, तो उस बड़े चित्र ने, जो बैठक में पियानो के ऊपर लगा था, उसके ध्यान को पहली बार आकर्षित कर लिया।

"किसी को ऐसे चित्र रखने की इच्छा ही क्या हो?" उसने तात्कालिक जुगुप्सा से कहा।

उसके बाद मोने में मढ़ा हुआ सींग फूलों के कढ़ाववाला वर्नीशियन दर्पण और दूसरी तसवीरें, जो पियानो पर टंगी तसवीर की तरह ही थीं और कास्त्या से उसके पति की कला सम्बन्धी रुचि की बहस ने उसे विरोध घुटन और कभी-कभी घृणा तक से भर दिया।

किसी उद्देश्य के अभाव में जीवन रोज-रोज बिना किसी विशेष बात के आगे बढ़ता रहा। थियेटर का मौसम बीत गया और गरमी आ गयी।

एक दिन सुबह लेपतेव परिवार जिला अदालत मे एक मुकदमे म कोस्त्या की सफाई सुनने गया। वे घर से कुछ देर मे निकले, इसलिए जिस समय वे कचहरी पहुचे, वहाँ गवाहो स जिरह हो रही थी। गवाह बहुत सारे थे और व सभी धोबिनें थीं। उन्होने कहा कि अभियुक्त हमेशा धुलाई-घर आता था और धोबियो मे मिलता था। घटना के दिन वह खूब पीकर रात को देर से कुछ और अधिक पीने के लिए पैसा मांगने आया, लेकिन उसे पसा देने से इन्कार कर दिया गया। एक घण्टे बाद वह लडकियो के लिए पिपरमिण्ट और बिस्कुट लेकर फिर लौटा। सभी लोग सारी रात गाते और नाचते रह। सुबह पता चला कि अलमारी तोड डाली गयी है और तीन मदानी कमीजें, एक स्कट और दो चादरें कपडा की गड्डी मे से चुरा ली गयी ह। कोस्त्या के चेहरे पर खिल्ली उडाने-वाली मुस्कान नाच उठी और उसने पूछा कि उस दिन अभियुक्त द्वारा लायी गयी शराब उनमे से किसी ने पी थी? वह स्पष्टत यह सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहा था कि धोबियो ने खुद कपडो को चुराया था। कोस्त्या ने बिना किसी भावावेग के अपनी बातें कही और उसकी आँखें लगातार जूरी की ओर लगी रहीं।

उसने छिछोरी और मामूली चोरी का अन्तर स्पष्ट किया। अत्यन्त पिटे पिटाये पुराने ढग मे वह विस्तार और इमानदारी से बोलता रहा, फिर भी यह समझना मुश्किल था कि वह किस चीज के बारे म बोल रहा है। सिर्फ इतना ही नतीजा कोइ जूरी निकाल सकता था कि यह छिछोरी की घटना है, चोरी की नही। चूकि चुराये हुए धुलाई के कपडे शराब खरीदने के काम में लाये गय, जिसे धोबिनो ने भी पिया, इसलिए अगर चोरी हुई, तो उसे चोरी नही कहा जा सकता। लेकिन यह सब वैसा ही हुआ जसा होना चाहिए था, क्योकि जूरी और जनता दोनो उसकी वकालत स बहुत प्रभावित मालूम पडते थे, जिसे सफलता माना जा सकता था। जब अदालत ने निर्दोष होने का फसला दिया, तो यूलिया ने कोस्त्या को देखकर सिर हिलाया और बाद को बडे जोरों से उससे हाथ मिलाया।

मई के महीने मे लेपतेव परिवार सोकोलनिकी के अपने देहाती घर मे चला गया। उस समय यूलिया गर्भवती थी।

बारह

करीब एक साल क बाद सोकोलनिकी मे वे लोग घास पर बठे थे। यह जगह यारोस्लावल की रेलव लाइन स बहुत दूर नही थी। कोस्त्या उनसे कुछ दूर सिर के नीचे हाथ लगाये लेटा हुआ था और एकटक आकाश को निहार रहा था। व टहलते टहलते थक गय थे और चाय के लिए घर लौटन से पहले ६ बजे की गाडी के चले जाने की प्रतीक्षा कर रह थे।

माताए हमशा अपने बच्चो को विशिष्ट प्रकार का सोचती हैं और यह स्वाभाविक भी है' यूलिया कह रही थी,   बच्च की चारपाई की बगल म घण्टा खड रहकर उसके न्हे-न्हे कान, आँखें और नाक निहार सकती हैं। वचारिया का ग्याल है कि उनके बच्चे को चूमकर लोगो को सबस बडे आनन्द की अनुभूति होती है। वे अपन बच्चे के अलावा किसी दूसरी चीज के बार म बात ही नही कर सकती। मैं माताओ की इस कमजोरी को जानती हू और अपन को इसस बचाने की भी कोशिश करती हूँ लकिन मरी न्ही ओल्गा सचमुच सबस अलग तरह की है। कितना नन्हा सा चतुराई स भरा हुआ चेहरा है उसका। किस तरह हँसती है। सिफ आठ महीने की है लकिन मैंने इतनी प्रतिभा-सम्पन्न आँखोवाला तीन बरस का भी बच्चा नही देखा।

ऐमे ही पूछ रहा हूँ लेकिन मुझे एक बात बताइए' यात्सव ने उसस पूछा   आप अपनी बच्ची और अपने पति म किसे अधिक प्यार करती है ?

यूलिया ने अपना क्न्धा झटका।

'मैं नही जानती" यूलिया ने   उत्तर दिया 'मैंने कभी भी अपने पति को बहुत ज्यादा प्यार नही किया। असल म ओल्गा ही मरा प्यार है। तुम जानते हो कि मैंने जब अलेक्सी म शादी की तभी उन्हे प्यार नही करती थी। तब मैं बहुत बेवकूफ थी। पहले तो मैंने बहुत दुख झेला सिफ इसलिए कि मैंने अपनी और साथ साथ उनकी भी जिन्दगी नष्ट कर दी है लेकिन अब मैं समझ गयी हूँ कि प्यार जरूरी नही बेमानी है।'

"लेकिन वह कौन-सा बंधन है, जो बिना प्यार के भी आपको पति से बाँधे हुए है ? ऐसी स्थिति में आप उसके पास रहती ही क्यों है ?"

"मैं कह नहीं सकती शायद आदत ही इसका कारण हो। मैं उनका आदर करती हूँ और जब वह देर तक मुझसे दूर रहते हैं, तो खालीपन भी महसूस करती हूं, लेकिन इतना ही प्यार नहीं है। वह एक होशियार और चतुर आदमी हैं और मुझे प्रसन्न रहने के लिए इतना काफी है। वह बहुत ही कृपालु और अच्छे हैं '

'अलक्सी होशियार हैं अलक्सी दयालु है" कोस्त्या अपना सिर सुस्ती के साथ उठाते हुए धीरे से बोला, 'लेकिन मेरी प्यारी बच्ची, किसी को यह पता लगाने के लिए कि वह कितना चतुर और कितना कृपालु है, कम-से-कम डेढ़ मन नमक खाना पड़ेगा। इसके अलावा उसकी अच्छाई और चतुरता से फायदा क्या है ? वह तुम्हें उतना पैसा दे देता है जितना तुम चाहती हो ! इतना ही वह कर सकता है, लेकिन जब जरा-सी सख्ती की जरूरत पड़ती है जब किसी बदमाश और आवारा से काम पड़ता है, तो वह भागकर अपने अन्तर में घुस जाता है। तुम्हारे अलक्सी की तरह के आदमी बहुत अच्छे होते हैं, लेकिन संघर्ष के लिए वे बेकार होते हैं। मोटे तौर पर वे किसी भी चीज के लिए अच्छे नहीं होते ।

आखिर गाड़ी दिखायी पड़ी। चिमनी से निकलती हुई गहरे लाल रंग की भाप जंगल में फैल गयी। उसकी पिछले डिब्बे की दो खिड़कियाँ सूरज की रोशनी में इतनी तेज चमक रही थीं कि उनकी ओर देखने में तकलीफ होती थी।

यूलिया सरजीविना ने उठते हुए कहा, "चाय का समय हो गया !"

वह भरी भरी सी प्रौढ़ स्त्री की तरह निढाल होकर चल पड़ी।

'बात यही रही ! बिना प्यार के, सबकुछ बुरा है,' यार्त्सेव ने उसके पीछे चलते हुए कहा, "हम लोग प्यार के बारे में इतना पढ़ते हैं, इतनी बातें करते हैं लेकिन स्वयं प्यार बहुत कम करते हैं। यह अच्छी बात नहीं है !"

"वह सब कूड़ा है," यूलिया ने कहा, "प्रसन्नता तो उसे नहीं ही

कहा जा सकता।"

उन्होंने छोटी सी फुलवाड़ी में बैठकर चाय पी। वहाँ सुगंधित फूल, बाकू और लिली के पौधे उगे हुए थे और लम्बी पखुड़ियोंवाली कुमुदनी धीरे धीरे खिल रही थी। यार्त्सेव और कोचोवाई देख रहे थे कि यूलिया सरजीविना के चेहरे पर सन्ताप की आभा उभर आयी है और वह उससे ज्यादा कुछ भी नहीं चाहती, जो उसके पास है। उसकी ओर देखने से उन्हें भी दुनिया शान्त और सुखपूर्ण लग रही थी। जो कुछ भी बातें हुई, वे विषय के अनुरूप और चतुराई से ही की गयी थीं। चीड़ के पेड़ सुन्दर थे और उनसे उड़नेवाली खुशबू रोज से अधिक मनोहारी थी, मक्खन का तो क्या कहना था, और साशा बड़ी अच्छी बच्ची थी।

चाय के बाद वे अन्दर गये और यार्त्सेव ने पियानो पर प्रेम का एक गीत गाकर सुनाया। बीच बीच में यूलिया उठती और अँगूठों के बल चलकर अपनी बच्ची और लीदा का, जो दो दिन से बुखार में निराहार पड़ी थी देख आती।

"मेरी प्रिय, मेरी प्राणप्रिय", यार्त्सेव ने गाया। "नहीं, मेरे दोस्त !" उसने अपना सिर ऊपर झिटकते हुए कहा, *"जो चाहो, वह कहो, लेकिन* मेरी समझ में नहीं आता कि तुम प्रेम के विरुद्ध क्यों हो। अगर मैं दिन-भर पन्द्रह घण्टे काम में व्यस्त नहीं रहता, तो यह निश्चय था कि मैं प्यार करने लगता।

रात का खाना छज्जे पर लगाया गया। शाम गरम और खामोश थी, फिर भी यूलिया ने अपने को एक शाल से ढँक रखा था और सीलन की शिकायत कर रही थी। जब अँधेरा गाढ़ा हो गया, तो वह बेचैन हो उठी। खुद काँपती रही और अपने मेहमानों को कुछ देर और टहलने के लिए कहती रही। खाने के बाद उसने नौकरों से फ्रांसीसी ब्राण्डी ले आने को कहा। वह बच्चों के साथ अकेली नहीं रहना चाहती थी।

मैं और मेरे पड़ोसी यहाँ देहात में बच्चों के लिए एक नाटक करने की योजना बना रहे हैं,' उसने कहा, "हमारे पास सबकुछ है। एक

थियेटर भी है और ऐक्टर भी है, लेकिन कमी है, तो बस एक नाटक की। हमारे पास बारह-चौदह भिन्न भिन्न प्रकार के नाटक हैं, लेकिन उनमें से एक भी हमारे उपयुक्त नहीं है। तुम तो थियेटर को समझते हो और इतिहास की भी तुम्हारी जानकारी है," उसने यार्त्सेव से कहा, "क्या तुम हमारे लिए एक ऐतिहासिक नाटक लिख सकते हो?"

"मुझे कोई एतराज नहीं है।"

आगन्तुकों ने सारी शराब खत्म कर दी और जाने की तैयारी करने लगे। दस बज चुके थे और देहात के लिए यह काफी देर हो चुकी थी।

कितना अँधेरा हो गया है! मुझे तो कुछ दिखायी नहीं पड़ रहा है" यूलिया दरवाजे पर उन्हें विदा देते हुए बोली, "तुम लोग घर कैसे पहुँचोगे? कितनी ठण्ड है!'

उसने अपनी शाल अधिक कसकर अपने चारों ओर लपेट ली और घर में लौट आयी।

'मेरा अलेक्सी कहीं ताश खेल रहा होगा!" उसने उनके जाने के बाद पुकारकर कहा, "नमस्कार!"

कमरे की तेज रोशनी से एकाएक बाहर जाने के कारण यार्त्सेव और कोस्त्या को कुछ भी दिखायी नहीं पड़ रहा था।

"कम्बख्त कुछ भी तो नहीं सूझता,' कोस्त्या जोर से बोला और रुककर आकाश को घूरने लगा, 'लेकिन जरा तारों को देखो, एकदम नये सिक्कों की तरह चमक रहे हैं!'

अँधेरे से यार्त्सेव की आवाज आयी, "क्या कहा?"

"मैंने कहा गहरा अँधेरा है। तुम कहाँ हो?"

यार्त्सेव सीटी बजाता हुआ आया और उसने उसका हाथ पकड़ लिया।

'अच्छा, यहाँ हो भले आदमी! कोस्त्या जोर से चिल्लाया।

"उन्होंने एक समाजवादी को पकड़ लिया है!"

वह पी लेने पर बहुत शोर मचाता, जोर-जोर से चीखता, पुलिस से झगड़ा मोल लेता, गाता और ठहाके लगाता।

धीरे धीरे उनकी आँखें अँधेरे की आदी हो गयीं और चीड़ के पेड़ों और तार के खम्भों की शक्लें अँधेरे में उभरने लगीं। यह रहकर मास्को

स्टेशन के याड में कोई इंजन सीटी देता था और तार के तारों से सन्नाहट की आवाज आने लगती थी, लेकिन जंगल से कोई आवाज नहीं आती थी और ऐसा लगता, जैसे उस खामोशी में गर्व, दृढ़ता और रहस्य छिपा हुआ है और चीड़ की फुनगियाँ आकाश को छू रही हैं। दास्ता को रास्ता मिल गया था और वे उस पर मुड़ गये। यहाँ अँधेरा और गहरा था। ऊपर सिर्फ तारों भरे आसमान और पैरों के धरती पर पड़ने मात्र से वे जान रहे थे कि वे ठीक रास्ते पर चल रहे हैं। वे अगल-बगल चुपचाप बढ़े जा रहे थे और उन्हें लगता था, जैसे अँधेरे में कोई उनकी तरफ बढ़ा आ रहा है। शराब का नशा उतर चला था। यार्त्सेव को लगा, जैसे इन जंगलों में जादूगरों, सामन्तों और पितृवादियों की प्रेतात्माएँ निवास करती हैं। वह इस बात को कोस्त्या से बताना चाहता था, और फिर उसने अपना विचार बदल लिया।

जब तक वे शहर के बाहरी हिस्से के पास पहुँचे, दिन की पहली किरणों का आभास आकाश में उभर चुका था। सस्त फ्रेम के घरों को पार करके होली और कबाड़खाने के अहाते को पार करते समय उन्हें सीलन के साथ नीबू के फूलों की मिली जुली खुशबू मिली और वे एक लम्बी चौड़ी, एकदम सुनसान काली सड़क पर पहुँच गये। जब वे लाल तालाब पर पहुँचे, तो दिन की रोशनी चारों ओर फैल गयी थी।

'मास्को को अब भी बहुत-से कष्टों से गुजरना बाकी है' यार्त्सेव ने उस समय कहा जब वे अलेक्सेईव की मठ के पास से गुजर रहे थे।

'*आखिर यह तुम्हारे दिमाग में किस कारण आया?*'

"मैं नहीं जानता। मैं मास्को को प्यार करता हूँ।'

यार्त्सेव और कोस्त्या दोनों का जन्म मास्को ही में हुआ था। वे इसे प्यार करते थे और किन्हीं कारणों से दूसरे शहर के लिए गलत धारणाएँ बनाये हुए थे। वे इस बात को मानते थे कि मास्को सबसे अलग तरह का शहर है और रूस सबसे विशिष्ट प्रकार का देश। क्रीमिया, काकेशस या दूर अन्य प्रदेशों में न उनका मन लगता था, न उन्हें आराम मिलता

था। उनका खयाल था कि मास्को की उदाम जलवायु से बढकर स्वास्थ्यप्रद और आनन्ददायक कुछ भी नही हो सकता। उन दिनो, जब ठण्डी बरसातें खिडकियो के शीशो पर पडती, शाम जल्दी ही हो जाती और चर्चों तथा घरो की दीवारें कुछ हल्की भूरी पड जाती, आपको यह भी पता नही चलता कि कौन-से कपडे पहनकर बाहर निकलें। लेकिन यह सब उन्ह अतीव उल्लास से भर देता था।

आखिर वे स्टेशन पहुच गये और उन्होने एक किराये की गाडी कर ली।

डिमीत्रोव्का पर दोनो दोस्त अलग हुए और यार्त्सेव निकित्स्किया स्ट्रीट के अपने निवास-स्थान के लिए गाडी म बैठकर चला। वह ऊँघता हुआ इस ओर से उस ओर लुढकता रहा और उस नाटक के बारे में सोचता रहा, जो उसे लिखना था। उसे लगा कि एकाएक कोई डरावना शोर हथियारो की खनखनाहट और किसी अपरिचित भाषा की चीखें जो शायद कालमुक की थी, उसके काना मे पड रही हैं। उसने एक गाँव को लपटो मे घिरा देखा और उसके चारो ओर के गहरे कुहरे मे तुर्की के जगल लपटो के कारण फीके रग मे इतने स्पष्ट दिखलायी पडे कि हर छोटा दवदार का पड अलग खडा हुआ प्रतीत आया। गाव के बीच म जगली लोग घोडे पर सवार और पैदल भागे जा रहे थे। घोडे और आदमी उसी प्रकार हल्के पिलछहे दीखते थे, जैसे आसमान।

यार्त्सेव न सोचा, यह पोलोव्त्सी है।

उनमे से एक खूखार और रक्तिम चेहरेवाला बूढा था जिसका शरीर जगह-जगह जला हुआ था। उसने एक सफेद रूसी चेहरेवाली लडकी को घोडे की जीन स बाध रखा था।

बूढा भयकर रूप से चिल्ला रहा था और लडकी उदास और विचार की मुद्रा म उसकी ओर दख रही थी यार्त्सेव ने अपने को झटका देकर जगा लिया।

'मेरी प्यारी मरी प्राणप्रिय!' वह भुनभुनाया।

उसने गाडीवाले का किराया चुकाया और सीढी से ऊपर अपने कमरे मे चला गया। लेकिन अब भी वह उस स्वप्न से मुक्त नही हो

पाया था और गाँव के ऊपर फैली लपटों या देख रहा था। जंगल सुलगता और चिटखता रहा और एक बहुत बड़ा जंगली सूअर डर के मारे पागल होकर गाँव के बीच से हाता हुआ भागा जीन से बँधी हुई लड़की ने भी उसे देखा।

जब वह कमरे में घुसा, तो दिन की तेज रोशनी चमक रही थी। मेज पर मोमबत्ती जल रही थी। राजूदिना काले वस्त्र पहने, हाथों मे समाचारपत्र लिये, सोफे पर *गहरी निद्रा म सोयी थी। साफ लगता* था कि वह बहुत देर से पियानो बजा रही थी और उसका इन्तजार करती-करती सो गयी है।

'बेचारी, जरूर थक गयी है' उसने सोचा।

धीरे से उसके हाथों स अखबार लेकर उसने एक कम्बल स ढँक दिया और मोमबत्ती बुझाकर अपने सोने के कमरे म चला गया। बिस्तर म जाते हुए भी उसे ऐतिहासिक नाटक की याद बनी रही और मेरी प्यारी, मेरी प्राणप्यारी' का संगीत उसके कानों में गूंजता रहा।

दो दिन के बाद लेपतेव कुछ मिनटों के लिए यह बताने आया कि लीदा को डिफ्थीरिया हो गया है और यूलिया और बेबी को भी उसकी छूत लग गयी है। फिर पाँच दिन के बाद समाचार मिला कि *यूलिया* और लीदा अच्छी हो रही हैं, लेकिन बच्ची की मृत्यु हो गयी और लेपतेव उसी समय शहर आ गया।

तेरह

अब लेपतेव के लिए थोडी देर भी घर मे रहना बरदाश्त के बाहर था। उसकी पत्नी यह बहाना करके कि उसे छोटी बच्चियो को पढाना है, अक्सर मकान के दूसरी तरफ चली जाती थी लेकिन लपतव जानता था कि वह कोस्त्या के कमरे म रोने गयी है। बच्ची की मत्यु के नव दिन बीसवें दिन और चालीसवें दिन अलक्सीवस्की की कब्रगाह म स्मति-सस्कार के लिए उन्हे जाना पडा था और लेपतेव के मन पर उन दिना के बाद कितने ही दिना तक शोकाकुलता छायी रही थी। उस अभागे शिशु क अलावा कोई दूसरा विचार ही उसके मन म नही आता था और नन्ही-सी-नन्ही बात भी उसे अपनी पत्नी को भरोसा देने के लिए कहनी पडती थी। अब वह मालगोदाम बहुत कम जाता और हर समय मानव-कल्याण के बारे म सोचता रहता था। अपने लिए विभिन्न प्रकार के काम खोजा करता था। किसी न किसी काम के बहाने वह सारा दिन किसी सवारी म घूमता रह जाता था।

पतझड के दिन थे। यूलिया मकान के दूसरी ओर रोने चली गयी थी और लपतेव अपने पढने के कमरे म सोफे पर लेटा सोच रहा था, कि कहाँ जाय। उसी समय प्योत्र ने राजूदिना के आने का समाचार दिया। लपतेव खुश होकर उठ खडा हुआ और आशा के विपरीत आये मेहमान से मिलने के लिए तेजी से बढा। उसने उसे ठीक उसी रूप म पाया, जसे उसने उस अतिम साझ को छोडा था।

'पोलीना!' वह अपना हाथ उसकी ओर बढाकर चिल्लाया, 'हमे मिले कितने दिन हो गये! तुम कल्पना नही कर सकती कि तुमसे मिलकर मैं कितना प्रसन्न हूँ। आओ अन्दर आ जाओ।'

पोलीना ने अभिवादन मे अपना हाथ भी झटका और बिना अपना हैट या कोट उतारे वह कमरे म आकर बैठ गयी।

'मैं तुम्हे कुछ मिनटो से ज्यादा अपने साथ नही रखूगी,' उसने कहा, 'मेरे पास तुमसे बात करने के लिए समय नही है कृपा करके

बठो और मरी बात सुन लो। तुम मुझसे मिलकर खुश हो या नहीं, यह मेरे लिए बेमानी बात है क्योंकि मैं पुरुष-वर्ग की महती कृपा को कोई महत्त्व नहीं देती। मैं तुम्हारे पास इसलिए आयी हूँ कि मैं पाँच और जगहों पर जा चुकी हूँ और हर जगह मुझे इन्कार ही मिला है और मामला बहुत जरूरी है। सुनो," वह उसकी आँखों म देखते हुए कहती गयी, "मेरे पाँच परिचित विद्यार्थी, शायद व बेवकूफ हैं और पैसा नहीं बचाते, अपनी पढ़ाई की फीस नहीं दे सके हैं और अब निकाले जानेवाले हैं। पर तुम्हारे पास धन है इसलिए तुम पर बाध्यता है कि तुम तुरन्त यूनिवर्सिटी जाकर उनकी फीस जमा कर दो।"

"खुशी के साथ, पोलीना।"

"उनके नाम ये हैं," राजदिना ने एक कागज का टुकडा देते हुए कहा, "तुरन्त चले जाओ। लौटकर अपना पारिवारिक सुख भोगना।"

इसी समय दरवाजे के पीछे एक हल्की सरसराहट की आवाज बठक की ओर जाती हुई सुनायी पडी। शायद कोई कुत्ता अपने को खुजला रहा था। राजदिना लाल होकर उछल पडी।

"तुम्हारी बीवी छिपकर कान लगाये हुए है," उसने कहा, "उफ, कितनी जलालत की बात है!"

यूलिया की इस बेइज्जती पर लेपतव छनछना उठा।

"वह यहाँ नहीं है," उसने कहा, "वह घर के दूसरे हिस्से मे है और कृपा करके उसके बारे म ऐसी बातें न करो! हमारा बच्चा अभी मर गया है और वह बहुत शोकाकुल है।

राजदिना ने व्यंग्य करते हुए कहा, "तुम उसे सान्त्वना दे सकते हो। अभी तो एक दजन और होंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि बच्चे देने के लिए दिमाग की जरूरत नहीं पडती।"

लेपतेव को ऐसी बातें बहुत पहले कितनी ही बार सुनने की याद आयी और क्षण भर के लिए वह बीते दिनों की मधुर याद मे बह गया। वे अविवाहित जीवन के मुक्त दिन थे, जब वह अपने को जवान महसूस करता था और सोचता था कि वह क्या है जो वह नहीं कर सकता।

उसने देह तोड़ते हुए कहा, "चलो, साथ ही चला जाय।"

राजूदिना बाहर इंतजार करती रही और लेपतेव यूनिवर्सिटी के दफ्तर मे चला गया।

उसने लौटकर पाच रसीदें उसे देते हुए कहा "अब तुम कहा जा रही हो ?"

'यार्तसेव के यहा।'

'मैं भी तुम्हारे साथ चलूगा।'

'वह काम कर रहा है, तुम विघ्न ही डालोगे।"

नही, मैं कोई विघ्न नही डालूगा। वादा करता हूँ।' उसने उसकी तरफ देखते हुए अपनी बात मनवाने के स्वर मे कहा।

उसने एक काला हैट पहन रखा था जिसमे क्रेप की कतरनें लगी थी, जैसे वह किसी शोक मे हो और एक छोटा-सा गन्दा कोट भी जिसमे दूर पर जेबें लगी थी। उसकी नाक हमेशा से लम्बी लग रही थी और कुहरे के बावजूद उसके चेहरे पर एक बूद खून की भी लाली नही दिखायी पडती थी। लेपतेव को दबे दबे उसके पीछे चलने मे, उसकी आज्ञा का पालन करने मे और उसकी कुढन-भरी बातें सुनने मे सुख मिलता था। वह पटरी पर इस औरत की भीतरी शक्ति के प्रभाव के कारण चलता रहा, जबकि वह विकृत, एकागी और इतनी बेचैन तबीयत की थी और इतने रद्दी कपडे पहने हुए थी कि जिन्हे पहना नही जा सकता। गन्दे बालो और मामूली रूप के बावजूद उसमे कुछ आकर्षण था।

वे यार्तसेव के फ्लैट मे पिछले दरवाजे मे घुसे जो रसोई मे खुलता था और वहाँ उनकी मुलाकात उसकी रसोईदारिन से हुई। वह एक छोटी-सी साफ-सुथरी सफेद घुघराले बालोवाली औरत थी। इन्हें देखकर उसे बडी उलझन हुई।

"कृपया इस रास्ते से,' उसने मीठी मुस्कान के साथ कहा, जिससे उसका नन्हा चेहरा कचौडी की तरह का बन गया।

यार्तसेव घर मे नही था। राजूदिना सीधे पियानो पर बैठ गयी और लेपतेव को विघ्न न डालने का हुक्म देकर गुस्से और सख्त किस्म की

कभी न समाप्त होनेवाली संगीतमाला का रियाज करने लगी। उसने उसस बात करने का प्रयत्न भी नहीं किया और कान म बैठा यूरोपियन हेराल्ड के पन्ने उलटता रहा। दो घण्टे रियाज करने के बाद, जो उसका रोज का नियम था, उसने जल्दी से गाना गाया और पड़ोस चली गयी। लेपतव न कुछ उपन्यासों को जिन्हें पहले न पढ़ रखा था, भाग पढ़ा। फिर चुपचाप दर तक बिना किसी ऊब के बैठा रहा, क्योंकि अब घर जाकर रात का खाना खाने के लिए देर हो चुकी थी।

हॉल म यार्त्सेव की "ही ही" करके हँसने की ओर की आवाज सुनायी पड़ी। स्वस्थ शक्तिसम्पन्न, लाल गालोंवाला यार्त्सेव चमकदार बटनों वाला नया कोट पहने हुए था। वह हँसता हुआ भीतर आ गया।

दोनों दोस्तों न साथ साथ खाना खाया। खाने के बाद लेपतेव सोफे पर लेट गया और यार्त्सेव उसकी बगल म बैठकर सिगरेट पीने लगा। अँधेरा चारों ओर और भी सिमट आया था।

"मैं जरूर बूढ़ा हो रहा हूँ" लेपतेव न कहा, "जबसे मेरी बहन नीना मरी है, मैं प्राय मृत्यु के बारे म सोचा करता हूँ।"

वे मृत्यु आत्मा के अमरत्व और फिर से जीवित होकर मंगल या किसी अन्य ग्रह पर उड़कर पहुँच जाने और हमेशा के लिए प्रसन्नता पूर्वक रहने और आरम जीवन व्यतीत करने के बारे म बातें करते रहे।

"अब भी मैं मरना नहीं चाहता" यार्त्सेव ने कोमलता के साथ कहा, "दुनिया मे कोई ऐसा दर्शन नहीं है जो मृत्यु के विचार के साथ मेरा समझौता करा सके। मैं इस हर चीज का अन्त मानता हूँ और जीना चाहता हूँ।"

"क्या तुम जीवन को प्यार करते हो?"

"हाँ, अवश्य।"

"जहाँ तक मेरा सवाल है मैं अपने को समझ ही नहीं पाता। मैं अन्धी निराशा और घोर उदासीनता के बीच म टूट चुका हूँ। मैं मरियल हूँ। मुझे अपने ही पर भरोसा नहीं है। मेरी आत्मा कायर है मुझम अपने को जीवन के अनुरूप बनाने और अपने भविष्य का निर्माता बनने की योग्यता ही नहीं है। दूसरे लोग बेवकूफी की बातें करते हैं और एक-

दूसरे के प्रति धोखा धडी करके आनन्द पाते हैं, जबकि मैं जान-बूझकर अच्छा काम करने मे भी उलझन और उदासीनता महसूस करने लगता हूँ। मेरा खयाल है कि इसका एकमात्र कारण मेरा परिवार और उसमे मेरा पैदा होना है। मेरे जैसे कितने ही लोग अपनी मुक्ति का उपाय सोचत सोचते ही मर जायेंगे "

"यह सब अच्छा ही है, मेरे प्यारे दोस्त !" यार्सेव न कहा और एक लम्बी सास ली, "यह एक बार और स्पष्ट कर देता है कि रूस का जीवन कितना समृद्ध, विशिष्ट और कितना समृद्धशाली है। मैं हर रोज ज्यादा से ज्यादा आश्वस्त होता जा रहा हूँ कि हम किसी महान विजय के किनारे पर हैं और मैं चाहता हूँ कि मुझे इसमे हिस्सा लेने का मौका मिले। माना या न मानो, मैं विश्वास करता हूँ कि इस समय विकसित होनेवाली पीढी अनाखी है। मैं बच्चा को पढाता हूँ—विशेषत छोटी बच्चियो को,—तो मैं प्रसन्नता से भर जाता हूँ। अद्भुत बच्चे हैं।"

यार्सेव ने पियानो के पास जाकर एक पद पर उगली मारी।

'मैं एक रसायनशास्त्री हू और रसायनशास्त्र के ही अनुरूप सोचता हूँ और रसायनशास्त्री के ही रूप मे मरूँगा।" वह कहता गया, "लेकिन मैं अति लालुप हू और पूरा सन्तोष प्राप्त करने के पहले ही मर जाऊँगा। रसायनशास्त्र ही मेरे लिए काफी नही है। मैं रूस का इतिहास पढूगा—विशेषत कला का इतिहास, शिक्षा, सगीत—सभी कुछ। पिछली गरमी में तुम्हारी बीवी ने एक ऐतिहासिक नाटक लिखने का सकेत किया था और मैं सोचता हूँ कि मैं तीन दिन, तीन रात लगातार जमकर बठू और उसे पूरा कर दू। मेरा दिमाग विचारो से इतना भर गया है कि अब वह फटने ही वाला है, यहाँ तक कि मैं उसमे हरकत महसूस करने लगा हूँ। मेरा उद्देश्य साधारण मे से एक बनने का नही है, न तो मैं महान् रचना की ही उम्मीद करता हू। मैं तो सिफ जीना चाहता हूँ और उसके लिए स्वप्न देखता हूँ, आशा करता हूँ और कुछ भी उठा नहीं रखता। मेरे प्यारे दोस्त, जिन्दगी बहुत छोटी है, हमे इसका पूरा-पूरा इस्तेमाल कर लेना चाहिए।"

उस दिन की दोस्ताना बातो के बाद, जो रात का बहुत देर तक चलती रही, लेपतव करीब राज ही यार्त्सेव के यहा आने लगा। अक्सर वह शाम का आता और सोफे पर लेटकर यार्त्सेव के लौटने का धीरज के साथ इतजार करता। खाने के बाद यार्त्सेव काम पर बठ जाता, लेकिन थोडी दर बाद ही लेपतेव कोई सवाल कर दता। इसी से बातचीत शुरू हा जाती और काम की सुधि ही भूल जाती और आधी रात गये दोना दोस्त एक-दूसरे स प्रसन्न हाकर अलग होत।

लेकिन यह बहुत दिना तक नही चल सका। एक दिन यार्त्सेव के यहा आने पर लेपतेव ने देखा कि राजूदिना पियानो पर बठी रियाज कर रही है।

'कृपया मुझे यह बतायें कि इस सबका खात्मा कब होगा ?" उसने पूरे क्रोध के साथ कहा और न तो उसकी ओर मुडी, न चूमने के लिए हाथ ही दिया।

तुम्हारा मतलब क्या है ?" लेपतेव ने क्षुब्ध होकर कहा।

"तुम यहा रोज आते हो और यार्त्सेव को काम नहीं करन देते। वह कोई रोजगारी आदमी नही, वज्ञानिक है। उसके जीवन का हर क्षण कीमती है। तुम्ह थोडी बुद्धि से काम लेना चाहिए।"

"क्या तुम सचमुच समझती हो कि मैं बाधक हूँ ?' लेपतेव न विस्मय के साथ दबे दबे कहा "तो मैं आना बन्द कर दूगा।'

"बहुत खूब ! मेहरबानी करके अब चले जाओ, नही ता वह आयगा ता तुम्हे फिर यही बठा हुआ पायगा।'

जिस स्वर म यह बात कही गयी थी और जिस उपेक्षापूण दृष्टि से उसे देखा गया था, उसने लेपतेव का पूरी तरह अव्यवस्थित कर दिया। उसने देखा कि उसके मन म अब कोई भाव उसके लिए नही रह गये हैं। वह सिफ इतना चाहती है कि वह चला जाये। यह सब पहले कितनी दूसरी तरह होता था। वह बिना हाथ मिलाये बाहर चला गया। उसे उम्मीद थी कि वह पीछे स बुलाया जायेगा। लेकिन वह तुरन्त अपना अभ्यास करने लगी और जब वह सीढ़िया उतर रहा था तो उसके दिमाग म यह बात आयी कि वह पहले से ही उसके लिए अपरिचित था।

तीन दिन बाद यार्त्सेव उसके साथ शाम बिताने आया ।

"तुम्हे सुनाने के लिए कुछ समाचार मेरे पास हैं," उसने हँसकर कहा, "पोलीना निकोलाइविना मेरे साथ रहने आ गयी है ।" धीरे धीरे यह बात कहते हुए वह कुछ घबराया-सा दिखता था, "हाँ, लेकिन हम एक-दूसरे का प्यार नही करते । मैं समझता हूँ इस सबका कोई खास महत्त्व भी नही है । मैं तो उसे रहने के लिए एक घर देकर और इस योग्य बनाकर खुश हूँ कि बीमारी की हालत म उसे काम न करना पडे । उसका खयाल है कि मेरा जीवन उसके साथ रहने पर अधिक व्यवस्थित हो जायेगा और उसके प्रभाव से मैं एक महान वैज्ञानिक बन जाऊँगा । वह यही सब सोचा करती है और उसे सोचने भी देना चाहिए । जैसाकि दक्षिणी लोग कहते हैं बेवकूफ अपने विचारो मे अधिक अमीर होता है । हो हो हो "

लेपतेव ने कुछ भी नही कहा । यार्त्सेव कमरे म चक्कर काटने लगा । वह बीच बीच मे रुककर उस तसवीर को देखता, जिसे वह पहले भी कई बार देख चुका था ।

"हाँ, मेरे प्यारे दोस्त," उसने लम्बी साँस लेते हुए कहा, "मैं तुमसे तीन वर्ष बड़ा हूँ और अब सच्चे प्यार के बारे म सोचने के लिए काफी देर हो चुकी है । सच तो यह है कि पोलीना जैसी औरत मेरे लिए ईश्वर की भेजी हुई है और इसमे सन्देह नही कि मैं उसके साथ शान्तिपूर्वक बुढ़ापे तक रह सकूँगा । लेकिन फिर भी बात यह है कि मुझे ऐसा महसूस होता है, जैसे मैंने कुछ खो दिया है । हालाँकि [illegible] म लेटा हुआ मैं महान् प्रेम की कामना किया करता हूँ । अगर दूसरे शब्दो म कहूँ, तो आदमी का कुछ भी [illegible], [illegible] उसे कभी सन्तोष नही होता ।"

फिर वह बैठक म गया और कुछ [illegible] गाने लगा, जैसे कुछ हुआ ही न हो और [illegible] [illegible] [illegible] कहा और सोचता रहा कि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । इसके कारण यह उदास हो उठा कि [illegible] और [illegible] [illegible] लगाव जैसी कोई चीज नहीं होती । [illegible] [illegible]

तीन व॥

उठा कि वह यार्त्सेव के साथ रहने क्यो चली गयी और अपने मे इस-
लिए कि वह अब अपनी पत्नी को पहले जैसा प्यार नही करता ।

चौदह

लेपतेव आरामकुरसी पर बठा पढ रहा था और विचारमग्न होकर झूल रहा था । यूलिया भी पढ रही थी । सुबह से दोनो एक शब्द भी एक-दूसरे से नही बोले थे, जसे उनके पास बात करने के लिए कुछ था ही नही । "इसम क्या अन्तर पडता है कि कोई प्रेम के लिए या प्रेम के बगैर विवाह करता है !" वह बीच-बीच म यूलिया की ओर उसकी पुस्तक के कवर को भाककर सोचता है। वे दिन कितनी दूर चले गय कि जब वह ईर्ष्यालु था ! व दिन कितनी चिन्ता और दु ख के थे ! तब स वह बाहर रहा है और अब यात्रा म लौटकर आराम कर रहा है । उसन इग्लण्ड को पसन्द किया है और बसन्त म वहाँ लौट जाना चाहता है ।

यूलिया सरजीविना अब तक अपन दुख की आदी हो गयी थी और रोने के लिए बाहर नही जाती थी। उस जाडे मे वह न तो फशन की दुकानो मे गयी, न थियेटर या सगीतसभाओ मे ही जाकर आनन्द लिया। वह बडे कमरे पसन्द नही करती, इसलिए या तो अपन पति के पढन के कमरे म या अपने कमर मे ही समय गुजारती रही, जहाँ उसन दहेज म मिला मूर्तिवाला सप और कला प्रदर्शिनी म खरीदा एक चित्र लगा रखा था।

यह जाडे का मौसम बडा ही सूना था। मास्को का हर आदमी इस मौसम म ताश खेलता था और यदि कोई गाने, पढने, या चित्रो से अपना मनोरजन करना चाहता, तो वह और भी ऊब जाता। मास्को मे प्रतिभाएँ बहुत कम थी और सगीतज्ञ और वक्ता हर जगह कायक्रम देते थे। यहा तक कि कला भी सारहीन हो उठी थी और बहुत से लोगा को थका देनेवाले ऊबाऊ काम-सी लगने लगी थी।

इसके अतिरिक्त हर नया दिन लेपतेव के लिए एक नयी उलझन पदा कर देता था। फ्योदोर स्तपानिच की दृष्टि एकदम क्षीण हो गयी थी। अब वह मालगोदाम भी नही जाता था और उसके डाक्टर ने बताया था कि जल्दी ही वह अधा हो जायेगा। फ्योदार ने भी किसी कारण मालगोदाम जाना बन्द कर दिया था और सारा दिन लिखने मे बिता देता था। पनाराव एक दूसरे शहर मे अपनी बदली कराने मे सफल हो गया था और तरक्की पाकर राज्य की काउसिल का सदस्य हो गया था। वह ड्रेसडेन होटल मे रहता था और रोज ही पसा मागने आया करता था। किश ने अन्तत यूनिवर्सिटी की परीक्षा पास कर ली थी और इस बात के इन्तजार मे कि लेपतेव उसे कोई उचित ओहदा दिला देगा, लेपतेव के घर मे पडा अपनी लम्बी-लम्बी कहानिया सुनाया करता था। इस सबके कारण लपतव बहुत ही परेशान और चिढा हुआ था और उसका जीवन दु खमय हो उठा था।

प्योत्र यह बताने के लिए आया कि कोई महिला मालिक से मिलना चाहती है। यूलिया सरजीविना थकी थकी-सी उठी और अपने पैर मे झुनझुनी चढ जाने के कारण लँगडाती हुई बाहर चली गयी। दरवाजे से एक औरत काले कपडे पहने आयी। वह दुबली पतली थी और उसके पीले चेहरे से उसकी काली भौंहे अलग अलग सी दिखायी देती थी।

"लेपतेव महाशय, मेरे नन्हे बच्चो को बचा लीजिए।" उसने हाथो को छाती से चिपकाते हुए कहा।

कगनो की खनक और पाउडर के इन धब्बो से लेपतेव परिचित था। यह वह स्त्री थी, जिसके घर उसने अपनी शादी के पहले बढे वमौके खाना खाया था। पेनोरोव की दूसरी बीवी थी यह।

मेरे नन्हे बच्चों की रक्षा कीजियगा !" उसने दुहराया। उसका चेहरा कांपा और एकाएक बूढ़ा और दयनीय दिखायी पडने लगा और आँखें लाल हो उठीं, "सिर्फ आप ही हमारी रक्षा कर सकते है। मैंने अपना आखिरी पैसा मास्को आने मे खत्म कर दिया है। मेरे बच्चे भूखा मर जायेंगे !"

ऐसा लगा, जैसे वह अपने घुटनो के बल गिर जायगी। लेपतेव ने डरकर उसके हाथो को थाम लिया।

"बैठिए, कृपया बैठ जाइए !" उसने उसे एक कुरसी के पास ले जाते हुए धीरे से कहा।

'हमारे पास रोटी तक के लिए पैसा नही है" उसने कहा "ग्रीगोरी निकोलोविच दूसरी जगह एक नये ओहदे पर जा रहे हैं, लेकिन वह मुझे और बच्चो का साथ नही ले जाना चाहते। आपने जो भी रुपया कृपा करके भेजा, वह सब उन्होंने अपने ऊपर ही खर्च किया। हम क्या करें ? मेरे गरीब अभागे बच्चे "

"अपने को सभालिए ! मैं अपने क्लर्कों को आदेश दूगा कि वे आपको व्यक्तिगत रूप से रकम पहुचायें।"

वह जोर जोर से रो रही थी, लेकिन कुछ देर के लिए शान्त हो गयी। लेपतेव ने देखा कि उसके गालो पर लगे पाउडर पर आँसुओ ने लकीरें बना दी हैं और उसकी मूछें भी हैं।

आपकी कृपालुता की कोई सीमा नही है, लेपतेव महाशय ! कृपा करके हमारे मसीहा और अभिभावक बन जाइए और ग्रीगोरी निको लोविच को समझा दीजिए कि वह मुझे न छोडें। उनसे कहिए कि वह मुझे अपने साथ ले जायें। मैं उन्हे प्यार करती हूँ, हार्दिक प्यार। सिर्फ यही एक आसरा है मेरे लिए।"

लेपतेव ने उसे सौ रूबल दिये और पेनारोव मे बात करने का वादा किया। वह उठकर दरवाजे तक पीछे पीछे गया और लगातार डरता रहा कि कहीं वह फिर रोने न लगे या घुटनो के बल गिर न पडे।

उसके जाते ही किश आ पहुचा। उसके बाद कोस्त्या अपना कमरा लिय आ गया। अभी हाल ही मे उसे फोटोग्राफी का शौक हुआ है और घर के हर आदमी की वह दिन मे कई बार तसवीरें खीचता रहता है।

उसके इस नये शौक ने उसे बड़ी परेशानी में डाल रखा है और इसके कारण उसका वज़न भी बहुत घट गया है।

चाय के समय से ठीक पहले प्रोफेसर आया। बड़े से कमरे के एक कोने में बैठते हुए उसने एक किताब खोली और उसी में देर तक घूरता रहा। साफ था कि वह कुछ भी पढ़ नहीं रहा था। जब तक उसका चेहरा लाल नहीं हो गया वह लगातार चाय पीता रहा। उसकी उपस्थिति लेपतेव के लिए एक दुखपूर्ण उदासी की तरह थी। उस खामोशी जो उसे दुखद लगती थी।

'तुम हजिरा के रूप में एक नये पत्रकार की उपाधि के लिए मुझे बधाई दे सकते हो" प्रोफेसर ने कहा, "मज़ाक की बात नहीं, अलेक्सी, मैंने एक लेख लिखा है। उसे कलम की परीक्षा ही कह सकते हो। मैं तुम्हें दिखाने के लिए उसे साथ ही लाया हूँ। इसे पढ़कर बताओ कि तुम्हारे क्या विचार हैं, लेकिन इस बात का ख्याल रखो कि मैं तुम्हारी साफ राय चाहता हूँ।"

उसने अपनी जेब से एक मोटपुर [illegible] निकालकर अपने भाई को दी। लेख का शीर्षक था 'रूसी आत्मा'। लेख बेहद शिथिल और नीरस भाषा में लिखा हुआ था, जिसे बुद्धिहीन [illegible] तौर पर निष्प्राण आदमी लिखते हैं। इस लेख का मुख्य विचार था कि प्रतिभावानों को ईश्वर में अविश्वास करने का अधिकार है, लेकिन उन्हें अपने इस अविश्वास को छिपा रखना चाहिए, जिससे दूसरे पथभ्रष्ट न हों और उनका विश्वास न डिगे। विश्वास के बिना आदर्श नहीं बन सकते और आदर्शवाद यूरोप की रक्षा करने के साथ ही मानवता को सही रास्ते पर ले जा सकेगा।

"लेकिन तुमने यह नहीं बताया कि किस चीज़ से यूरोप की रक्षा होनी है।" लेपतेव ने कहा।

"यह तो स्पष्ट ही है।"

"इस तरह की कोई बात नहीं है," लेपतेव ने कहा और उठकर टहलने लगा, 'तुमने यह लेख क्यों लिखा, यह भी स्पष्ट नहीं है।"

भी हो, यह तुम्हारा अपना मामला है।"

"मैं इसे एक पम्फ्लेट के रूप म प्रकाशित कराना चाहता हूँ।"

"यह तुम्हारा अपना मामला है।"

कुछ क्षण तक दोना मौन रहे।

"मुझे सचमुच बहुत खेद है कि हम-तुम किसी एक विचार मे हिस्सा नही बँटाते। उफ अलेक्सी! मेरे प्यारे भाई! हम-तुम रूसी हैं—ईश्वर से डरकर रहनेवाले विशाल-हृदय मानव! इन सडे हुए जमन और यहूदी विचारा का हमारे लिए क्या अथ है? हम तुम किसी विचार के गुलाम नही। हम एक प्रतिष्ठित व्यापारी परिवार के सदस्य हैं।'

"प्रतिष्ठित परिवार?" लेपतव ने अपने गुस्से को दबाते हुए पूछा, "क्या कहना है प्रतिष्ठित परिवार का! हमारे पितामह को जमीदारो ने अपनी जमीन मे से निकाल फेंका था और हर सडा हुआ मामूली अधिकारी उनके मुह पर थूक देता था। पितामह ने उसी तरह पिता को निकाल बाहर किया और पिता न हमको और तुमको। हम लोगो को इस प्रतिष्ठित परिवार ने क्या दिया है? किस तरह की शान्ति, कसा खून हमे विरासत मे मिला है? हम तीन वष तक एक नीचे दरजे के पादरी की तरह मिथ्या प्रलाप करत घूमते रह, और अब तुमने यह लेख लिखा है। यह गुलामो की तरह की मिथ्या बक्वास? और देखो, मेरे साथ क्या हुआ? मेरे अन्दर कोई मुलायमियत, कोई शक्ति, कोई चरित्र और कोई साहस नही है। मैं कोई कदम उठात हुए डरता हूँ कि कोई मुझे पीट न दे। मैं ऐसे मामूली तुच्छ और बुद्धिहीन लागो के आगे भी काँप जाता हूँ, जो मानसिक और नतिक दोना दृष्टियो से मेरे सामने कुछ नही हैं। मैं सडक पर झाड़ू लगानवालो, कुलियो, पुलिस के सिपाहियो—सबसे डरता हूँ, क्योकि मेरा जम एक भयाक्रा त स्त्री की कोख से हुआ है। जम से ही हमार साथ दुव्यवहार हुआ और हमारे ऊपर आखें तरेरी गयी। अच्छा होगा कि हमारे तुम्हारे कोई बच्चा न हो। मैं यह प्रतिष्ठित व्यापारी-परिवार ईश्वर को सौंपता हूँ, जो हमारे साथ ही समाप्त हाता है!"

यूलिया सरजीविना कमरे मे आयी और मेज़ के पास बठ गयी।

"आप किसी बात पर बहस कर रहे थे ?" उसने पूछा, 'मैं आशा करती हूँ कि मेरे कारण कोई बाधा नहीं होगी।

'बिल्कुल नहीं मेरी नन्ही बहन" प्यादोर ने उत्तर दिया, 'हम लोग कुछ सैद्धान्तिक बहस कर रहे थे। अब तुम परिवार की निन्दा करो।' उसने अपने भाई की ओर घूमकर अपना कथन जारी रखा, "लेकिन उसके बाद भी इस परिवार ने लाखा का रोजगार स्थापित कर लिया है। उसकी अवश्य ही कोई कीमत है।'

'क्या उपलब्धि है, लाखा का रोजगार! बिना किसी प्रतिभा के कोई आदमी दूकानदार बनने का मौका पाता है और धनी हो जाता है। फिर अपने माल को बिना किसी क्रम या उद्देश्य के राज़ बचता जाता है। बिना धन इकट्ठा करने के प्रयत्न के वह मशीन की तरह बेचता चला जाता है और धन बिना किसी प्रयत्न के बरसता चला जाता है। इस तरह वह जीवन भर व्यापार करता है और और व्यापार को सिर्फ इसलिए प्यार करता है कि उसे अपने नौकरों पर रोब जमाने और ग्राहकों को धोखा देने का मौका मिलता रहता है। वह धर्मश्रेष्ठ इसलिए बन जाता है कि वह समवेत गान गानेवालों पर प्रभाव जमा सकता है और उन्हें अपनी आशा का पालन करने के लिए कह सकता है। स्कूल का अभिभावक वह इसलिए बन जाता है कि उसे यह महसूस करना पसन्द है कि शिक्षक उसके नीचे काम करता है। व्यापारी व्यापार को प्यार नहीं करता, बल्कि उस शक्ति को प्यार करता है जो व्यापार उसे दूसरों से ज्यादा देता है और तुम्हारा मालगोदाम तो व्यापारघर न होकर एक बन्दीघर है। तुम्हें अपने तरह के व्यापार के लिए गूंगे भयग्रस्त क्लर्कों के अलावा और क्या चाहिए! और इसी की शिक्षा तुम लोग उन्हें रोटी के छिलके के लिए बचपन से लाचार करके देते हो। बचपन से उन्हें सिखाते हो कि वे तुम्हें भलाई चाहनेवाला समझें। क्या तुम एक ग्रेजुएट को अपने मालगोदाम में नौकरी नहीं दे सकते ?"

'ग्रेजुएट हमारे रोजगार के लिए उपयुक्त नहीं है।"

'यह सच नहीं है, लपतेव ने ज़ोर से कहा "यह सरासर झूठ है।'

'मुझे क्षमा करो लेकिन मुझे लगता है तुम अपने ही यासल के

साथ धोखा कर रहे हो," फ्योदोर ने कहा और वह उठ खड़ा हुआ "तुम हमारे व्यापार को पसन्द नहीं करते, लेकिन उसके लाभों पर जीवन-निर्वाह करते हो !"

हाँ तुमने एकदम ठीक कहा," लेपतेव ने कहा और एक सूखी हँसी हँसा। उसकी आँखें जलने लगीं, "हाँ, अगर मैं तुम्हारे प्रतिष्ठित परिवार का सदस्य न होता, अगर मेरे पास पैसे भर भी इच्छा शक्ति और साहस होते, तो मैं ऐसी आमदनी को दूर फेंक देता और अपनी रोजी कमाता। लेकिन तुमने उस मालगोदाम में बैठकर वह सबकुछ मुझसे छीन लिया है। मैं तुम्हारा भाई ही तो हूँ।"

फ्योदोर ने अपनी घड़ी देखी और जल्दी ही चले जाने की आज्ञा माँगी। उसने यूलिया का हाथ चूमा और बाहर चला गया लेकिन हाल में जाने की बजाय वह पहले बैठक और फिर खाने के कमरे में पहुंच गया।

उसने लाचार होकर कहा, "मैं तो रास्ता ही भूल गया ! कितना विचित्र घर है, है न ?"

अपना कोट पहनते हुए वह हतप्रभ-सा लग रहा था और उसके चेहरे पर नाराजी का भाव दिखायी पड़ता था। लेपनेव का गुस्सा उड़ गया था। वह फ्योदोर के लिए दुखी था और डर गया था, लेकिन साथ ही उसके मन में इस बात की गहरी इच्छा भी पैदा हो गयी कि पिछले तीन वर्षों में दोनों भाइयों के बीच का जो स्नेह-भाव मर गया है, उसे वह किसी प्रकार फिर व्यक्त करेगा।

'फ्योदोर, तुम कल हमारे साथ खाने पर आओ, जरूर !' उसने अपने भाई के कन्धे थपथपाते हुए कहा तुम आओगे न ?

"हां, हाँ, लेकिन कृपा करके इस समय मुझे थोड़ा पानी दो !"

लेपतेव दौड़ा हुआ खाने के कमरे में गया। उसे सबसे पहला बरतन बियर का बड़ा गिलास ही मिला। उसी को पानी से भरकर वह अपने भाई के पास ले आया। फ्योदोर गटगट पानी पी गया लेकिन एकाएक गिलास के किनारे को उसने दांतों से काट लिया। दांत पीसने की भी आवाज आयी, फिर सुबकियां सुनायी पड़ीं और पानी उसके ओवरकोट पर गिरकर नीचे बह गया। लेपतेव, जिसने इसके पहले किसी आदमी

को रोत नही देखा था, डर के मारे परेशान खडा रह गया। यूलिया और नौकरानी ने मिलकर फ्योदोर का कोट उतारा, उसे बैठक मे ले गयी और वह अपराधी की तरह चला गया।

यूलिया ने फ्योदोर को गद्दे पर लिटा दिया और उसके घुटने के पास बगल में बैठ गयी।

"कुछ नही,' उसन धीरे से कहा, "यह एक दौरा है "

'मैं इतना दुखी हूँ," फ्योदोर न कहा, 'मैं इतना दुखी हूँ लेकिन मैं हमेशा इसे छिपाता रहा।'

उसने अपना हाथ यूलिया के गल मे डालकर उसके कान मे फुसफुसात हुए कहा, "मैं अपनी बहन नीना को रोज रात मे सपने मे दखता हूँ, वह आकर रोज मेरी बगल मे आरामकुरसी पर बठ जाती है।'

एक घण्ट के बाद उसन बडे कमरे के रास्त मे फिर अपना कोट पहना। अब वह मुस्करा रहा था। उस नौकरानी को देखकर शरम भी आ रही थी। लेपतव उसे घर तक पहुचान गया।

"तुम कल खान पर जरूर आना!" लेपतव ने फ्योदोर के घर के रास्ते पर उससे कहा, 'इस बार ईस्टर पर हम साथ ही विदेश चलेंगे। तुम्ह थोडी हवाबदली की जरूरत है। तुम्हारा स्वास्थ्य बहुत गिर गया है।

"हा मैं जरूर चलूगा, जरूर '

घर आने पर लेपतव ने अपनी बीवी यूलिया का एक घबराहट की हालत मे पाया। फ्योदोर के दौरे न उस बुरी तरह त्रस्त कर दिया था। वह रो नही रही थी लेकिन बेहद फीकी पड गयी थी और बिस्तर मे कम्बल को तकिये को और अपन पति की ठण्डी उँगलिया को भीचकर तडफ रही थी।

'मुझे मत छोडो मत छोडो!" वह याचना कर रही थी।

"बताओ, अलेक्सी, कि मैंन प्रार्थना करना क्यो छोड दिया ? मेरे विश्वास को क्या हो गया ? उफ, तुमने धम के बारे मे इतनी बातें मेरे सामन क्या की ? तुमने मुझे अव्यवस्थित कर दिया तुमने और तुम्हारे दास्ता ने। मैं अब प्राथना भी नही करती।"

उसने उसके सिर पर ठण्डी पट्टी रखी। उसके हाथों को सहलाया, उसे पीने के लिए चाय दी और वह डर के मारे उससे चिपकी रही।

सुबह के लगभग एकदम थककर वह सो सकी और लेपतेव उसकी बगल में बैठा रहा। उस रात वह लेटा तक नहीं। दूसरे दिन वह मानसिक और शारीरिक रूप से बेहद थका रहा और घर में इधर उधर बिना किसी उद्देश्य के टहलता रहा, उसके विचार जड़ बने रहे।

पन्द्रह

डाक्टरों ने बताया कि फ्योदोर ने दिमागी सन्तुलन खो दिया है। लेपतेव को पता नहीं कि पितनित्स्किया में क्या हो रहा है और धुंध से भरा हुआ *मालगोदाम* बूढ़े और फ्योदोर के *बिना उसके* लिए कब्रगाह की तरह हो गया था। जब जब उसकी बीवी ने कहा कि उसे मालगोदाम और पितनित्स्किया के घर रोज़ जाना चाहिए तो या तो उसने इस बात का उत्तर नहीं दिया, या नाराज़ होकर अपने बचपन की बात शुरू कर दी कि वह बीते हुए दिनों के लिए अपने पिता को कभी क्षमा नहीं कर सकता और पितनित्स्किया और मालगोदाम उसके लिए घृणास्पद हैं।

एक रविवार की सुबह यूलिया खुद पितनित्स्किया गयी। बूढ़ा फ्योदोर स्तपानिच बैठक में था। उसने अपना वही पुराना जाकिट पहन रखा था, जिस पर टाई नहीं बँधी थी। वह अपनी आरामकुरसी में एकदम स्थिर बैठा अपनी दृष्टिहीन आँखों को झपका रहा था।

"मैं हूँ, आपकी पुत्र-बधु !" उसने उसके पास जाकर कहा, "मैं आपसे मिलने आयी हूँ।"

वह जोर-जोर से साँस लेने लगा। प्यार से विगलित होकर यूलिया ने उसके हाथ को चूम लिया और बूढ़े न यूलिया के चेहरे और सिर को हाथो से छुआ जैसे यह निश्चय करने के लिए कि यह वही है, और उसके ऊपर क्रास का सकेत बनाया।

"धन्यवाद ! धन्यवाद !" उसने कहा, तुम तो जानती हो कि मेरी आँखो की रोशनी जाती रही मैं अब देख भी नही सकता। खिडकी और आग को धुधला धुधला मैं देख सकता हूँ, लेकिन आदमी या किसी अन्य चीज को मैं नही देख सकता। मैं अन्धा हो रहा हूँ। फ्योदोर बीमार है और दूसरा कोई कारबार की देखभाल करनेवाला नही है। अगर कोई गलती होती है, तो अपराधी को दण्ड कौन देगा ? सारे कर्मचारी अपने मन के हो जायेंगे। फ्योदोर को क्या हुआ है ? क्या उसे सरदी लग गयी है ? मैं अपने जीवन मे कभी भी बीमार नही पडा, न दवा ही खायी। मेरा कभी किसी डाक्टर से वास्ता नही पडा'

हमेशा की तरह बूढा डीग मारने लगा। इसी बीच नौकरो ने जल्दी से मेज सजायी—खाने और पीने की चीजें अलग अलग लगायी गयी।

"मेरे साथ तुम भी कुछ खाओ न !" बूढे ने कहा।

यूलिया ने उसकी बाँह पकडकर उसे मेज तक पहुचाया और उसके लिए वोदका उँडेली।

"मैं कल फिर आऊँगी,' उसने कहा, आपकी नातिनो—साशा और लीदा को भी लाऊँगी। वे अपने नाना को देखना चाहेंगी।"

"नही ! उन्हे मत लाना ! वे नाजायज सन्तानें है !"

"आप ऐसा क्यो कहते हैं ? उनके मा-बाप विवाहित थे।"

"ठीक है लेकिन मेरी आज्ञा के बिना। मैंने उन्हे आशीर्वाद नही दिया था। मैं उनसे कोई मतलब नही रखना चाहता। ईश्वर उनका साथ दे।"

"यह कहना ठीक नही फ्योदोर स्तेपानिच !" यूलिया ने आह भर-कर कहा।

"बाइबिल का कथन है कि बच्चा को अपने माँ नापा से डरना और उनका आदर करना चाहिए।"

"नहीं, एसा नहीं है। बाइबिल का कहना है कि हम अपने दुश्मनो को भी माफ कर देना चाहिए।

"हमारे जसे व्यापार मे क्षमादान की कोई गुजाइश नही है। अगर तुम सबको क्षमा करन लगोगी, तो तीन वप म दिवाला पिट जायेगा।'

"लेकिन जिसन आपका नुक्सान किया है, उसे क्षमा के लिए कृपा-पूण अच्छी बात कहना व्यापार या धन स ज्यादा महत्वपूण है।

यूलिया बूढे के हृदय को कुछ मुलायम बनाना चाहती थी, उसके हृदय मे दया और पश्चात्ताप जगाना चाहती थी, लेकिन वह उसकी बात को उसी तरह सुन रहा था जैस बडे लाग बच्चो की तोतली बोली सुनते है।

"फ्योदोर स्तेपानिच, उसन दढता से कहा 'आप वद्ध हो चुके हैं और शीघ्र ही ईश्वर आपका अपन पास बुला लेगा। वह आपसे यह नही पूछेगा कि आपन अपना राजगार कैस चलाया या आपकी सस्था की उन्नति हुई या नही। वह तो जानना चाहेगा कि आप अपने साथियो के प्रति कृपालु रहे या नही? आप उन लोगा के प्रति सख्त तो नही रह, जा आपसे कमजार थ उदाहरण के लिए आपके नौकर और बिक्रीवाले क्लक?"

'मैं हमेशा अपन कमचारियो की भलाई चाहनेवाला रहा हूँ और उन्ह हृदय स आभारी होना चाहिए कि उन्ह मरे-जसा मालिक मिला।" बूढे न विश्वास के साथ कहा। लेकिन यूलिया के सच्चे स्वर ने उसे प्रभावित कर लिया था और उस प्रसन्न करने के लिए उसने इतना जोडा, 'ठीक है, तुम छोटी बच्चियो को कल साथ लाना! मैं उन्ह कुछ तोहफे दन के लिए कह दगा।'

बूढा भद्दे ढग म कपडे पहने हुए था और सिगार की राख उसके सीने और घुटन पर पडी हुई थी। साफ था कि कोई उसके जूत साफ करने या कपडो पर ब्रुश करने की चिन्ता नही करता था। मटर म चावल ठीक से पका नहीं था। मेजपाश सूप की तरह महक रहा था

ग्रौर नौकर इधर-उधर घूम रहे थे। बूढे ग्रौर पितनिस्किया के घर को देखन से उपक्षा का ग्राभास होता था ग्रौर यूलिया को यह सब ग्रपने पति के लिए शर्मिन्दगी की बात लग रही थी।

"मैं कल जरूर ग्राऊँगी।" उसने कहा।

वह कमरो मे होती हुई ग्राज्ञा देती गयी कि बूढे का बिस्तर ठीक कर दिया जाये ग्रौर मूर्तिवाली बत्ती जला दी जाय। फ्योदोर ग्रपने कमरे मे बैठा, खाली दृष्टि से एक किताब को घूर रहा था। यूलिया ने उससे बात की ग्रौर नौकरो का ग्रादेश दिया कि उसके कमरे को साफ कर दें। फिर वह क्लर्कों के निवास स्थान मे गयी। यह एक नीची छत-वाला कमरा था, जिसके बीच मे छत को सँभालने के लिए एक लकडी का बिना रँगा पाया लगा हुग्रा था। इतवार होने के कारण सारे क्लर्क ग्रपने बिस्तरा पर बठे दोपहर के खान का इ तजार कर रहे थे। यूलिया के ग्र दर घुसते ही वे सब उछलकर खडे हो गये ग्रौर दबे दब से बँदिया की तरह उसके प्रश्नो का उत्तर देने लगे।

"हे ईश्वर, कितनी रद्दी जगह है यह!" उसने ग्रपना हाथ ऊपर करते हुए कहा, "तुम लोगो को यहा भीड भाड नही लगती?"

"हमारे पास शिकायतें नही है, बीवीजी" मेकेविच न कहा, "हम लोग ग्रापके बहुत शुक्रगुजार हैं ग्रौर ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह ग्रापको सुख समृद्धि प्रदान करें!"

"दीघजीवन प्रदान करे ग्रौर व्यक्तिगत इच्छाग्रो की पूर्ति करे!" पोचातकिन ने सार निकाला।

"हम साधारण लोग है ग्रौर ग्रपने स्तर के ग्रनुकूल रहते है।" मेकी-चेव ने बात को स्पष्ट करने के लिए जल्दी से कहा।

यूलिया ने सामान, कमरे ग्रौर रसोई को देखा। मकान की देख रेख करनवाला से बातें की ग्रौर चली गयी।

"जितनी जल्दी हो सके, हमे पितनिस्किया चलकर रहना चाहिए," यूलिया ने घर लौटकर ग्रपने पति से कहा, "ग्रौर तुम्ह रोज मालगोदाम

जरूर जाना चाहिए।'

वे पढने के कमरे म बडी दर तक अगल-बगल बैठे रह। लेपतव का मन भारी था। वह न तो पितनित्स्किया जाना चाहता था, न मालगोदाम लेकिन उसने अदाज लगा लिया कि उसकी बीवी के मन म क्या है और उसम इतनी शक्ति नहीं थी कि वह उसका विरोध करे।

"मुझे लगता है, हमारी जिदगी समाप्त हो चुकी है। एक रद्दी तरह का अध अस्तित्व शुरू हो रहा है," उसन यूलिया के गालो को थपथपात हुए कहा "जब मैंन सुना कि फ्योदोर बुरी तरह बीमार है, तो मैं रोन लगा। हमने अपना बचपन और जवानी साथ साथ बितायी। कभी मैं उसे दिल स प्यार करता था और अब यह भयकर अन्त! मैं सोचता हूँ, मैं अपन अतीत स किसी अच्छाई के लिए ही अलग रहा हूँ और अब जब तुम कहती हो कि हम पितनित्स्किया के उस जेलखान म चलकर रहना चाहिए, तो मुझे लगता है, जैस मेरा भविष्य भी समाप्त हो गया है।

वह उठा और खिडकी के पास चला गया।

ठीक है, व्यक्ति को खुशी के सारे विचारो को हमेशा के लिए त्याग देना चाहिए," उसने सडक की तरफ घूरते हुए कहा, "सुख नाम की कोई चीज नहीं है। मैंन तो कभी जाना ही नहा और मुझे सन्देह है कि उसका अस्तित्व भी कहीं है। मैं सिर्फ एक बार ही जीवन म प्रसन्न था उस रात जब तुम्हारे छाते के नीचे बैठा था। तुम्हे याद है वह छाता जो तुम मेरी बहन नीना के यहाँ भूल आयी थी?' उसन अपनी पत्नी की तरफ घूमकर पूछा, 'तब मैं तुम्हार प्यार मे डूबा था। मुझे याद है कि मैं सारी रात उस छाते के नीचे स्वर्गीय सुख प्राप्त करता बैठा रह गया था।'

पढने के कमरे म किताबदान की बगल म एक दराज थी। उसम लेपनेव न बेकार छँटे हुए सामान रख छोडे थे। उसी मे वह छाता भी पडा हुआ था। उसने वह निकाला और अपनी पत्नी को दे दिया।

"यह है वह!" उसन कहा।

यूलिया न छात को एक मिनट तक देखा, पहचाना और उदासी के

साथ मुस्करायी।

"हां, मुझे याद आया," उसने कहा, "तुमने शादी का प्रस्ताव करते समय इसे हाथ में ले रखा था!"—वह कमरे से बाहर जाने ही वाला था कि यूलिया ने कहा, "थोड़ा जल्दी ही लौट आना, मुझे तुम्हारे बिना अकेलापन महसूस होता है।"

वह कमरे में चली गयी और बड़ी देर तक छात को ध्यान से देखती रही।

सोलह

यद्यपि उनका व्यवसाय बड़ा और उलझा हुआ था, फिर भी लेपतेव परिवार ने कोई मुनीम नहीं रखा था और क्लर्कों का किया हिसाब जरा भी समझ में आनेवाला नहीं था। जर्मनी और इग्लैण्ड के व्यापारी एजेंट रोज़ ही क्लर्कों से राजनीति और धर्म पर बहस करने माल-गोदाम आते थे। दूसरा नित्य आनेवाला आगन्तुक एक शराबी था—बीमार और दयनीय प्राणी! वह सन्ध्या के विदेशी पत्रों का अनुवाद किया करता था। क्लर्क उसे मूर्ख कहते थे और उसकी चाय में नमक डाल दिया करते थे। लेपतेव को सारी व्यवस्था बेवकूफी से भरी लगती थी।

अब वह नित्य मालगोदाम जाता था और हर चीज़ को बदलने की पूरी कोशिश कर रहा था। उसने नये नौकरों को पीटने और खरीदारों का धप्पयपान की मनाही कर दी थी। अगर वह किसी क्लर्क को पुरानी

श्रौर न बिकनवाली वस्तुश्रो को किसी प्रान्तीय खरीदार को यह कहकर बेचते देखता कि यह बाज़ार मे एकदम नयी चीज़ है, तो गुस्से म भर जाता। लेकिन इस समय मालगोदाम का पूरा मालिक होने पर भी वह अपने धन का ठीक विस्तार, या यह कि उसका व्यवसाय बढ रहा है या बडे बाबू लोग कितना कमा लेते हैं, नही जान पाया था। पोचातकिन श्रौर मेकीचेव उसे कमउम्र श्रौर अनुभवहीन समझकर सस्था के रहस्य बताना उचित नही समझते थे श्रौर हर शाम को देर-देर तक फुसाफुसाकर बूढे के साथ देर-देर तक बात किया करते थे।

जून के शुरू ही मे एक दिन लेपतव श्रौर पोचातकिन बुवनोव मे खाना खाने श्रौर व्यापार के बारे म बात करने के लिए गये। पोचातकिन आठ बरस की उम्र से लेपतेव परिवार के साथ था। निर्विवाद रूप से वह परिवार का एक सदस्य माना जाता था श्रौर मालगोदाम से उठने पर वह दिन-भर की रसीदें रुपये रखने की दराज से लेकर अपनी जेबो मे भर लेता था। वह मालगोदाम श्रौर घर का ही मालिक नही था, बल्कि चच मे भी बूढे की जगह घर के सबसे बडे का स्थान ग्रहण करता था।

मदिरालय मे घुसते ही उसन वेटर को श्रावाज दी, "हमारे लिए आधा खजाना श्रौर चौबीस खुराफातें लाश्रो!"

थोडी देर बाद वेटर उनके लिए आधी बोतल वोदका श्रौर बहुत सी प्लेटो मे चुने हुए ठण्डे खाद्य पदाथ लाया।

'हाँ, तो मेरे मालिक!' पोचातकिन ने कहा, 'अब थोडा निन्दापूर्ण विवरण श्रौर झूठा प्रचार आलू के भरते के साथ लिया जाये!"

वेटर परेशान दिखायी पडा श्रौर कुछ कहने ही वाला था कि पाचातकिन ने उसकी श्रोर देखा श्रौर कहा "इसके अलावा?"

वेटर क्षण भर मुश्किल से सोचता रहा, फिर अपने साथियो के साथ मालिक के पास गया श्रौर अन्तत इस पहेली का हल करके सिकी हुई जीभ का एक हिस्सा लाया।

सुनिए!' लेपतेव न तब कहा, 'क्या यह सही है कि पिछले वर्षों से

हमारा व्यापार गिर रहा है ?"

"किसी तरह भी नही ।"

"कृपया मुझे ईमानदारी के साथ साफ साफ बताइए कि कितना रुपया हमारे पास आता है और इस समय कितनी पूजी हमारे पास है ? हम लोग अँधेरे म टटोलते हुए नही बढ सकते । मैंने थोडे ही दिन हुए मालगोदाम का हिसाब देखा है लकिन मुझे अफसोस है कि मैं उस पर विश्वास नही कर सकता । किन्ही कारणो से आप मुझे अँधेरे मे रखना जरूरी समझते है और सच्ची बात सिफ पिताजी को बताते हैं । आपकी बचपन से ही यह नीति रही है और आप बिना इसके साथ चल भी नही सकते थ, लेकिन अब इसे छोड देने का समय आ गया है । कृपया मेरे साथ स्पष्ट रहिए । हमारे हिसाब किताब की क्या हालत है ?"

"यह सब साख पर आश्रित है ।" पोचातकिन एक क्षण विचार करके बोला ।

"साख पर आश्रित होने से आपका क्या मतलब है ?"

पोचातकिन ने ब्योरा देना शुरू किया, लकिन लेपतेव उसका कोई मतलब नही निकाल सका । उसने मेकीचेव को बुलवा भेजा । वह तुरन्त आ गया । कुछ खा-पीकर गरजती हुई आवाज मे बोला कि क्लर्कों को रात दिन ईश्वर से प्राथना करनी चाहिए कि उन्ह ऐसा सरक्षक मिला है ।

"यह ठीक है, लकिन मुझे माफ कीजिए क्योकि मैं अपने को आपका सरक्षक नही मानता,' लेपतेव न कहा ।

'हर आदमी को यह याद रखना चाहिए कि वह क्या है और उसकी जगह क्या है । ईश्वर की कृपा स आप हमारे पिता और सरक्षक है और हम आपके गुलाम ।"

"मेरी बात सुनिए ! मैं इन सब बातो से थककर परेशान हो चुका हूँ," लपतव ने गुस्से म जोर स कहा, 'शायद आप ही मेरे सरक्षक होंगे। अब हमारे व्यापार की हालत की पूरी सूचना मुझे दीजिए । अगर आपने मुझे बच्चा समझकर बात करना नही छोडा, तो मैं कल माल-गोदाम बन्द कर दूगा । मेरे पिता अन्धे हैं मेरा भाई पागलखाने म है और मेरी भाजियाँ नाबालिग हैं । मैं दिल से व्यापार को नापसन्द करता

हू । मैं खुशी से इसे छोड दूँगा, लेकिन जसा तुम लाग जानत हो, मेरी जगह लेनवाला दूसरा कोई नहीं है, इसलिए मेहरबानी करके यह नीति छोड दीजिए ।"

वे लोग मालगोदाम जाकर हिसाब बनाने लग। शाम को उन्होंने घर पर भी हिसाब जोडना जारी रखा और बूढे न भी मदद की। अपन लडके को जिस स्वर से वह व्यापार के प्रारम्भ के रहस्य समझा रहा था उसम कोई यही सोच सकता था कि यह व्यवसाय नही, काला जादू था, जिसम वह अब तक लगा रहा। अन्तत यह निकला कि सालाना आमदनी अधिक मे अधिक एक बटे दस के करीब बढी है और लेपतव की हैसियत सिफ कैश और बधको को मिलाकर करीब साठ लाख रूबल की है।

आधी रात के बाद ही लेपतेव बाहर की हवा मे साँस लेने जा सका। वह अब भी उन्ही अको के प्रभाव मे था। गीली, सूनी, चादनी रात थी। यह मास्का के घरो की सफेद दीवारें, भारी छडोवाल दरवाजे, खामोशी और काली परछाइयाँ किसी किले का आभास दे रही थी। सिफ सन्तरी गायब था। लेपतेव छोटी फुलवाडी मे चला गया और झाडी की बगल मे बेंच पर बैठ गया जो उसके घर को पडोसी से अलग करती थी। सामन फूलो का पेड जोरो से फूल रहा था। लेपतेव का अपन बचपन से इस पेड की याद है। यह ठीक वसा ही है जैसा तब था। थोडा सा छिननार हो गया है, लेकिन एक इच भी नही बढा है। बाग का हर काना और मैदान बीत हुए दिनो की काली यादें वापस लाता रहा। उसे याद आया कि आज की तरह वह स्यास के पेडो के बीच से ही चादनी को दख सकता था। उस समय भी छायाएँ काली और रहस्यमय हुआ करती थी, और एक काला कुत्ता मैदान के बीच मे रेंग आता था और क्लर्कों के घरो की खिडकियाँ मुह बाकर जम्हाइया लेती थी। *इनम से कोई भी सुखकर याद नही थी।*

दूसरे दरवाजे पर उसन कपडो की हल्की आहट सुनी।

मेरी प्यारी, मेरी जान! एक पुरुष की आवाज झाडी के ठीक दूसरी ओर उसके इतनी पास आ गयी कि उनकी साँस भी उस सुनायी पडन लगी फिर उन्होंने एक-दूसरे को चूम लिया।

मतलब था यह निश्चय हो गया था कि धन और व्यापार का इतना घृणा करना उसके जीवन का ही एक अंग, उसे पूरा गुलाम बना दे सकता है। धीरे धीरे वह इस स्थिति का आदी होता गया था और धीरे धीरे एक स्वाभाविक व्यवस्था के रूप में इसे स्वीकार करता जा रहा था। वह और सब स्वीकार हार के साथ ही उसने अपने पिता का व्यापार आदमी की तरह से और सम्मानहीन ढंग से अपनी धन-दौलत के लिए भार-स्वरूप धारण करते हुए देखा है लेकिन यह मन था जिसने उसे स्वभाव का ठीक था और इस बात और सम्पत्ति से दूर भाग जाने से रोका जो बचपन से किसी पत्थर की तरह उसके मन में दबा हुआ है।

गाड़ी के पहिये की गड़गड़ाहट और खुशबू के कारण उसमें इतनी गरमी आ गयी। वह आँगन के बीच में खड़ा हो गया। अपने अहाते के पास की पत्तियों और पानी की टपटप सुनने लगा। इसी क्षण यह दरवाज़े को खोलकर बाहर कहीं घूमने के लिए भागा जा सकता है। सुबह होने में इस विचार के कारण उसका हृदय तेज़ी से धड़कने लगा। जीवन की स्वतन्त्रता सम्पन्नता और आनन्द माधुर्य की कल्पना उसके मन में जोर से हिलने लगा।

लेकिन वह जहाँ खड़ा था, वहीं से हटा नहीं। "मुझे यहाँ कौन-सी चीज़ रोके हुए है?" उसने अपने ही से पूछा और उसे अपने से घृणा हुई, और उस काले कुत्ते से भी जो मैदान और जंगल में इधर उधर दौड़कर मुक्त और प्रसन्न होने की बजाय पत्थर के पहिये पर लेटा हुआ था। स्पष्टतः वह और कुत्ता दोनों एक ही कारण से असमर्थ थे—बचपन और गुलामी इनकी आदत बन चुकी थी।

दूसरे दिन दोपहर को वह यार्तसेव को साथ के लिए लेकर बाहर बुलाया गया, जहाँ वे गरमियाँ बिता रहे थे। वह पाँच दिन से अपनी बीवी से नहीं मिला था। स्टेशन पर उसने गाड़ी ली और यार्तसेव रास्ते भर सुन्दर मौसम की बड़ाई करता रहा। घर एक बड़े बाग़ में बना हुआ था। दरवाज़े के पास ही, जहाँ से मुख्य रास्ता गया था, उन्हें पुरानी फैली हुई लता के नीचे यूलिया सर्गेयेव्ना मिली। उसने एक पीला चिकना चोगा पहन रखा था, बाल नये थे और अपना सुपरिचित

छाता लगाये हुए थी। यार्त्सेव ने अभिवादन का आदान-प्रदान किया और घर की ओर चला गया, जहाँ साशा और लीदा की आवाज सुनायी पड़ रही थी और लपतेव अपनी बीवी से बात करने बैठ गया।

"तुम अब तक वहीं क्यों रह गये थे?" उसने उसका हाथ पकड़े हुए पूछा "मैं रोज यहाँ बैठी तुम्हारा इन्तजार करती रही हूँ। तुम्हारे बगैर मैं कितनी अकेली हूँ!'

वह उठी और उनके कन्धे पर हाथ रखते हुए कहने लगी, 'जानते हो, मैं तुम्हें प्यार करने लगी हूँ!' और वह शर्म के मारे लाल पड़ गयी तुम मुझे बहुत प्यारे हो! अब तुम आ गये हो, मैं तुम्हें देख रही हूँ और बहुत खुश हूँ! आओ, कुछ बात करें! मुझे कुछ बताओ।'

जब उसने यूलिया को अपने प्रति प्यार की घोषणा करते सुना, तो उसे लगा जैसे उनका विवाह आज से दस वर्ष पहले हो चुका है और उसे भूख लग आयी। यूलिया ने उसकी गरदन में हाथ डाल दिया और उसके कपड़ों की चिकनाहट उसके गालों को छूने लगी। उसने धीरे-से अपने को अलग कर लिया, उठा और घर की ओर चल पड़ा। नन्ही बच्चियाँ उससे मिलने के लिए दौड़ पड़ीं।

'ये कितनी बढ़ गयी!" उसने सोचा, "और कितने सारे बड़े-बड़े परिवर्तन इन तीन वर्षों में हो गये। इस सबको सोचने के लिए किसी की तरह क्या तीस वर्ष जीना पड़ेगा। और कौन कह सकता है कि तब तक और क्या हो जायगा! ठीक है, हम सिर्फ इन्तजार करें और देखें!

उसने साशा और लीदा को सीने से लगा लिया, जो उसके कन्धे से लटक रही थीं।

"नाना ने तुम्हें प्यार कहा है," उसने कहा, 'फ्योदोर मामा मरने के करीब हैं। कोस्त्या चाचा का अमरीका से पत्र आया है। उसने तुम लोगों के लिए शुभकामनाएँ भेजी हैं। उसने लिखा है कि वह प्रदर्शनियों से थक गये हैं और जल्दी ही घर आनेवाले हैं। और अब अलेक्सी मामा को भूख लगी है।"

इसके बाद वह छत पर बैठा अपनी बीवी को धीरे धीरे घर की ओर आते हुए रास्ते पर देखता रहा। वह विचारों में डूबी दिखायी पड़ती

थी। उसका चेहरा उदासी मे सुहावना लग रहा था और उसकी आँखो म आँसू छलछलाये हुए थे। अब वह छरहरी, कोमल, ढील चहरेवाली लडकी न रहकर विकसित, स्वस्थ सुन्दर औरत बन गयी थी और लपतेव ने अपनी बीवी स मिलन के समय उसकी नयी सुन्दरता की प्रतिछाया को यात्सेंव के उल्लसित और लालसापूर्ण चेहरे पर स्पष्ट देखा था जसे यात्सेंव ने उसे जीवन म पहली बार देखा हो। जब छज्जे पर वे खाना खा रहे थे, तो एक प्रसन्नतापूर्ण किन्तु सलज्ज मुस्कान यात्सेंव के होठो पर उस समय खेल रही थी, जब खाना खाते समय वह एकटक यूलिया को और उसके गले की सुदर रेखाओ को निहार रहा था। लेपतेव यह सोचते हुए उस पर ध्यान रखने से अपने को रोक नही सका कि अब भी वे तेरह या तीस वर्ष आगे पड़े हुए हैं। इतने समय म जाने क्या-क्या हो सकता है। कौन जानता है कि भविष्य के गर्भ मे क्या है?

'हम इन्तजार करेंगे और देखेंगे।' उसने सोचा।

●●●